कार्यालय, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
समग्र शिक्षा, ब्लॉक–भीण्डर (उदयपुर)

संकल्प – 2021
(एक अभिनव पहल)

प्रश्न बैंक

हिन्दी साहित्य

कक्षा – 12

बोर्ड परीक्षा परिणाम में गुणात्मक एवं संख्यात्मक उन्नयन हेतु अभिनव कार्ययोजना के तहत् निर्मित

संरक्षक

श्री शिवजी गौड़
सयुंक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा, उदयपुर

श्री मयंक मनीष,
उपखण्ड अधिकारी
वल्लभनगर

मार्गदर्शक

श्री महेन्द्र कुमार जैन

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, ब्लॉक—भीण्डर, उदयपुर

श्री भेरुलाल सालवी
अति. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी

श्री रमेश खटीक
अति. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी

श्री गिरीश कुमार चौबीसा
संदर्भ व्यक्ति

श्री महेन्द्र कोठारी
संदर्भ व्यक्ति

संयोजक

श्री दिलराज सिंह राजावत
व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
मेनार जिलाः— उदयपुर

श्री अनील राघावत
व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
पुरियाखेडी जिलाः— उदयपुर

CBEO BHINDER

प्रश्न बैंक निर्माण सदस्य

क्र.सं	विद्यालय का नाम	नाम कार्मिक	मो0न0	TOPIC
1	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MENAR (223199)	DILRAJ SINGH	9610381501	संयोजक
2	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL PURIYA KHEDI (223209)	ANIL RAGHAWAT	9829622747	संयोजक
3	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL ADINDA (223191)	ARUNA JAIN	9413318647	तुलसीदास
4	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL AKOLA (223148)	GOVIND SINGH RANAWAT	6376248192	रहीम
5	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL AMARPURA JAGIR (223165)	SUMITRA SHARMA	9414683318	अलोपी
6	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL AMARPURA KHALSA (223163)	SALIGRAM SINSINWAR	9783550654	पेशोला की प्रतिध्वनि
7	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BADGAON BHINDER (223170)	DINESH CHANDRA CHOUBISA	9784656771	निर्वा सत
8	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BAGGAD (223189)	GOVERDHAN LAL CHOUBISA	9001912924	कुरुक्षेत्र
9	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BARODIA (223157)	YOGENDRA SINGH BHATI	9829390978	अलंकार
10	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BATHARDA KALAN (223193)	VEENA ARORA	8386828844	भारत माता,आ धरती कतना देती है
11	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHOPA KHEDA (223172)	LATA SHARMA	8005594121	शरीष के फूल
12	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHARAGDIA BLOCK BHINDER DISTRICT UDAIPUR (223166)	LALIT SEN	9660183044	हिन्दी साहित्य का इतिहास
13	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHAWA (223196)	HEMLATA AMETA	9214108509	पाजेब
14	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHAWADIYA (223168)	SANJAY PRAKASH JHALAWAT	9667008528	हिन्दी साहित्य का इतिहास
15	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL HINTA (223169)	KAMALA SHANKER MEGHWAL	9636839658	कबीरदास
16	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KARANPUR (223206)	PREMLATA AMETA	9680828189	अलंकार
17	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KEDARIA (223154)	RADHA KRISHAN CHAUBISA	9929498843	सुभाषचन्द्र बोस
18	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHARSAN (223194)	Mrs Vijay Laxmi Rajput	8764449642	गुल्लीडंडा कहानी
19	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHERODA (223197)	DURGA CHOUBISA	9414682527	हिन्दी गद्य वधाओ मे अंतर
20	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KUNDAI (223173)	Devi Lal Meghwal	9928846231	जगदीश चन्द्र बोस
21	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MAJAWADA (223187)	SOBHA LAL MEGHWAL	9828635624	अलंकार
22	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MAL KI TOOS (223182)	BRAJPAL SINGH	9649702506	राम की शक्ति पूजा
23	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MODI (223188)	ISHWAR LAL DAULAWAT	9829261310	छंद
24	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MOTIDA (223149)	NAVAL CHAND PRAJAPAT	9928231569	राष्ट्र का स्वरूप
25	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL AASAWARA (223186)	ROMA KUMARI	9116829159	संस्कारो ओर शास्त्रो की लड़ाई
26	CHATUR GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KANORE (223217)	RAJENDRA PRASAD VYAS	9571611205	हिन्दी गद्य का वकास
27	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RUNDERA (223201)	AKHILESH KUMAR SHARMA	9887904045	काव्य गुण भोर का तारा
28	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SALEDA BHINDER (223152)	MOHAN LAL CHOUDHARY	9460803387	छंद
29	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SARANGPURA BHINDER (223150)	MUKESH KUMAR DHAKAR	8058742757	हिन्दी साहित्य का इतिहास
30	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SAVNA (223175)	ARUN KUMAR SAINI	9783917070	मे थलीशरण गुप्त
31	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SINHAD (223174)	RANJEET SWAMI	8104236922	हिन्दी साहित्य का इतिहास
32	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TARAWAT (223212)	KAMAL KUMAR JAIN	9460803814	गेहू बनाम गुलाब
33	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL VANA (223156)	ANITA BHANAWAT	9413976884	मठाई वाला

CBEO BHINDER

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ,राजस्थान, अजमेर

परीक्षा 2021 के लिए हटाया गया भाग

विषय – हिन्दी साहित्य

विषय कोड – 21

कक्षा –12

अध्याय संख्या : शीर्षक जो हटाया गया है टिप्पणी

काव्यांग परिचय काव्य दोष
छंद–गीतिका, द्रुतविलम्बित, वंशस्थ, कवित्त,
अलंकार– विशेषोक्ति, दृष्टांत, मानवीकरण,
पाठ्पुस्तक –सरयू से हटाये अध्याय
अध्याय संख्या : शीर्षक जो हटाया गया है लेखक /कवि
4 प्रेम पीर वर्णन घनानन्द
5 ऋतु वर्णन सेनापति
6 गंगा स्तुति पद्माकर
12 किरण धेनुएँ, विडम्बना एक बोध नरेश मेहता
15 भारतीय संस्कृति (निबन्ध) बाबू गुलाब राय
19 सेव और देव (कहानी) स.ही.वा.अज्ञेय
20 भक्ति आन्दोलन और तुलसीदास राम विलास शर्मा
22 भारत भी महाशक्ति बन सकता है श्रीधर पराड़कर
पाठ्पुस्तक –मंदाकिनी से हटाये अध्याय
अध्याय संख्या : शीर्षक जो हटाया गया है लेखक /कवि
4 हमारी पुण्य भूमि और उसका गौरवमय अतीत (भाषण अंश) एकनाथ रानाडे
5 रामकुमार वर्मा से बातचीत शैवाल सत्यार्थी
7 सुभद्रा (संस्मरण) महादेवी वर्मा
11 यात्राःएक पावन तीर्थ की (यात्रावृत) डॉ.देव कोठारी

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ,राजस्थान, अजमेर

परीक्षा 2021 के लिए संशोधित पाठ्यक्रम

विषय – हिन्दी साहित्य

विषय कोड – 21

कक्षा –12

समय–3:15
अधिगम क्षेत्र अंक
हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास (आधुनिक काल 16
काव्यांग परिचय (सरय–ू अध्याय 23 में संकलित) 16
पाठ्यपुस्तक –सरयू (प्रथम पुस्तक अध्याय 1 से 22) 32
पाठ्यपुस्तक –मंदाकिनी (द्वितीय पुस्तक) 16
खण्ड–1
हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास–आधुनिक काल 16 अंक
आधुनिक काल का सामान्य परिचय – (4 प्रश्न) 4x4=16

CBEO BHINDER

खण्ड–2

काव्यांग परिचय – 16 अंक

(क) काव्य गुण –(2 प्रश्न) 1x2=2
(ख) छंद–(हरिगीतिका, छप्पय, कुण्डलिया, सवैया) 3 प्रश्न 2x3=6
(ग) अलंकार–(अन्योक्ति, समासोक्ति, विभावना, प्रतीप, व्यतिरेक) कोई दो प्रश्न 4x2=8

खण्ड–3

पाठ्य पुस्तक–प्रथम पुस्तक (सरयू) – 32 अंक
(क) 1 व्याख्या प्रश्न गद्य से (विकल्प सहित) – 3x1=03
(ख) 1 व्याख्या प्रश्न पद्य से (विकल्प सहित) – 3x1=03
(ग) 2 निबंधात्मक प्रश्न (1 प्रश्न गद्य से एवं 1 प्रश्न पद्य भाग से विकल्प सहित) 4x2=8
(घ) 4 लघूत्तरात्मक प्रश्न (2 गद्य एवं 2 पद्य भाग से) – 3x4=12
(ड.) किसी एक कवि या लेखक का परिचय – 2x1=02
(च) 2 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (1 गद्य एवं 1 पद्य भाग से) – 2x2=04
खण्ड–4

पाठ्य पुस्तक–द्वितीय पुस्तक (मंदाकिनी) – 16 अंक
(क) 1 निबंधात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) – 4X1=04
(ख) 4 लघूत्तरात्मक प्रश्न – 3x4=12
निर्धारित पुस्तके–ं
सरयू (प्रथम पुस्तक) – माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर।
मंदाकिनी (द्वितीय पुस्तक) – माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर।
प्रष्न पत्र सत्रांक पूर्णांक
80 20 100
हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास – माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर।
माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ,राजस्थान, अजमेर

परीक्षा 2021 के लिए संशोधित पाठ्यक्रम

विषय – हिन्दी साहित्य
विषय कोड – 21
कक्षा –12
अध्याय संख्या : शीर्षक जो इस सत्र पाठ्यक्रम मे ं रखा गया है
काव्यांग परिचय काव्य गुण,
छंद – (हरिगीतिका, छप्पय, कुण्डलिया, सवैया)
अंलकार – (अन्योक्ति, समासोक्ति, विभावना, प्रतीप, व्यतिरेक)

पुस्तक का नाम – सरयू

शीर्षक जो इस सत्र पाठ्यक्रम मे ं रखा गया है लेखक /कवि

CBEO BHINDER

पद्य भाग

1 दोहे, पद कबीर
2 मंदोदरी की रावण को सीख तुलसी दास
3 दोहे रहीम
7 यशोधरा (संकलित), भारत की श्रेष्ठता मैथिलीशरण गुप्त
8 राम की शक्ति पूजा सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
9 पेशोला की प्रतिध्वनि जयशंकर प्रसाद
10 कुरुक्षेत्र (तृतीय सर्ग–), रामधारी सिंह दिनकर
11 भारत माता, धरती कितना देती है सुमित्रानन्दन पंत

गद्य भाग

13 गुल्ली डण्डा (कहानी) प्रेमचंद
14 मिठाईवाला (कहानी) भगवती प्रसाद वाजपेयी
16 शिरीष के फूल (निबन्ध) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
17 पाजेब (कहानी) जैनेन्द्र कुमार
18 अलोपी(संस्मरण) महादेवी वर्मा
21 संस्कारो ं और शास्त्रों की लड़ाई(व्यंग्य निबन्घ) हरिशंकर परसाई

पुस्तक का नाम – मंदाकिनी

शीर्षक जो इस सत्र पाठय् क्रम मे ं रखा गया है लेखक /कवि
1 हिन्दी गद्य का विकास(निबन्ध)
2 राष्ट्र का स्वरूप डॉ.वासुदेवशरण अग्रवाल
3 निर्वासित(कहानी) सूर्यबाला
4 सुभाषचन्द्र बोस संकलित
5 भारत के महान वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बोस परमहंस योगानन्द
6 भोर का तारा जगदीश चंन्द्र माथुर
7 गेहूँ बनाम गुलाब रामवृक्ष बेनीपुरी

CBEO BHINDER

काव्य गुण

प्र.1 काव्य गुण किसे कहते है? ये कितने प्रकार के होते है,नाम लिखो?

उत्तर – रस का उत्कर्ष करने वाले तत्वों को या धर्मो को काव्य गुण कहते है। ये मुख्यतः तीन प्रकार के होते है– (1) माधुर्य गुण (2) ओज गुण (3) प्रसाद गुण

प्र.2 माधुर्य गुण की परिभाषा लिखो?

उत्तर – चित्त को आह्लादित करने वाली रचनाओं में माधुर्य गुण होता है। ऐसी रचना जो कर्णप्रिय शब्दों से युक्त हो, और सहृदय को आनन्द से परिपूर्ण कर दे उसमें माधुर्य गुण होता है।

प्र.3 ओज गुण का उदाहरण लिखो?

उत्तर – हय रूण्ड गिरे, गज झुण्ड गिरे, कट–कट अवनि पर शुण्ड गिरे
भू पर हय विकल, वितुण्ड गिरे, लड़ते–लड़ते अरि झुण्ड गिरे।

प्र.4 प्रसाद गुण की व्यंजना किन रसो में होती है?

उत्तर – प्रायः सभी रसों में प्रसाद गुण की व्यंजना होती है।

प्र.5 ओज गुण के व्यंजक रस बताइए।

उत्तर – वीर, रौद्र, और वीभत्स रसों से युक्त रचनाओं में ओज गुण होता है।

प्र.6 माधुर्य गुण किन रसों मे होता है?

उत्तर – श्रृंगार, करूण और शांत रस वाली रचनाओं में मार्धुय गुण होता है।

प्र.7 माधुर्य गुण का एक उदाहरण लिखो?

उत्तर – मँद मँद चढ़ि चल्यो चैत निसि चंद चारू
मंद मंद चाँदनी पसारत लतन ते।
मंद मंद जमुना तरंगनि हिलोरे लेत
मंद मंद मोद मंजु मंजुलिका सुमन ते ।।

प्र.8 ओज गुण की परिभाषा लिखिए

उत्तर – ऐसी रचना जो जिसे पढ़ने पर उत्साह,ऊर्जा, जोश, आवेश, और वीरता जैसे भाव चित्त में उत्पन्न हो जायें उसमें ओज गुण होता है। ऐसी रचनाओं में दीर्घ समास युक्त पदावली, सयुक्त वर्ण, मूर्धन्य वर्ण और कठोर वर्णो का प्रयोग होता है।

प्र.9 प्रसाद गुण की परिभाषा लिखिए

उत्तर –जिस गुण के कारण किसी रचना का अर्थ शीघ्र ही समझ में आ जाये यानि उसका पूरा प्रभाव चित्त पर पड़ जाये तो वहाँ प्रसाद गुण होता है। प्रसाद गुण वाली रचनाओं में सहजता,स्वच्छता और सहजग्राह्यता होती है।

प्र.10 प्रसाद गुण का एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर –हे प्रभो आनन्द दाता ज्ञान हमको दीजिए

शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।

प्र.11 ''अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो

प्रशस्त पुण्य–पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो''

इन पंक्तियों में कौनसा काव्य गुण है, कारण भी बताइए।

उत्तर –इन पंक्तियों में ओज गुण है क्योकि इन्हे पढ़ने पर जोश, उत्साह और ओज का भाव चित्त में उत्पन्न हो रहा है।

CBEO BHINDER

प्र.12 काव्य में गुणों की स्थिति के बारे में बताइए।

उत्तर –जिस प्रकार मनुष्य में शूरता, उदारता, करूणा, दया आदि गुण आत्मा के नित्य धर्म होते है और उसका उत्कर्ष करते है। उसी प्रकार काव्य की आत्मा **'रस'** का उत्कर्ष करने वाले धर्म काव्य गुण होते है जो रस के नित्य धर्म माने जाते है।

प्र.13 आचार्यो ने कितने काव्य गुण माने हैं?

उत्तर –आचार्य दण्डी ने दस, वामन ने बीस, आचार्य भरतमुनि, भामह, मम्मट एवं विश्वनाथ ने तीन–तीन काव्य गुण माने जाते है। परवर्ती आचार्यो ने भी तीन ही काव्य गुण स्वीकार किये है। आचार्य भोजराज ने सर्वाधिक 24–24 काव्य गुण माने है। लेकिन वर्तमान में तीन ही काव्य गुण मान्य है।

प्र.14 ''बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंहे करें, भौहनि हँसे, देन कहे नट जाय।।
उत्तर – माधुर्य गुण

प्र.15 ''विनती सुन लो हे भगवान
हम सब बालक है नादान''।
इन पंक्तियों में कौनसा काव्य गुण है।
उत्तर – प्रसाद गुण

प्र.16 ''कंकन किंकिन नूपुरधुनि सुनि।
कहत लखन सन राम ह्रदय गुनि''।।
इन पंक्तियों में कौनसा काव्य गुण है।
उत्तर – माधुर्य गुण

प्र.17 काव्य में आत्मतत्त्व के रूप में विद्यमान रस के नित्य धर्मो को क्या कहते है?
उत्तर – काव्य गुण

प्र.18 ''कहत ,नटत, रीझत, खिझत,मिलत,खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैनन ही सो बात।।''
उक्त पंक्ति में कौनसा काव्य गुण है?
उत्तर माधुर्य गुण

–:छन्दः–

प्रश्न : 1. छन्द की परिभाषा बताइए।
उत्तर : – जब किसी कविता को मात्राओं की संख्या में मात्राओं अथवा नियमित वर्णों के अनुसार लिखा जाता है तथा उसमें यथा स्थान विराम, यति तथा गति का पालन किया जाता है तो उसको छन्द कहते हैं।
प्रश्न : 2. छन्द के प्रमुख भेद कौन–कौन से माने जाते हैं ? वर्णन कीजिए।
उत्तर : –छन्द के प्रमुख दो भेद माने जाते हैं।
1. मात्रिक छन्द 2. वर्णिक छन्द
प्रश्न : 3 मात्रिक छन्द किसे कहते हैं।
उत्तर : – जिन छन्दों में केवल मात्राओं का विधान रहता है, मात्रिक छन्द कहलाते हैं।

CBEO BHINDER

प्रश्न : 4 वर्णिक छन्द किसे कहते हैं ?
उत्तर : –जिन छन्दों में केवल वर्णों की गणना की जाती है, वर्णिक छन्द कहलाते हैं।

प्रश्न : 5. मात्रिक एवं वर्णिक छन्द में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
उत्तर : –मात्रिक छन्द–(1) मात्रिक छन्द मात्राओं की संख्याओं के आधार पर होते हैं।
(2) इस छन्द के लिए दो मात्राएं निर्धारित हैं– लघु (।), गुरु (ऽ)
(3) इसमें ह्रस्व स्वर को एक मात्रा तथा दीर्घ स्वर को दो मात्रा गिना जाता है।
–वर्णिक छन्द–(1) वर्णिक छन्द वर्णों की संख्याओं के आधार पर होते है।
(2) इसमें सिर्फ वर्णों का ही महत्व होता है।
(3) इसमें ह्रस्व व दीर्घ स्वर के वर्णों को केवल एक गिना जाता है।
प्रश्न : 6. सवैया छन्द किसे कहते हैं ?
उत्तर : – सवैया एक छन्द है। यह चार चरणों का समपाद वर्ण छन्द है। वर्णिक वृत्तों में 22 से 26 अक्षर के चरण वाले जाति छन्दों को सामूहिक रूप से हिन्दी में सवैया कहते हैं।
प्रश्न : 7. सवैया छन्द के कितने भेद माने जाते हैं, नामोल्लेख कीजिए ?
उत्तर : – सवैया छन्द के मुख्यतः 10 भेद माने जाते हैं।
(1) मदिरा सवैया।
(2) मत्तगयंद (मालती) सवैया।
(3) सुमुखी सवैया।
(4) किरीट सवैया।
(5) सुन्दरी सवैया।
(6) दुर्मिल सवैया।
(7) कुवंदलता सवैया।
(8) लवंगलता सवैया।
(9) अरसात सवैया।
(10) अरविन्द सवैया।
प्रश्न : 8. मदिरा सवैया की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए ?
उत्तर : –परिभाषा/लक्षण – इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सात भगण (ऽ।।) और अन्त में एक गुरु (ऽ) होता है। प्रत्येक चरण में वर्णों की संख्या बाईस (22) होती है।
उदाहरणः– **सिंधु तर्‌यो उनके बनरा, तुम पै धनुरेख गई न तरी।**
बानर बाँधत सो न बंध्यो, उन वारिधि बाँधि के बाट करी।
श्री रघुनाथ प्रताप की बात, तुम्हें दसकंठ न जानि परी।
तेलहु तूलहु पूँछ जरीन जरी, जरी लंक जराइ जरी।
प्रश्न : 9. मत्तगयंद/मालती सवैया की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?
उत्तर :– इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सात भगण (ऽ।।) और अन्त में दो गुरु (ऽऽ) होते हैं। प्रत्येक चरण की वर्ण संख्या–23 होती है।
उदाहरण– **दूलह श्री रघुनाथ बने, दुलही सिय सुन्दर मंदिर मांहीं।**
– गावति गीत सबै मिलि सुंदरि, विप्र जुवा जुरि वेद पढ़ाहीं।
– रामको रूप निहारति जानकी, कंकन के नग की परछांहीं।
– यातै सबै सुधि भूलि गई, कर टेकि रही पल टारत नांहीं।
प्रश्न : 10. सुमुखी सवैया की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?
उत्तर :– परिभाषा– इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सात जगण (।ऽ।) और अंतअ में एक लघु और एक गुरू के क्रम में कुल तेबीस वर्ण होते हैं।
उदाहरणः– **जु लोक लगै सिय रामहि साथ, चलै वन मांहि फिरै न चहैं।**
हमें प्रभु आयसु देहु चलैं रउरे सँग यों कर जोरि कहैं।
चलै कछु दूर नमैं पग धूरि, भले फल जन्म अनेक लहैं।
सिया सुमुखी हरि फेरि जिन्हें, बहु भाँतिन तैं समुझाय कहैं।

प्रश्न : 11. किरीट सवैया की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तर :– परिभाषा– इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः आठ भगण (ऽ।।) होते हैं। प्रत्येक चरण के वर्णों की कुल संख्या चौबीस (24) मानी गई है।

उदाहरणः–**मानुष हौ तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।**
जो पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।
पाहन हौं तो वही गिरी को, जो धर्‌यो कर छात्र पुरंदर कारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं, नित कालिंदि कूल कदंब कि डारन।

प्रश्न : 12. सुन्दरी सवैया की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तरः– परिभाषा–इसके प्रत्येक चरण में आठ सगण (।।ऽ) और एक गुरू (ऽ) के क्रम से कुल पच्चीस वर्ण होते हैं।

उदाहरणः–**सब सूर सुयोधन साथ गये, मृतको से भरा यह देश बचा है।**
मृतवत्सल माँ की पुकार बची, युवती विधवाओं का वेश बचा है।
सुख शांति गई, रस राग गया, करुणा दुख दैन्य अशेष गचा है।
विजयी के लिए यह भाग्य के हाथ में, क्षार समृद्धि का शेष बचा है।

प्रश्न : 13. दुर्मिल सवैया की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए ?

उत्तरः – परिभाषा–इसके प्रत्येक चरण में आठ सगण (।।ऽ) के क्रम में कुल चौबीस (24) वर्ण होते हैं।

उदाहरणः–**अति सूधो सनेह को मारग है, जहँ नेकु सयापन बाँक नहीं।**
तहँ साँचे चलैं तजि आनुनयौ, झिझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।
धन आनंद प्यारे सुजान सुनो, इत एक तें दूजो आँक नहीं।
तुम कौन सी पाटी पढ़े हौ लला, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।

प्रश्न : 14. कुवंदलता सवैया छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तरः – परिभाषा– इसके प्रत्येक चरण में आठ सगण (।।ऽ) और दो लघू (।।) के क्रम में कुल छब्बीस (26) वर्ण होते हैं।

उदाहरणः–**सब सौ ललुआ मिलि कै रहिये, मन जीवन–मूरि सूनो मनमोहन।**
इमि बोधि खवाय पियाय सख सँग, जाहु कहै मुद सों बन जोहन।
धरि मातु रजायसु सीस हरी, नित जामुन कच्छ फिरै सह गोपन।
यहि भाँति हरी जसुदा उपदेसहि, भाखत नेह लहै सुख सों धन।

प्रश्न : 15. लवंगलता सवैया छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तरः – परिभाषा – इसके प्रत्येक चरण में आठ जगण (।ऽ।) और अंत में एक लघु (।) के क्रम में कुल 25 वर्ण होते हैं।

उदाहरण :–**जु योग लवंग लतानि लग्यो, तब सूझ परै न कछु घर बाहर।**
अरे मन चंचल नेकु विचार, नहीं यह सार असार सरासर।
भजों रघुनंदन, पाप निकंदन, श्री जगबंदन नित्य हिये घर।
तजो कुमती, धरिये सुमती, शुभ रामहिं राम रटो निसि बासर।

प्रश्न : 16. अरसात सवैया छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तर : – परिभाषाः– इसके प्रत्येक चरण में सात भगण (ऽ।।) और एक रगण (ऽ।ऽ) के क्रम से कुल चौबीस वर्ण होते है।

उदाहरण :–**कैभट सो नरकासुर सो, पल में मधु सो सुर सो जिहिं मार्‌यो।**
लोक चतुर्दस रक्षक केशव, पूरण वेद पुराण विचार यो।
जो कमला कुच कुंकुम मंडन, पंडित देव अदेव निहार्‌यो।
सो कर मांगन को बलि पै, करतारहु नैं करतार पसार्‌यो।

CREO BHINDER

प्रश्न : 17. अरविंद सवैया छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

उत्तर :– परिभाषा– इसके प्रत्येक चरण में आठ सगण (।।S) और अंत में एक लघु (।) के क्रम से कुल 25 वर्ण होते हैं।

उदाहरणः–**सब सों लघु आपहिं जानिय जू, यह धर्म सनातन जान सुजान।**
जब हीं सुमती अस आनि बसै, उर संपत्ति सर्व विराजत आन।
प्रभु व्यापि रह्यो सचराचर में, तजि बैर सुभक्ति सजौमतिमान।
नितराम पदै अरविंदन को, मकरंद पियो सुमिलिंद समान।

प्रश्न : 18. कुण्डलिया छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तर :– परिभाषा – दोहा और रोला छन्द के मिश्रण से कुण्डलिया छन्द बनता है। यह छः चरणों का छन्द है जिसके प्रारम्भ के दो चरण 'दोहा' के तथा बाद के चार चरण 'रोला' के होते हैं। दोहे का अंतिम चरण रोला के प्रारम्भ में आता है और दोहा का प्रथम शब्द रोला का अंतिम शब्द होता है।

उदाहरणः–**लाठी में गुण बहुत हैं, सदा राखिये संग।**
गहरे नद नाले जहाँ, तहाँ बचावै अंग।
तहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ते को मारे।
दुसमन दावागीर, होय ताहू को झारे।
कहि गिरधर कविराय, सुनो हो धुर के बाठी।
सब हथियारन छोड़ि, हाथ में लीजै लाठी।

प्रश्न : 19. कुण्डलिया छन्द में कौन कौन से छन्दों का मिश्रण होता है, नामोल्लेख कीजिए?

उत्तर :– कुण्डलिया छन्द में दो छन्दों का मिश्रण होता है।
(1) दोहा। (2) रोला ।

प्रश्न : 20. छप्पय छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तर :– परिभाषा– यह छः चरणों का विषम (मिश्र) छन्द है। इसके प्रथम चार चरण ''रोला'' छन्द के तथा अंतिम दो चरण ''उल्लाला'' छन्द के होते हैं। रोला के प्रत्येक चरण में ग्यारह और तेरह के विराम/यति से चौबीस मात्राएँ होती हैं। जबकि उल्लाला के विषम चरणों में पन्द्रह और सम चरणों में तेरह मात्राएँ होती है। इन दोनों छन्दों के क्रमिक मिश्रण से छप्पय छन्द बनता है। छः चरणों का छन्द होने के कारण ही ''छप्पय'' कहा जाता है।

उदाहरणः–**नीलाम्बर परिधान, हरित पट पर सुन्दर है।**
सूर्यचन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मण्डल है।
बंदी निविध विहंग, शेष फन सिंहासन है।
करते अभिषेक पयोद है, बलिहारी इस वेश की।
हे मातृभूमि तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की।

प्रश्न : 21. छप्पय छन्द किन दो छन्दों से मिलकर बनता हैं?

उत्तर :– छप्पय छन्द ''रोला'' और ''उल्लाला'' छन्द से मिलकर बनता है।

प्रश्न : 22. हरिगीतिका छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तर :– परिभाषाः– हरिगीतिका छन्द एक मात्रिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 16 और 12 के विराम/यति के कुल 28 मात्राएँ होती है। अंत में लघु गुरू (।S) आते हैं।

उदाहरणः–**हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।**
आओ विचारें आज मिलकर, ये समस्याएँ सभी।
देखें कहीं पूर्वज हमारे, स्वर्ग से आकर हमें।
आँसू बहावें शेक से, इस वेश में पाकर हमें।

प्रश्न : 23. हरिगीतिका छन्द किस प्रकार का छन्द है?
उत्तर :– हरिगीतिका छन्द एक मात्रिक सम छन्द है।
प्रश्न : 24. गण किसे कहते हैं। तथा छन्दों में इसका क्या उपयोग है?
उत्तर :– गण का सामान्य अर्थ है समूह। छन्दशास्त्र में तीन अक्षरों के समूह को ''गण'' कहते हैं वर्णिक छन्दों के लिए गणों का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि उनके लक्षण और उदाहरण गणों के आधार पर ही चलते हैं। गणों में लघु और गुरु के विचार का एक नियत क्रम रहता है और प्रत्येक गण में केवल तीन ही वर्ण होते हैं।

प्रश्न :25 गणों के कितने भेद होते हैं, उनके नाम व लक्षण बताइए?
उत्तर :– गणों के मुख्यत आठ भेद होते हैं–

क्र.सं.	गणों के नाम	चिह्न	मात्राओं का क्रम	उदाहरण
1	यगण	ISS	लघु , गुरू, गुरू	यमाता, यशोदा
2	मगण	SSS	गुरू, गुरू, गुरू	मातारा,अंबाला
3	तगण	SSI	गुरू,गुरू,लघु	ताराज,मैदान
4	रगण	SIS	गुरू, लघु ,गुरू	राजभ, कामना
5	जगण	ISI	लघु ,गुरू,लघु	जभान, खदान
6	भगण	SII	गुरू, लघू, लघू	भानस, मानस
7	नगण	III	लघु ,लघु ,लघु ,	कमल, अमर
8	सगण	IIS	लघु ,लघु ,गुरू	सलगा, कमला

प्रश्न : 26. यति, गति और तुक किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर :–**यति–** छन्द के प्रत्येक चरण में लय की रक्षा निमित्त उच्चारण का प्रवाह कुछ काल के लिए रुक जाता है। .. इसी विश्राम को 'यति' कहा जाता है।

गति– काव्य में केवल वर्णों, मात्राओं या गणों की निश्चित संख्या ही पर्याप्त नहीं है, उसके लिए 'गति' भी आवश्यक तत्व है। 'गति' का अर्थ 'प्रवाह' होता है।
तुक– पदांत में भिन्न–भिन्न चरणों में ध्वनि की समानता को ''तुक'' या 'अन्त्यानुप्रास' कहते हैं।

''अलंकार''

प्रश्न 1. अलंकार शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर अलंकार शब्द का अर्थ आभूषण है।

प्रश्न 2. 'अलंकार' शब्द कितने शब्दों से मिलकर बना हैं?

उत्तर (अलं+कार) इन दो शब्दों से मिलकर बना हैं।

प्रश्न 3. अलं+कार शब्दों का शाब्दिक अर्थ बताइये।

उत्तर अलं –– भूषण

कार –– करने वाला

अर्थात् जो भूषित करे वह अलंकार हैं।

CBECBHINDER

प्रश्न 4. अलंकार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर जिस प्रकार स्त्रियाँ अपने साज श्रृंगार के लिए आभूषणों का प्रयोग करती है ठीक उसी प्रकार कविता कामिनी अपने श्रृंगार और सजावट के लिए जिन तत्वों का उपयोग करती हैं वे अलंकार कहलाते है। अर्थात् काव्य के शोभा कारक धर्म अलंकार है।

प्रश्न 5. अलंकार के कितने प्रकार हैं?

उत्तर अलंकार दो प्रकार के होते है।

प्रश्न 6. अलंकार के दो प्रकारों के नाम बताइये।

उत्तर (1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार

प्रश्न 7. शब्दालंकार की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

उत्तर जहाँ किसी कथन में विशिष्ट शब्द प्रयोग के कारण चमत्कार अथवा सौन्दर्य आ जाता है वहाँ शब्दालंकार होता हैं। वह बाँसुरी की धुनि कानि पैर, कूल कानि हियो तजि भाजति हैं। ''कानि'' के दो अर्थ – कान और मर्यादा है।

इस प्रकार का शब्द प्रयोग शब्दालंकार कहलाता है।

प्रश्न 8 अन्योक्ति अलंकार की परिभाषा (लक्षण) बताइये।

उत्तर जब कवि अप्रस्तुत का वर्णन करके प्रस्तुत का बोध कराता हैं तो वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता हैं।

अन्योक्ति में बात किसी प्रस्तुत पर रखकर कही जाती हैं लेकिन कथन का लक्ष्य कोई दूसरा प्रस्तुत होता है।

प्रश्न 9 अन्योक्ति अलंकार का उदाहरण दीजिए।

उत्तर स्वास्थ्य सुकृत न श्रम वृथा, देखि विहंग विचारि।

बाज पराये पानि पर, तू पंछीन न मारि।।

कविवर बिहारी ने इस अन्योक्ति द्वारा मिर्जा राजा जयसिहं को सावधान किया हैं कि वह बादशाह के लिए स्वधर्मी राजाओं के साथ युद्ध ना करे।

प्रश्न 10. अन्योक्ति अलंकार को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर जब कवि अप्रस्तुत का वर्णन करके प्रस्तुत का बोध कराता हैं तो वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता हैं। अन्योक्ति में बात किसी प्रस्तुत पर रखकर कही जाती हैं लेकिन कथन का लक्ष्य कोई दूसरा प्रस्तुत होता है।

उदाहरण – स्वास्थ्य सुकृत न श्रम वृथा, देखि विहंग विचारि।
बाज पराये पानि पर, तू पंछीन न मारि।।

कविवर बिहारी ने इस अन्योक्ति द्वारा मिर्जा राजा जयसिहं को सावधान किया हैं कि वह बादशाह के लिए स्वधर्मी राजाओं के साथ युद्ध ना करे।

CBEO BHINDER

प्रश्न 11. समासोक्ति एवं अन्योक्ति अलंकार का उदाहरण सहित अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर समासोक्ति अलंकार——इसमें कुछ ऐसे विशेषणों का प्रयोग होता हैं जिसमें प्रस्तुत और अप्रस्तुत अर्थ का एक साथ बोध हो जाता है। समास अर्थात् संक्षिप्त उक्ति द्वारा प्रस्तुत और अप्रस्तुत का बोध जहाँ एक साथ होता हैं वहाँ समासोक्ति अलंकार होता हैं।

उदाहरण– सिंधु सेज पर धरा वधू अब, तनि संकुचित बैठी सी।
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में, मान किए सी ऐंठी सी।।

यहाँ धरा तथा वधू का चित्रण समान विशेषताओं के द्वारा एक साथ होने से समासोक्ति अलंकार हैं।

अन्योक्ति अलंकार ——जब कवि अप्रस्तुत का वर्णन करके प्रस्तुत का बोध कराता हैं तो वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता हैं।

अन्योक्ति में बात किसी प्रस्तुत पर रखकर कही जाती हैं लेकिन कथन का लक्ष्य कोई दूसरा प्रस्तुत होता है।

उदाहरण – स्वास्थ्य सुकृत न श्रम वृथा, देखि विहंग विचारि।
बाज पराये पानि पर, तू पंछीन न मारि।।

कविवर बिहारी ने इस अन्योक्ति द्वारा मिर्जा राजा जयसिहं को सावधान किया हैं कि वह बादशाह के लिए स्वधर्मी राजाओं के साथ युद्ध ना करे।

प्रश्न 12. समासोक्ति अलंकार से क्या तात्पर्य है?

उत्तर इसमें कुछ ऐसे विशेषणों का प्रयोग होता हैं जिसमें प्रस्तुत और अप्रस्तुत अर्थ का एक साथ बोध हो जाता है। समास अर्थात् संक्षिप्त उक्ति द्वारा प्रस्तुत और अप्रस्तुत का बोध जहाँ एक साथ होता हैं वहाँ समासोक्ति अलंकार होता हैं।

प्रश्न 13. समासोक्ति अलंकार की परिभाषा दीजिए।

उत्तर इसमें कुछ ऐसे विशेषणों का प्रयोग होता हैं जिसमें प्रस्तुत और अप्रस्तुत अर्थ का एक साथ बोध हो जाता है। समास अर्थात् संक्षिप्त उक्ति द्वारा प्रस्तुत और अप्रस्तुत का बोध जहाँ एक साथ होता हैं वहाँ समासोक्ति अलंकार होता हैं।

प्रश्न 14. समासोक्ति अलंकार का उदाहरण लिखिए।

उत्तर सिंधु सेज पर धरा वधू अब, तनि संकुचित बैठी सी।
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में, मान किए सी ऐंठी सी।।

यहाँ धरा तथा वधू का चित्रण समान विशेषताओं के द्वारा एक साथ होने से समासोक्ति अलंकार हैं।

प्रश्न 15 विभावना अलंकार तथा विशेषोक्ति अलंकार का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर **विभावना अलंकार** —— जहाँ कारण के अभाव में कार्य होने का वर्णन किया जाता हैं वहाँ विभावना अलंकार होता हैं। विभावना में बिना कारण के कार्य सम्पन्न होता हैं।

उदाहरण —— बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।

कर बिन करम करे विधि नाना।।

आनन रहित सकल रस भोगी।

बिनु बानी वक्ता बड़ जोगी।।

CEO BHINDER

विशेषोक्ति अलंकार—जहाँ कारण उपस्थित होने पर भी कार्य नहीं होता, वहाँ विशेषोक्ति अलंकार होता है। कारण होने पर कार्य अवश्य होना प्रकृति प्रसिद्ध नियम हैं।

इसके विपरीत विशेषोक्ति में कारण होने पर भी कार्य सम्पन्न नहीं होता।

उदाहरण ——देखो दो—दो मेघ बरसते
मैं प्यासी की प्यासी।
जल होने पर भी उसकी (वियागिनी) प्रिय के दर्शन की प्यास नहीं बुझ रही।

प्रश्न 16. विभावना अलंकार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर जहाँ कारण के अभाव में कार्य होने का वर्णन किया जाता हैं वहाँ विभावना अलंकार होता हैं। विभावना में बिना कारण के कार्य सम्पन्न होता हैं।

प्रश्न 17. विभावना अलंकार का उदाहरण दीजिए।

उत्तर उदाहरण —— बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।

कर बिन करम करे विधि नाना।।

आनन रहित सकल रस भोगी।

बिनु बानी वक्ता बड़ जोगी।।

प्रश्न 18. 'प्रतीप' शब्द का अर्थ क्या हैं?

उत्तर प्रतीप शब्द का अर्थ हैं, विपरीत अथवा उल्टा।

प्रश्न 19. प्रतीप अलंकार की परिभाषा दीजिए।

उत्तर जहाँ कविता में किसी प्रसिद्ध उपमान का उपमेय की तुलना में अपकर्ष किया जाता हैं वहाँ प्रतीप अलंकार होता है।

प्रश्न 20. प्रतीप अलंकार का उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर ''सीप बदन सम हिमकर नाहीं। इस उदाहरण में सुन्दर मूल के प्रसिद्ध उपमान चन्द्रमा का उपमेय, 'सीप बदन' की तुलना में अपकर्ष दिखाया गया हैं अतः प्रतीप अलंकार है।

प्रश्न 21. प्रतीप अलंकार में क्या दिखाया जाता हैं?

उत्तर प्रतीप अलंकार में तुलना के आधार पर उपमान को उपमेय से नीचा दिखाया जाता हैं।

प्रश्न 22. 'व्यतिरेक' अलंकार की परिभाषा दीजिए।

उत्तर व्यतिरेक अलंकार में उपमेय की तुलना में उपमेय में अधिक विशेषताएँ बताते हुए उसे उपमान से श्रेष्ठ सिद्ध किया जाता हैं।

प्रश्न 23. व्यतिरेक अलंकार का उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर निज परताप द्रवहि नवनीता।

पर दुख द्रवहि सुसंत पुनीता।।

यहाँ नवनीत की अपेक्षा सन्तों में पर दुख से द्रवित होने की विशेषता बताते हुए उन्हें नवनीत से श्रेष्ठ बताया गया हैं।

CBEO BHINDER

प्रश्न 24 . काव्य में अलंकारों की क्या उपयोगिता है ?
उत्तर—अलंकार काव्य के लिए अत्यन्त उपादेय है। अलंकारों की सहायता से ही सामान्य कथन भी काव्य की संज्ञा प्राप्त कर पाने में समर्थ हो पाता है। अलंकार काव्य रूपी तन के वस्त्राभूषण है अर्थात् जिस प्रकार मानव—शरीर की शोभा और सार्थकता उसके द्वारा वस्त्राभूषण धारण करने से ही होती है, उसी प्रकार अलंकारों के प्रयोग के बाद ही कोई कथन काव्यत्व के महत्व को पाने में समर्थ हो पाता है।

प्रश्न 24. . विभावना अलंकार की परिभाषा लिखिए ?
उत्तर—जहां कारण का अभाव होने पर भी कार्य संपन्न होना प्रदर्शित होता है। कहीं कही अपर्याप्त कारण होने पर भी कार्य का होना, रूकावट होने पर भी कार्य हो जाए तथा विपरित कारण से कार्य हो वहां विभावना अलंकार होता है।

प्रश्न 25. विभावना अलंकार को उदाहरण सहित समझाइए ?
उत्तर—"बिनु पद चलै, सुनै बिनु काना ।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना ।। "
यहाँ निराकार ईश्वर का वर्णन है। उसके बिना पैरों के चलने, बिना कानों के सुनने तथा बिना हाथों के काम करने के बारे में बताया है। समस्त कार्य बिना कारण के ही संपन्न हो रहा है अतः विभावना अलंकार है।

प्रश्न 26. . विभावना अलंकार के अन्य उदाहरण—
उत्तर— 1. मुनितापस जिनतें दुख लहहीं ।
तेन रेस बिनु पावक दहहीं ।।
2.बिन घनश्याम धाम— धामब्रज—मंडल में,
ऊधो! नित बसति बहार बरसा की है।
3.कारे घन उमडि अँगारे बरसत हैं।

भारतेन्दु युग

प्रश्न—1 भारतेन्दु युग के प्रमुख निबन्धकारों के नाम लिखिए?

उत्तर—भारतेन्दु युग में सबसे अधिक सफलता निबन्ध विधा को ही प्राप्त हुई। भारतेन्दु हरिशचन्द्र स्वयं इस युग के प्रमुख निबन्धकार है जिन्होने अनेक विषयों पर निबन्ध लिखे। उनके अतिरिक्त पं. प्रतापनारायण मिश्र, पं. बालकृष्ण भट्ट, पं. बदरीनारायण चौधरी, अम्बिकादत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी, काषीनाथ खत्री, बालमुकुन्द गुप्त, लाला श्रीनिवासदास प्रमुख निबन्धकार है।इन सभी ने विचारात्मक एवं भावात्मक शैलियों में निबन्ध लिखे।

प्रश्न —2 हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल को कितने उपकालों में विभाजित किया जाता है?

उत्तर—आधुनिक काल का प्रारम्भ 1843 ई. से अब तक माना जाता है। आधुनिक काल को हम मुख्य रुप से चार उपकालों में विभाजित कर सकते है जो निम्न प्रकार है—

1.भारतेन्दु युग—इस युग को **पुनर्जागरण काल** भी कहते है। भारतेन्दु हरिशचन्द्र की पत्रिका 'कवि वचन सुधा' के प्रकाशन वर्ष 1868 ई. से प्रारम्भ होकर महावीर प्रसाद द्विवेदी की पत्रिका 'सरस्वती' के प्रकाषन वर्ष 1900 ई. तक।

2. द्विवेदी युग—इस युग को **जागरण सुधार काल** भी कहते है। इसकी अवधि महावीर प्रसाद द्विवेदी की पत्रिका 'सरस्वती' के प्रकाशन वर्ष 1900 ई. से 1920 ई. मानी जाती है।

CBEO BHINDER

3.छायावाद– छायावाद की समयसीमा 1918 ई. से 1936 ई. तक मानी गई है। इसी युग में **प्रगतिवाद** एवं **प्रयोगवाद** का प्रवर्तन हुआ।
4. छायावादोत्तर युग– इसे अनेक समीक्षक स्वातन्त्र्योत्तर युग कहना उचित मानते है। इस युग में विविध काव्यधाराओं के साथ हिन्दी गद्य साहित्य की अनेक विधाओं का विकास हुआ।

प्रश्न –3 भारतेन्दु युग को पुनर्जागरण काल क्यों कहा जाता है? इस काल के गद्य साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए?
उत्तर– भारतेन्दु युग में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में आम जनता की सक्रियता थी। अतः इस युग के कवि मातृभूमि–प्रेम, गोरक्षा, बाल विवाह निषेध, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, शिक्षा का प्रसार एवं मद्य–निषेध जैसे अनेक विषयों को अपनाने लगे। तत्कालीन सामाजिक संगठन जैसे ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी के सिद्धान्तों एवं रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द के विचारों का प्रभाव भी जन–जीवन पर पड़ रहा था। पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के प्रभाव से आर्थिक, धार्मिक तथा औद्योगिक क्षेत्रों में पुनर्जागरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई थी। गद्य–विधाओं में भी लेखन कार्य होने लगा था। इन सभी परिवर्तनों के कारण भारतेन्दु युग को पुनर्जागरण काल कहा जाता है।

प्रश्न –4 भारतेन्दु युग में रचित गद्य–साहित्य पर प्रकाश डालिये?
उत्तर– भारतेन्दु युग में गद्य की लगभग सभी विधाओं का विकास हुआ। भारतेन्दु, श्रीनिवासदास, किशोरीलाल गोस्वामी आदि ने समसामयिक समस्याओं पर नाटक रचे। इस युग में श्रीनिवासदास ने 'परीक्षा गुरु' उपन्यास लिखा, तो ठाकुर जगन्मोहनसिंह तथा राधाकृष्णदास आदि ने अनेक उपन्यास लिखे। कहानी लेखन में अम्बिकादत्त व्यास, चण्डीप्रसाद सिंह ने नीति एवं हास्य प्रधान कहानियाँ लिखी। भारतेन्दु युग में निबन्ध विधा का सर्वाधिक विकास हुआ। पं. प्रतापनारायण मिश्र, पं. बालकृष्ण भट्ट, पं. बदरीनारायण चौधरी, राधाचरण गोस्वामी, काशीनाथ खत्री, बालमुकुन्द गुप्त, लाला श्री निवास दास आदि ने विचारात्मक, भावात्मक एवं कथात्मक निबन्ध लिखे।

प्रश्न –5भारतेन्दु युग में नाटक विधा के विकास क्रम पर प्रकाश डालिए?
उत्तर– हिन्दी नाटकों का आरम्भ भारतेन्दु युग से ही माना जाता है। भारतेन्दु ने अनूदित नाटकों में **विद्यासुन्दर, रत्नावली, पाखण्ड–विखण्डन, धनंजय विजय, कर्पूरमंजरी, भारत जननी, मुद्राराक्षस** आदि लिखे है और मौलिक नाटकों में **सत्य हरिशचन्द्र, दुर्लभ बन्धु, श्रीचन्द्रावली, विषस्य विषमौषधम्, भारत दुर्दषा, नीलदेवी, अन्धेर नगरी, सती प्रताप एवं प्रेमजोगिनी** आदि लिखे है।भारतेन्दु के प्रभाव सेश्रीनिवासदास ने **संयोगिता स्वयंवर, रणधीर प्रेममोहिनी तथा तप्तासंवरण** ,राधाचरण गोस्वामी ने **अमरसिंह राठौर,** राधाकृष्णदास ने **महाराणा प्रताप** आदि नाटक लिखे।

प्रश्न –6 भारतेन्दु युग में आलोचना विधा के विकास क्रम पर प्रकाश डालिए?
उत्तर– भारतेन्दु युग में आलोचना का प्रारम्भ पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से हुआ। **'हिन्दी प्रदीप'** एक ऐसा पत्र था जो गम्भीर आलोचनाएँ प्रकाषित करता था। वस्तुतः भारतेन्दु युग में आधुनिक आलोचना का रूप पुस्तक समीक्षाओं तक ही सीमित था। इस क्रम में बदरीनारायण चौधरी ने श्रीनिवासदास कृत 'संयोगिता स्वयंवर' और गदाधर सिंह कृत 'बंग विजेता' के अनुवादों की विस्तृत आलोचना **'आनन्द कादम्बिनी'** में की। बालकृष्ण भट्ट ने 'नीलदेवी', 'परीक्षा गुरु', 'संयोगिता स्वयंवर' और 'एकान्तवासी योगी' की आलोचनाएँ कर समीक्षा–साहित्य को आगे बढ़ाया।

CBEOBHINDER

प्रश्न –7 भारतेन्दु युग में उपन्यास विधा के विकास कम पर प्रकाश डालिए?

उत्तर–हिन्दी साहित्य में उपन्यास विधा का विकास भारतेन्दु काल में ही माना जाता है। '**परीक्षा गुरु**' इस काल का पहला मौलिक उपन्यास माना जाता है। इस काल में श्रद्धाराम फुल्लौरी ने **'भाग्यवती'** और बालकृष्ण भट्ट ने **'रहस्य कथा', 'नूतन ब्रह्मचारी'** और **'सौ अजान एक सुजान'** नामक उपन्यास लिखे। राधाकृष्णदास ने **'निस्सहाय हिन्दू',** लज्जाराम शर्मा ने **'धूर्त रसिकलाल'** एवं **'स्वतन्त्र रमा और परतन्त्र लक्ष्मी'** नामक उपन्यास लिखे। तिलस्मी–ऐयारी के उपन्यासों में देवकीनन्दन खत्री का **'चन्द्रकान्ता', 'चन्द्रकान्ता सन्तति', 'नरेन्द्र मोहिनी', 'वीरेन्द्र वीर'** और**'कुसुमकुमारी'** तथा हरेकृष्ण जौहर का **'कुसुमलता'** प्रसिद्ध हुए। इस युग के सर्वप्रसिद्ध उपन्यास लेखक किशोरीलाल गोस्वामी माने गए है।

<u>द्विवेदी युग</u>

प्रश्न –1 द्विवेदी युग के प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए?

उत्तर– द्विवेदी युग को **'सुधारवादी काल' एवं 'जागरण सुधार काल'** भी कहा जाता है। इस युग के प्रमुख कवियों में नाथूराम शर्मा 'शंकर', श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', राय देवीप्रसाद 'पूर्ण', गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', रामनरेश त्रिपाठी, मैथिलीशरण गुप्त, भगवानदीन, कामताप्रसाद 'गुरु', गिरिधर शर्मा 'नवरत्न', रूपनारायण पाण्डेय, लोचनप्रसाद पाण्डेय, गोपालशरण सिंह तथा मुकुटधर पाण्डेय आदि उल्लेखनीय हैं। इस युग के कवियों ने अपनी रचनाओं के द्वारा सांस्कृतिक पुनरुत्थान, उदार राष्ट्रीयता, जागरण–सुधार तथा उच्च आदर्शो की अभिव्यक्ति के साथ ही खड़ी बोली हिन्दी के स्वरूपनिर्धारण का कार्य सम्पन्न किया।

प्रश्न –2 द्विवेदी युग की काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए?

उत्तर– द्विवेदी युग की काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है–

1. समाजिक चेतना 2. सामान्य मानवीय भावना 3.राष्ट्रीय चेतना, आत्मसम्मान एवं जातीय गौरव का आस्थावादी स्वरूप 4.वर्ण्य–विषय का विस्तार 5. नीति एवं उच्च आदर्शो की स्थापना 6. प्रकृति चित्रण 7. धार्मिक भावना के प्रति आस्था 8. हास्य–व्यंग्य का मिश्रण 9. बौद्धिकता की प्रधानता 10. काव्य–रूपों की अनेकता 11 अनुवाद कार्य 14. भाषा तथा शिल्प सौन्दर्य का निर्वाह।

इस युग के कवियों ने खड़ी बोली हिन्दी को सुघड़ता, प्रांजलता एवं अभिव्यक्ति क्षमता प्रदान कर हिन्दी साहित्य के भण्डार को समृद्ध करने का कार्य किया।

प्रश्न –3 हिन्दी साहित्य के विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान पर प्रकाश डालिए?

उत्तर– द्विवेदी युग की समय सीमा 1900 ई. से 1920 ई. तक मानी जाती है। सन् 1903 ई. में द्विवेदी जी '**सरस्वती' पत्रिका** के सम्पादक बने। उस समय हिन्दी साहित्य के अधिकांश कवि पद्य लिखने में ब्रज–भाषा का प्रयोग कर रहे थे। उन्होंने उन कवियों को ब्रज भाषा छोड़कर खड़ी बोली हिन्दी में कविताएँ लिखने के लिए प्रेरित किया। साथ ही उन्होंने हिन्दी भाषा को सुव्यवस्थित करने, शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करने, व्याकरण–सम्मत परिमार्जित काव्य भाषा अपनाने पर बल दिया। द्विवेदी जी ने समस्यापूर्ति एवं नायिका–भेद जैसे विषय छोड़ने तथा राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत कविता रचना का परामर्श दिया। इस तरह आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से हिन्दी साहित्य का समुचित विकास हुआ। इनकी **'काव्य–मंजूषा', 'सुमन', 'गंगा लहरी', 'ऋतु–तरंगिणी', 'कान्यकुब्ज', 'अबला–विलाप'** आदिउल्लेखनीय रचनाएँ है।

CEO BHINDER

प्रश्न –4 द्विवेदी युग में उपन्यास विधा के विकास पर प्रकाश डालिए?

उत्तर– द्विवेदी युग में उपन्यास नाटक की अपेक्षा अधिक लिखे गए। इस युग में तिलस्मी–ऐयारी, जासूसी, अद्भुत घटनाप्रधान, ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपन्यास लिखे गए। द्विवेदी युग के तिलस्मी–ऐयारी उपन्यासों की परम्परा में देवकीनन्दन खत्री के **'काजर की कोठरी'**, **'अनुठी बेगम'**, **'गुप्त गोदना'**, **'भूतनाथ'**, किशोरीलाल गोस्वामी के **'तिलस्मी शीशमहल'** आदिउपन्यास प्रमुख है।

जासूसी उपन्यासों का प्रवर्तन गोपालराम गहमरी ने किया। इनके **'सरकटी लाश'**, **'चक्करदार चोरी'**, **'जासूस की भूल'**, **'जासूस पर जासूसी'**, **'गुप्त भेद'**आदि प्रमुख जासूसी उपन्यास है।

ऐतिहासिक उपन्यासकारों में किशोरीलाल गोस्वामी इस युग के सशक्त उपन्यासकार है। इनके **'तारा'**, **'सुल्ताना रजिया बेगम'**, **'मल्लिकादेवी'**और **'लखनऊ की कब्र'**आदि प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यास है।

सामाजिक उपन्यासकारों में लज्जाराम शर्मा, किशोरीलाल गोस्वामी, अयोध्यासिंह उपाध्याय आदि उल्लेखनीय है। लज्जाराम शर्मा के **'आदर्श दम्पत्ति'**, **'सती सुखदेवी'**, **'आदर्श हिन्दू'**, किशोरीलाल गोस्वामी के **'आदर्श सती'**, **'नव्य समाज'**, **'सौतिया डाह'**,अयोध्यासिंह उपाध्याय के **'अधखिला फूल'**, **'ठेठ हिन्दी का ठाठ'**आदि प्रमुख सामाजिक उपन्यास हैं।

प्रश्न –5 हिन्दी कहानी का जन्म एवं विकास किस युग में हुआ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–हिन्दी कहानी का जन्म 1900 ई. के लगभग द्विवेदी युग में हुआ। **'सरस्वती'** पत्रिका के प्रकाशन (1900 ई.)के साथ ही हिन्दी कहानी का विकास हुआ। किशोरीलाल गोस्वामी की **इन्दूमती(1900)**,भगवानदीन की **प्लेग की चुड़ैल(1902)**तथा रामचन्द्र शुक्ल की **ग्यारह वर्ष का समय(1903)**और बंग महिला की **दुलाई वाली(1907)**में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई। मुंशी प्रेमचन्द की **सौत(1915), पंच परमेश्वर(1916), ईश्वरीय न्याय व दुर्गा का मन्दिर(1917)** कहानीयाँ सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई। इसी युग में वृन्दावन लाल वर्मा, जयशंकर प्रसाद, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', ज्वालादत्त शर्मा, पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी आदि कहानीकार प्रकाश में हुआ। इस प्रकार द्विवेदी युग में ही कहानी का जन्म तथा पूर्ण विकास हुआ।

प्रश्न –6 द्विवेदी युग में निबन्ध–विधा के विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए?

उत्तर–इस युग के निबन्ध लेखकों में महावीर प्रसाद द्विवेदी, गोविन्दनारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, माधवप्रसाद मिश्र, मिश्र बन्धु, सरदार पूर्णसिंह, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', श्यामसुन्दर दास, पद्मसिंह शर्मा, रामचन्द्र शुक्ल आदि उल्लेखनीय है।

महावीर प्रसाद द्विवेदी के **'म्युनिसिपैलिटी कारनामे'**, **'आत्मनिवेदन'**, **'प्रभात'**, **'सुतापराधे जनकस्य दण्ड'**, बालमुकुन्द गुप्त का**'शिवशम्भु का चिट्ठा'**,माधवप्रसाद मिश्र का निबन्ध संग्रह **'पुष्पांजलि'** आदि उल्लेखनीय है।

सरदार पूर्णसिंह इस युग के श्रेष्ठ निबन्धकार है। इनके **'आचरण की सभ्यता'**, **'सच्ची वीरता'**, **'मजदूरी और प्रेम'**, **'पवित्रता'**और **'कन्यादान'** श्रेष्ठ निबन्ध है। चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' के **'कछुआ धरम'** और **'मारेसि मोहिं कुंठाव'** बहुचर्चित निबन्ध है।रामचन्द्र शुक्ल के श्रेष्ठ मनोवैज्ञानिक निबन्ध **'भय और क्रोध'**, **'ईर्ष्या'**, **'घृणा'**, **'उत्साह'**, **'श्रद्धा–भक्ति'**, **'करुणा'**, **'लज्जा और ग्लानि'** तथा **'लोभ और प्रीति'** आदि द्विवेदी युग में प्रकाशित हुए।

छायावाद

प्रश्न 1. छायावाद का तात्पर्य एवं अर्थ संक्षेप में लिखिए?

उतर – छायावाद का तात्पर्य एवं अर्थ को लेकर विद्वानो ने अपने अपने विचार व्यक्त किये हैं यथा–

डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार, " परमात्मा की छाया आत्मा में, आत्मा की छाया परमात्मा में पडने लगती है, तभी छायावाद की सृष्टि होती है।"

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार, " छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह हैं।"

जयशंकर प्रसाद के अनुसार, " जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया।"

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मतानुसार, " छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थो में समझना चाहिए, एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहा उसका सम्बन्ध काव्यवस्तु से होता है तथा छायावाद का दूसरा प्रयोग काव्य–शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है।"

इस प्रकार विद्वानो ने छायावताद का जो अर्थ एवं आशय व्यक्त किया, उससे इसका सम्बन्ध जीवन के प्रति विशेष भावात्मक दृष्टिकोण से है।

प्रश्न 2. छायावाद का प्रवर्तक किसे माना जाना चाहिए?स्पष्ट कीजिए।

उतर – छायावाद के प्रवर्तक के बारे में विभिन्न विद्वानो के मत–

आचार्य रामचन्द्र शुक्लजी – छायावाद के प्रवर्तन का श्रेय मुकुटधर पांडेय व मैथिलीशरण गुप्त को देते है। **डॉ. गणपतिचन्द गुप्त और इलाचन्द जोशी** जयशंकर प्रसाद को छायावाद का प्रवर्तक मानते है। **नन्द दुलारे वाजपेयी** ने सुमित्रानन्दन पंत को छायावाद का प्रवर्तक माना है। **प्रभाकर माचवे एवं विनय मोहन शर्मा** माखनलाल चतुर्वेदी को छायावाद का प्रवर्तक बताते है। प्रसाद का 'कानन कुसुम ' और उसमें संगृहित छायावादी ढंग की रचना 'झरना' 1918 ई. प्रकाशित हो चुकी थी। **अतः सर्वसम्मति से छायावाद का प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद को माना जाता है।**

प्रश्न 3. छायावाद के नामकरण के बारे में विचार कीजिए?

उतर – छायावाद के छाया शब्द का छायावादी काव्य के स्वरूप और लक्षणों या विशेषताओ से कोई सम्बन्ध नहीं है। **आ. शुक्ल** ने कहा है कि बँगला में प्रतीकात्मक अध्यात्मवादी रचनाओ को छायावादी कहा जाता था। उसके अनुकरण पर हिन्दी में रची जाने वाली रचनाओ के लिए छायावाद नाम चल पड़ा। **हजारी प्रसाद द्विवेदी** का कहना है कि बँगला में यह नाम कभी नही रहा। **जयशंकर प्रसाद** का कथन है कि छाया मोती की आभा को कहते हैं, जो कि लावण्य–युक्त वस्तु की सूचक है। सबसे पहले **मुकुटधर पांडेय** ने स्वच्छन्दतावादी नयी अभिव्यक्ति युक्त रचनाओ को व्यंग्य रूप में छायावाद शब्द का प्रयोग किया था और यही नाम बाद में रूढ़ हो गया। छायावादी कवियो को भी यह नाम समुचित जान पड़ा।

प्रश्न 4. छायावादी काव्य का उद्भव कब हुआ?स्पष्ट कीजिए।

उतर – छायावादी काव्य का हल्का –सा रूप द्विवेदी युग के कवि श्रीधर पाठक की कविताओ में दिखाई पड़ा था। इस आधार पर कुछ विद्वानों ने श्रीधर पाठक को ही छायावादी काव्य

CBEOBHINDER

का प्रवर्तक माना है। सन् 1918 से कविता–रचना में एक नयी पद्धति अपनायी जाने लगी थी। जयशंकर प्रसाद का 'झरना' (सन् 1918) तथा सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की 'जुही की कली' कविता इसी में सामने आयी। पन्त की 'पल्लव' की कुछ कविताएँ भी सन् 1920 के आसपास प्रकाश में आयी। अतः इसी समय छायावादी कविता का निश्चित स्वरूप एवं प्रवृतियाँ कविताओं में उभरने लगी थी। इस आधार पर छायावाद का उद्भव सन् 1918 से ही मानना तर्कसंगत है।

प्रश्न 5. छायावादी काल में एकांकी लेखन पर टिप्पणी लिखिए?

उतर – आधुनिक हिन्दी साहित्य में एकांकी लेखन का प्रचलन छायावादी काल में ही हुआ। महेश्चन्द्र प्रसाद का '**भारतेश्वर का सन्देश**', देवीप्रसाद गुप्त का **'उपाधि और व्याधि'**, रूपनारायण पाण्डेय का **'प्रायश्चित्त प्रहसन**' सन् 1923 तक रचे गये थे, जो कि पुरानी शैली के थे। सन् 1930 में डॉ. रामकुमार वर्मा का **'बादल की मृत्यु'** तत्पश्चात् भुवनेश्वर प्रसाद का **'कारवाँ'** विशेष उल्लेखनीय एकांकी है। अन्य एकांकीकारो में गंगा प्रसाद द्विवेदी, उदयशंकर भट्ट, सेठ गोविन्ददास, जगदीशचन्द्र माथुर तथा भगवतीचरण वर्मा के नाम उल्लेखनीय है। इस तरह इस काल में हिन्दी में एकांकी लेखन को नयी दिशा प्राप्त हुई।

प्रश्न 6. छायावाद की प्रमुख विशेषताओ का उल्लेख कीजिए?

उतर – छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ ये है–

(1) दुःख और वेदना की अभिव्यक्ति, (2) मानव–गौरव तथा व्यक्तिवाद का स्वर, (3)स्वानुभूति की तीव्रता और सूक्ष्मता, (4) प्रकृति के प्रति नया दृष्टिकोण, (5) आन्तरिक भावो की अधिक अभिव्यंजना, (6) भाषा की अधिक अर्थव्यंजकता, (7) अलंकार, छन्द, भाषा आदि शिल्प पक्ष के क्षेत्र में नये सार्थक प्रयोग,(8) नारी का उदात्त रूप में चित्रण (9)काव्य में कल्पनाशीलता की प्रचुरता।

प्रश्न 7. छायावाद के प्रमुख कवियो का परिचय दीजिए?

उतर – छायावाद के प्रमुख चार कवि हैं– जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पन्त तथा महादेवी वर्मा। **इन्हे छायावाद के प्रमुख स्तम्भ माना जाता है।** जयशंकर प्रसाद की **'कामायनी', 'झरना', 'आँसू' तथा 'लहर'**, निराला की **'जुही की कली', 'अनामिका', 'परिमल'** और **'गीतिका'**, पन्त की **'उच्छवास', 'ग्रंथि', 'वीणा', 'पल्लव'** और '**गुंजन**' तथा महादेवी वर्मा की **'निहार', 'रश्मि', 'निरजा' व 'सांध्यगीत**' रचनाएँ छायावादी काव्य की विशिष्ट कृतियाँ है। छायावाद के अन्य कवियो में माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', भगवतीचरण वर्मा, रामकुमार वर्मा, मोहनलाल महतो, गोपालसिंह, केदारनाथ मिश्र तथा हरिवंशराय बच्चन आदि।

प्रश्न 8. उतर छायावाद युग की प्रमुख राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक रचनाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए?

उतर – छायावाद के बाद के युग में लिखी गयी कविताओं का एक बड़ा वर्ग राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा का है। इस धारा की प्रमुख रचनाओं एवं रचनाकारों का विवरण इस प्रकार है– मैथिलीशरण गुप्त की 'जय भारत', 'नहुष' तथा 'कुणाल गीत', रामधारी सिंह दिनकर की 'हुंकार', 'कुरूक्षेत्र', 'इतिहास के आँसू' तथा 'रश्मिरथी', श्यामनारायण पाण्डेय की 'हल्दीघाटी' तथा 'जौहर' तथा माखनलाल चतुर्वेदी की 'माता', 'समर्पण' एवं 'युग चरण' आदि रचनाएँ उतर छायावादी काव्य की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक काव्यधारा की विशिष्ट कृतियाँ है। यद्यपि

CEO BHINDER

इस धारा के रचनाकार 'छायावाद काल' से ही लिखते आ रहे थे, तथापि उनके रचनाकर्म का अधिकांश भाग 'उतर छायावादी' युग में ही सृजित हुआ।

प्रश्न 9 छायावाद काल में प्रेमचन्द के समकालीन उपन्यासकारों के कृतित्व का परिचय दीजिए?

उतर – प्रेमचन्द के समकालीन उपन्यासकारों की संख्या ढाई सौ से अधिक है। विश्वंभर नाथ शर्मा 'कौशिक' ने 'माँ' और 'भिखारिणी' लिखकर प्रेमचन्द का सफल अनुकरण किया। चतुरसेन शास्त्री ने आलोच्य अवधि में 'ह्रदय की परख', ह्रदय की प्यास', 'अमर अभिलाषा' और 'आत्मदाह' शीर्षक उपन्यासो की रचना की। प्रेमचन्द के समकालीन उपन्यासकारों में जयशंकर प्रसाद भी उल्लेखनीय है। इन्होनें 'कंकाल' और 'तितली' उपन्यासों की रचना की।

प्रश्न 10. प्रगतिवादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ एवं प्रवृतियाँ बताइये?

उतर – प्रगतिवादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ ये है –

1. साम्राज्यवाद, सामन्तवाद, पूँजीवाद आदि के प्रति विद्रोह।
2. शोषितों, दलितों, पीड़ितों व सर्वहारा के प्रति सहानुभूति।
3. अन्धविश्वासो एवं रूढ़ियो का खण्डन पुरजोर किया गया है।
4. प्रगतिवादी कवि वायवी एवं आकाशचारी न होकर धरती से जुड़ने एवं जन–सामान्य की समस्याओ से जुझने का स्वर व्यक्त करते रहे।
5. प्रगतिवादी कवियों ने वर्ग विहीन समतामूलक समाज के सपने सामने रखे।
6. प्रगतिवादी कवि बिना आडम्बर के अपनी बात सीधी–सरल भाषा में व्यक्त करते रहे।
7. प्रगतिवादी काव्य में शोषित और शोषक वर्ग की अवधारणा व्यक्त की गई हैं।

प्रश्न 11. प्रगतिवादी के प्रमुख कवि और उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए?

उतर – प्रगतिवादी के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ इस प्रकार है – सुमित्रानंदन पन्त की 'युगवाणी' एवं 'ग्राम्या', सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की 'कुकुरमुत्ता' केदारनाथ अग्रवाल की 'युग की गंगा', नागार्जुन की 'युग धारा', त्रिलोचन की 'धरती', शिवमंगल सिंह सुमन की 'जीवन के गान', प्रलय सृजन', तथा रांघेय राघव की 'अजेय खंडहर', 'पिघलते पत्थर' तथा 'मेधावी' आदि।

प्रश्न 12.. प्रगतिवादी साहित्य की पृष्ठभूमि का संक्षेप में परिचय दीजिए?

उतर – छायावाद की वायवी प्रवृति के साथ समाज में व्याप्त गरीबी, अशिक्षा, शोषण, विषमता का घोर प्रभाव और पूँजीवाद व सामन्तवाद की शोषक नीतियाँ आदि प्रगतिवाद के उन्मेष की पृष्ठभूमि बनी। उस समय साम्यवादी दर्शन और सामाजिक चेतना एवं भावबोध को प्रगतिवाद ने अपना लक्ष्य बनाया। फलस्वरूप शोषित–पीड़ित जनता के पक्ष मे एक नवीन समस्या एवं नवीन चेतना का आलोक प्रगति के रूप में उभरने लगा। ये सब स्थितियाँ ही प्रगतिवादी साहित्य की पृष्ठभूमि बनीं और प्रगतिवादी काव्य–परम्परा का प्रवर्तन हुआ।

प्रयोगवाद प्रश्न बैंक

प्रश्न 1– प्रयोगवाद का जनक कौन है?

(अ) अज्ञेय (ब) जयशंकर प्रसाद (स) मुक्तिबोध (द) गिरिजा कुमार माथुर (अ)

प्रश्न 2 – अज्ञेय ने कुल कितने तारसप्तकों का संपादन किया था ?

(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) 4 (स)

CBEO BHINDER

प्रश्न 3 – प्रत्येक तारसप्तक में कितने कवियों को शामिल किया गया है?
अ) 3 (ब) 5 (स) 10 (द) 7 (द)

प्रश्न 4– प्रयोगवाद का संक्षिप्त परिचय देते हुए इसके प्रवर्तक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रयोगवाद का प्रारंभ सन 1943 में अज्ञेय द्वारा संपादित तारसप्तक के प्रकाशन से माना जाता है। जो कविताएं नए बोध, संवेदनाओं तथा शिल्पगत चमत्कारों के साथ सामने आई उन कविताओं के लिए प्रयोगवाद शब्द रूढ़ हो गया । प्रयोगवाद शब्द सर्वप्रथम आचार्य नंद दुलारे वाजपेई ने दिया था जबकि प्रयोगवाद के प्रवर्तक सच्चिदानंद हीतानंद वात्स्यायन अज्ञेय है।

प्रश्न 5– (तारसप्तक)प्रथम तारसप्तक और उसके प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए।
उत्तर – प्रथम तारसप्तक का प्रकाशन अज्ञेय द्वारा 1943 में किया गया जिसमें 7 कवियों को शामिल किया गया जिन्हें राहों का अन्वेषी कहा गया प्रथम तारसप्तक के कवि नेमिचन्द जैन,गजानन माधव मक्तिबोध,भारतभूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे,गिरिजा कुमार माथुर,रामविलास शर्मा और अज्ञेय है।
प्रश्न 6– द्वितीय तारसप्तक और उसके प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए।
उत्तर – द्वितीय तारसप्तक का प्रकाशन अज्ञेय द्वारा 1951 में किया गया जिसमें 7 कवियों को शामिल किया गया जिन्हें राहों का अन्वेषी कहा गया द्वितीय तारसप्तक के कवि भवानी प्रसाद मिश्र,शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय, और धर्मवीर भारती।

प्रश्न 7– तीसरा तारसप्तक और उसके प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए।
उत्तर – तीसरा तारसप्तक का प्रकाशन अज्ञेय द्वारा 1959 में किया गया जिसमें 7 कवियों को शामिल किया गया जिन्हें राहों का अन्वेषी कहा गया तीसरे तारसप्तक के कवि प्रयाग नारायण त्रिपाठी,कुंवर नारायण, कीर्ति चौधरी,केदारनाथ सिंह, मदन वात्स्यायन, विजयदेव नारायण साही, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना। (नोट– प्रश्न 5, 6, 7 से मिलकर एक निबंधात्मक प्रश्न प्रयोगवाद एवं तारसप्तकों व उनके कवियों का परिचय दीजिए बनता है।)
प्रश्न 8–प्रयोगवादी काव्य (नई कविता)की प्रमुख प्रवृत्तियां एवं विशेषताएं बताइएं।
उत्तर –(1) जीवन के प्रति आस्था (2)नवीनता (3) बौद्धिकता (4)अतिशय वैयक्तिकता (5)क्षणवादिता (6)भोग एवं वासना (7) यथार्थवादिता (8)आधुनिक युग बोध (9) प्रणयानुभूति (10)लोक संस्कृति (11)नया शिल्प विधान (बिंदुवार विस्तृत विवरण देने पर यह निबंधात्मक प्रश्न बनेगा)

प्रश्न 9–'प्रयोगवादी कवि यथार्थवादी है' इस कथन पर प्रकाश डालिए।
उत्तर– प्रयोगवादी कवि यथार्थवादी हैं। वे भावुकता के स्थान पर ठोस बौद्धिकता को स्वीकार करते है। वे कवि मध्यवर्गीय व्यक्ति के जीवन की समस्त जड़ता, कुण्ठा, अनास्था, पराजय और मानसिक संधर्ष के साथ सत्य को बड़ी बौद्धिकता के साथ उद्‌घाटित करते है। लघू मानव को उसकी समस्त हीनता और महत्ता के संदर्भ में प्रस्तुत करके प्रयोगवादी कविता ने उसके प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से सोचने के लिए एक नया रास्ता खोला।

प्रश्न 10–प्रयोगवाद और नई कविता में अन्तर बताइए।
उत्तर– प्रयोगवाद का विकास ही कालान्तर में नई कविता के रूप में हुआ । वस्तुतः प्रयोगवाद और नई कविता में कोई सीमा रेखा नहीं खींची जा सकती। ये दोनों एक ही काव्यधारा के विकास की दो अवस्थाएं हैं। सन् 1943 से 1953 तक की कविताओं में जो नवीन प्रयोग हुए नई कविता उन्हीं का परिणाम है। 1943 से 1953 तक की कविता को प्रयोगवादी एवं बाद 1953 के बाद की कविता को नई कविता की संज्ञा दी जा सकती है। इस प्रकार प्रयोगवाद उस काव्यधारा की आरम्भिक अवस्था है जबकि नई कविता उसकी विकसित अवस्था।

CEO BHINDER

प्रश्न 11– प्रयोगवाद एवं नई कविता के प्रमुख कवि अज्ञेय का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
उत्तर– सच्चिदानंद हीरानंद वास्यायन अज्ञेय का जन्म 1911 ई. को ग्राम कसया (देवरिया) उत्तर प्रदेश में हुआ। इनका जीवन यायावरी और क्रांतिकारी रहा । उन्होंने 'दिनमान' ओर 'प्रतीक' का कुशलतापूर्वक संपादन किया। तार सप्तक, दूसरा तारसप्तक, तीसरा तारसप्तक और रूपाम्बरा इनके काव्य संकलन है। इनकी काव्य कृतियां है– हरी घास पर क्षण भर,बावरा अहेरी, इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये, आंगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार, महावृक्ष के नीचे, असाध्य वीणा, इत्यलम आदि।

प्रश्न 12– प्रयोगवाद एवं नई कविता के प्रमुख कवि गिरिजा कुमार माथुर का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
उत्तर – गिरिजा कुमार माथुर का जन्म मध्यप्रदेश में 1919 में हुआ। माथुर में प्रयोग और संवेदना का बहुत सुंदर सामंजस्य है। कवि की प्रमुख कृतियां है– मंजीर, नाश और निर्माण, धूप के धान, भीतरी नदी की यात्रा, शिलापंख चमकीले, छाया मत छुना मन आदि।

प्रश्न 13– प्रयोगवाद एवं नई कविता के प्रमुख कवि गजानन माधव मुक्तिबोध का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
उत्तर – मुक्तिबोध का जन्म 1917 ई. में ग्वालियर में हुआ। आपका अनुभव जगत बहुत व्यापक है नई कविता के अग्रज कवि सच्चे अर्थो में मुक्तिबोध ही है। आपकी काव्य रचनाएं– चांद का मुह टेड़ा है, भूरी –भूरी खाक धूल।

प्रश्न 14– प्रयोगवाद एवं नई कविता के प्रमुख कवि शमशेर बहादुर सिंह का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
उत्तर – शेमशेर बहादुर का जन्म 1911 में देहरादून में हुआ। ये व्यक्तिवादी और रूमानी कवि है। उनकी अधिकांश कविताओं का स्वर कुंठित प्रेम का है। इनकी रचनाएं– चूका भी हूं मैं, इतने पास अपने, काल तूझसे होड़ है मेरी, बात बोलेगी।

प्रश्न 15– प्रयोगवाद एवं नई कविता के प्रमुख कवि धर्मवीर भारती का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
उत्तर – भारती का जन्म 1926 में इलाहाबाद में हुआ। ये धर्मयुग पत्रिका के संपादक रहे। भारती जी में आदिम गन्ध की तड़प और लोक – जीवन की रूमानी छवि की पकड़ है। इसलिए इनकी कविताएं गीतात्मक है। इनकी कविताओं में लोक–परिवेश की मस्ती और उल्लास के स्थान पर उदासी और सूनापन ही अधिक उभरता है। इनकी कृतियां है– अन्धायुग,कनुप्रिया,सात गीत वर्ष, ठंडा लोहा,देशान्तर।

(नोट– प्रश्न संख्या 11से 15 को मिलाकर निबंधात्मक प्रश्न प्रयोगवाद और नई कविता के प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए बनता है।)

नई कविता

(प्रश्न बैंक निर्माण)

1. नई कविता का आरम्भ कब से माना जाता है ?
(अ)1943 **(ब)** 1947 **(स)** 1950 **(द)** 1953 **(द)**

2. प्रयोगवाद के उत्तरोतर विकास काल को किस नाम से जाना जाता है?
(अ) प्रगतिवाद **(ब)**छायावाद**(स)**नई कविता**(द)** कोई नहीं **(स)**

3. निम्न में से नई कविता की विशेषता है–
(अ) जीवन के प्रति आस्था
(ब) अनुभूति की सच्चाई
(स)लोक–सम्पृक्ति
(द)उपर्युक्त सभी

(द)

4. सन् 1960 के बाद की कविता को किस नाम से जाना जाता है?
(अ)प्रगतिवादी **(ब)** छायावादी
(स) प्रयोगवादी **(द)**समकालीन कविता/साठोतरी कविता **(द)**
5. नई कविता की आरम्भिक अवस्था को किस नाम से जाना जाता है?
(अ) प्रयोगवाद **(ब)** छायावाद **(स)** रीतिकाल **(द)** कोई नहीं **(अ)**
6. टोपी शुक्ला किसकी कृति है?
(अ) राही मासूम रजा **(ब)** अज्ञेय **(स)** जैनेन्द्र **(द)** धर्मवीर भारती **(अ)**
7. झूठा सच का प्रकाशन वर्ष–
(अ)सन् 1960 **(ब)** सन् 1961 **(स)** सन् 1965 **(द)** सन् 1964 **(अ)**
8. लखनउ मेरा लखनउ के लेखक इनमें कौन है?
(अ)रामदरश मिश्र **(ब)**अमृतलाल नागर
(स)मनोहर श्याम जोशी **(द)**भगवतीचरण वर्मा **(अ)**
9. हिन्दी का सांस्कृतिक उपन्यासकार इनमें से कौन हैं?
(अ) अज्ञेय **(ब)** धर्मवीर भारती
(स) हजारीप्रसाद द्विवेदी **(द)** जयशंकर प्रसाद **(स)**
10. राई और पर्वत उपन्यास के लेखक हैं–
(अ) गिरधर प्रसाद **(ब)** गिरधर गोपाल **(स)** रांगेय राघव **(द)** नरेन्द्र कोहली **(ब)**
11. इनमें से कौन–सा उपन्यास इलाचन्द्र जोशी का नहीं है?
(अ) जहाज का पंछी **(ब)** पर्दे की रानी **(स)** व्यतीत **(द)** ऋतुचक्र **(स)**

12. गणेश शंकर विद्यार्थी किस युग के निबन्धकार हैं?
(अ)भारतेन्दु युग **(ब)** द्विवेदी युग **(स)** शुक्ल युग **(द)** शुक्लोत्तर युग **(स)**

13. विद्यानिवास मिश्र का निबन्ध संग्रह तुम चन्दन हम पानी कब प्रकाशित हुआ?
(अ) 1953 ई. **(ब)** 1957 ई. **(स)**1960 ई. **(द)** 1965 ई. **(ब)**

14. इतिहास और संस्कृति की पृष्ठभूमि में लिखने वाला निबन्धकार इनमें से कौन है?
(अ) भगवतशरण उपाध्याय **(ब)** रामवृक्ष बेनीपुरी
(स) हजारीप्रसाद द्विवेदी **(द)** कुबेरनाथ राय **(स)**
15. चीड़ों पर चाँदनी के रचनाकार कौन हैं?
(अ) यशपाल **(ब)** डॉ. रघुवंश **(स)** निर्मल शर्मा **(द)** डॉ. नगेन्द्र **(स)**

16. निम्नलिखित में कौन सुमेलित नहीं हैं–
1. सचेतन कहानी (अ) महीप सिंह
2. साठोतरी कहानी (ब)निर्मल वर्मा
3. समानान्तर कहानी (स)कमलेश्वर
4. समकालीन कहानी (द)गंगाप्रसाद विमल
(अ) 1 (ब) 2 (स) 3 (द) कोई नहीं (सभी सुमेलित हैं) (द)

17.. नई कविता के प्रमुख कवियों के नाम बताइए–
उत्तर– सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय , गिरिजा कुमार माथुर, गजानन माधव मुक्तिबोध, भवानीप्रसाद मिश्र, शमशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती आदि।

CBEO BHINDER

18. 1950 के बाद कौन–कौनसे प्रमुख कहानी आन्दोलन चले?
उत्तर– नई कहानी आन्दोलन, सचेतन कहानी आन्दोलन, अकहानी आन्दोलन, साठोतरी कहानी आन्दोलन आदि।

19. छायावादोत्तर प्रमुख निबन्धकारों के नाम बताइए–
उत्तर– नन्ददूलारे वाजपेयी, हजारीप्रसाद द्विवेदी, ज्ञानेन्द्र कुमार, रामधारी सिंह दिनकर, अज्ञेय, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि प्रमुख हैं।

20. छायावादोत्तर प्रमुख उपन्यासकारों के नाम बताइए–
उत्तर– जैनेन्द्र कुमार, अज्ञेय, यशपाल, अमृतलाल नागर, फणीश्वर नाथ रेणू, धर्मवीर भारती, श्री लाल शुक्ल आदि प्रमुख हैं।

21. छायावादोत्तर प्रमुख नाटककारों के नाम बताइए–
उत्तर– उपेन्द्रनाथ अश्क, विष्णुप्रभाकर, मोहन राकेश, हरिकृष्ण प्रेमी, जगदीशचन्द्र माथुर आदि प्रमुख हैं।

22. हिन्दी गद्य की नवीन विधाएं कौन–कौनसी हैं?
उत्तर– जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्तान्त, संस्मरण, रेखाचित्र, डायरी, साक्षात्कार, फीचर आदि।

23. समकालीन कहानीयों में प्रमुख महिला कहानीकारों के नाम बताइए–
उत्तर– उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, ममता कालिया आदि।

24. सचेतन कहानी पर टिप्पणी लिखिए–
उत्तर– सन् 1964 के आस–पास महीप सिंह के द्वारा इसका प्रवर्तन किया गया। सचेतन कहानी में वैचारिकता को विशेष महत्व दिया गया है।

25. अकहानी आन्दोलन पर टिप्पणी लिखिए–
उत्तर– निर्मल वर्मा को इस कहानी आन्दोलन का प्रवर्तक माना गया है। 1960 के लगभग कुछ ऐसे कथाकार सामने आये जिन्होंने कहानी के स्वीकृत मूल्यों के प्रति निषेध व्यक्त करते हुए अपने स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा की। इस अकहानी आन्दोलन के नाम से जाना जाता है।

26. समानान्तर कहानी आन्दोलन का परिचय दीजिए–
उत्तर– इस आन्दोलन के सूत्रधार कमलेश्वर हैं, जिन्होंने 1971 के लगभग समानान्तर कहानी का प्रवर्तन किया। इस काल की कहानियों में निम्न वर्गीय समाज की स्थितियों विषमताओं एवं समस्याओं का खुलकर चित्रण हुआ। सारिका पत्रिका ने इसमें महत्वपूर्ण योगदान दिया।

27. समकालीन कहानी पर टिप्पणी लिखिए–
उत्तर– समकालीन कहानी जिसे नई कहानी भी कहा गया है। इस काल की कहानियों में नगर बोध की प्रवृत्ति प्रमुखता से व्यक्त हुई है। आज के नगरीय जीवन में पाई जाने वाली सतही सहानुभूति आन्तरिक ईर्ष्या, स्वार्थपरता, जीवन की कृत्रिमता आदि की अभिव्यक्ति प्रमुख रूप से हुई है। इस काल की कहानियों में महिला कहानीकारों का स्थान भी प्रमुख रहा हैं, जिन्होंने प्रेम और विवाह के कटु–मधुर सम्बन्धों का चित्रण बखूबी किया है।

28. छायावादोत्तर कालीन नाटकों को कितनी श्रेणियों में बॉटा गया हैं?
उत्तर– छायावादोत्तर काल की नाट्य कृतियों को मोटे रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया हैं–1. आजाद भारत में व्याप्त भ्रष्टाचार से सम्बन्धित नाटक

2. पीढ़ीगत संघर्षों व नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित नाटक
3. चीनी आक्रमण से सम्बन्धित नाटक

29. नई कविता की प्रमुख विशेषताएँ बताइए–
उत्तर– नई कविताओं में नवीनता, बौद्विकता, अतिशय वैयक्तिकता, भोग एवं वासना, यथार्थवादिता, आधुनिक युग बोध, प्रणयानुभूति, लोक संस्कृति, नया शिल्प विधान आदि विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं।

CBEOBHINDER

30. नई कविता का सूत्रपात कब से माना जाता है?
उत्तर– यह सर्वमान्य है कि प्रयोगवाद का उत्तरोतर विकास ही कालान्तर में नई कविता के नाम से जाना गया, परन्तु सन् 1954 में डॉ. जगदीश गुप्त और डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के सम्पादकत्व में नई कविता नाम से एक पत्रिका का प्रकाशन हुआ, जिससे नई कविता काव्यधारा का सूत्रपात माना जाता है। अतः प्रयोगवाद का परिष्कृत रूप ही नई कविता है।
31. समकालीन हिन्दी निबन्ध विधा पर प्रकाश डालिए–
उत्तर– समकालीन हिन्दी निबन्ध प्रधान विधा के रूप में गतिशील हैं। वर्तमान में अनेकानेक विषयों को लेकर निबन्ध लिखे जा रहे हैं। जैसे– मनोवैज्ञानिक ,हास्य–व्यंगय, विवरणात्मक, समीक्षात्मक, बौद्विक आदि विशेषताओं से युक्त निबन्ध आदि। इस काल के प्रमुख निबन्धकारों में गजानन्द माधवमुक्ति बोध, रामविलास शर्मा, शरद जोशी, हरीशंकर परसाई आदि प्रमुख निबन्धकार हैं।

32. आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी ने निबन्ध के विषय में क्या विचार दिये–
उत्तर– आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के अनुसार असम्पूर्णत का विचार न करने वाला गद्य रचना का वह प्रकार जिसमें स्वानुभूति की प्रधानता हो, विषय निरूपण में स्वतंत्रता हो, जिसमें लेखक का व्यक्तित्व पूर्ण रूप से प्रतिबिम्बित हो, जिसकी शैली मौलिक तथा साहित्य कोटि की हो, निबंध कहलाएगा।
33. समकालीन उपन्यास की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए–
उत्तर– समकालीन दौर के उपन्यास लेखन में अधिकांशतः व्यक्ति केन्द्रित है। फिर भी समाज की तात्कालिक हालत को भी बखूबी सामने लाया गया है। इसकी प्रमुख विशेषताओं में पारिवारिक विघटन तनाव एवं भौतिकतावादी दौड़ के साथ ही ग्रामीण हलचल की बदलती हुई परिस्थितियों को लेकर पर्याप्त लेखन हुआ है। इस काल के उपन्यासों में मूल्यहीनता, अराजकता, भष्टाचार, यौन हिन्सा, आर्थिक विषमता आदि को कथानक के रूप में विशेष स्थान मिला है।
34. समकालीन नाटक विधा पर टिप्पणी लिखिए–
उत्तर– सन् 1960 में अन्य विधाओं की तुलना में नाटक कम ही लिखे गए। लेकिन फिर भी इस काल में मोहन राकेश जैसे प्रमुख नाटककार हुए, जिन्होंने जीवन की असंगतियों, तनावों एवं अंर्तविरोधों को नए ढंग से चित्रित करने का प्रयास किया। इसके अलावा कुछ नाटककारों ने पौराणिक कथाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति की अस्मिता की खोज का भी प्रयास इस काल में किया। इस काल के नाटकों में सिद्धान्तहीनता, अवसरवादिता एवम् बौद्धिक दिवालीपन का जिक्र बखूबी हुआ है। इस काल के प्रमुख नाटककारों में मोहन राकेश के अलावा भीष्म सहानी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, नरेन्द्र कोहली आदि प्रमुख हैं।
35. छायावादोत्तर कालीन आत्मकथा का परिचय दिजिए–
उत्तर– इस काल में आत्मकथा विधा का काफी विकास हुआ। इस काल के सभी प्रमुख साहित्यकारों के द्वारा अपनी आत्मकथाएं लिखी गयी। जिसके द्वारा तत्कालीन समाज तथा अनेकानेक व्यक्तियों के पारिवारिक एवम् सामाजिक जीवन का परिचय हमें मिलता है। प्रमुख आत्मकथाकारों में हरिवंशराय बच्चन, बाबूगुलाब राय, सेठ गोविन्ददास, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, राहुल सांकृत्यायन आदि प्रमुख हैं

”गद्य की विधाओं में अन्तर “

प्रश्न :–1 रेखाचित्र किसे कहते हैं?

उत्तर :– साहित्य की जिस गद्य विधा में किसी वस्तु या व्यक्ति विषेश के भीतरी–बाहरी रुप का इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि उसका एक चित्र–सा उभर जाता है, उसे रेखा चित्र कहते है।

CBSEGHINDER

प्रश्न :–2 संस्मरण किसे कहते है?

उत्तर :– संस्मरण का अर्थ है – 'सम्यक स्मरण'। स्मरण का अर्थ है– किसी व्यक्ति,घटना, दृष्य,वस्तु,आदि के समग्र रुप का आत्मीयता एवं गम्भीरता से स्मरण करना।

प्रश्न :–3 रेखचित्र और संस्मरण विधा में अन्तर स्पष्ट कीजिए?

उत्तर :–

	रेखाचित्र	संस्मरण
1.	रेखाचित्र किसी व्यक्ति , वस्तु,घटना या भाव का मर्मस्पर्शी भावपूर्ण एवं सजीव अंकन है।	संस्मरण का अर्थ है – 'सम्यक स्मरण'। स्मरण का अर्थ है–किसी व्यक्ति ,घटना,दृश्य,वस्तु,आदि के समग्र रुप का आत्मीयता एवं गम्भीरता से स्मरण किया जाता है।
2	रेखाचित्र व्यक्तियों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी लिखे जाते हैं।	संस्मरण केवल व्यक्तियों पर ही लिखे जाते हैं।
3	रेखाचित्र सामान्य व्यक्ति का भी हो सकता है।	संस्मरण प्रसिद्ध व्यक्तियों पर ही लिखे जातें है।
4	रेखाचित्र में कल्पना का प्रयोग अधिक होता है।	संस्मरण में लेखक अनुभूत स्मृतियों को ही संजोता है।
5	रेखाचित्र में 'विषय' के साथ लेखक का हृदयगत लगाव नहीं होता है।	संस्मरण में लेखक का लगाव इतना बढ़ जाता है कि लेखक स्वयं भी उसका एक पात्र बन जाता है।

प्रश्न :–4 निबन्ध और लेख में अन्तर बताइये?

उत्तर :–सामान्यतः गद्य में लिखित किसी भी रचना को लेख कह सकते है। किन्तु विशिष्टअर्थ में लेख गद्य रचनाके लिए प्रयुक्त होने लगा है। निबन्ध एक लेख हो सकता है किन्तु सभी लेख निबन्ध नहीं हो सकते है। क्योंकि निबन्ध में लेखक के व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप परिलक्षित होना नितान्त आवश्यक है।

प्रश्न :–5 नाटक एवं एकांकी में अन्तर बताइए?

उत्तर :– नाटक एवं एकांकी में अन्तर संक्षेप में इस प्रकार से वर्णित किया जा सकता है–

(1) नाटक में एक से अधिक अंक होते हैं और एकांकी में केवल एक ही अंक होता है।

(2) नाटक में अनेक प्रासंगिक कथाएँ होती है' जबकि एकांकी में एक कथा या घटना होती है।

(3) नाटक में कथा कई स्थितियों से गुजरने के बाद अंत की ओर बढ़ती है। जबकी एकांकी में कथा आरम्भ होकर चरम की ओर जाती है।

(4) नाटक में कथा का विस्तार रहता है और एकांकी में कथा की तीव्रता ।

(5) नाटक के अभिनय में ढ़ाई–तीन घण्टे लगतें जबकि एकांकी के अभिनय में एक घण्टे से कम समय लगता है।

प्रश्न :–6 हिन्दी गद्य की निबन्ध विधा क्या है?

उत्तर :–निबन्ध, हिन्दी गद्य की पुरानी विधा है। निबन्ध का आरम्भ भारतेन्दु युग से ही माना जाता है। निबन्ध गद्य की सीमित आकार की रचना है जिसमें किसी विशय का विचारपूर्ण सुव्यवस्थित विवेचन होता है।निबन्ध भावात्मक, वर्णनात्मक, विचार–विवेचनात्मक तथा विवरणात्मक होते है।

प्रष्न :–7 हिन्दी गद्य की 'आत्मकथा' विधा क्या है?

उत्तर :–किसी लेखक द्वारा आत्मीयतापूर्वक रोचक शैली में लिखी गई अपने जीवन की कथा को आत्मकथा कहते है।

प्रश्न :–8 हिन्दी गद्य की 'जीवनी' विधा क्या है?

उत्तर :–किसी महापुरुष के जीवन की कथा जब कोई अन्य लेखक लिखता है, तो उसको जीवनी कहते है।

प्रश्न :–9 जीवनी एवं आत्मकथा विधा में अन्तर स्पष्ट कीजिए?

उत्तर :–किसी लेखक द्वारा आत्मीयतापूर्वक रोचक शैली में लिखी गई अपने जीवन की कथा को आत्मकथा कहते हैं, जबकि किसी महापुरुषके जीवन की कथा जब कोई अन्य लेखक लिखता है, तो उसको जीवनी कहते है। आत्मकथा में लेखक निः संकोच बिना दुराव– छिपाव के अपने जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है। जबकि जीवनी में लेखक उसके नायक से सम्बन्धित घटनाओं आदि का वर्णन करता है।

प्रश्न :–10 अकहानी और सचेतन कहानी में अन्तर बताइये

उत्तर :– इंलैण्ड में प्रचलित 'एण्टी स्टोरी' आन्दोलन की नकल पर 'अकहानी' लेखन का प्रचलन हुआ। अकहानी में सुनियोजित कथा–विन्यास और चरित्र–योजना का विरोध किया गया है। इसमें दैनिक जीवन की घटनाओं को बड़े सहज ढ़ंग से रखा जाता है। इसमें शिल्पहीनता बढ़ रही है। सचेतन कहानी अकहानी की विपरीत प्रवृति है। इस कहानी में निराशावादी एवं क्षणवादी दृष्टिकोण का विरोध उभरा है। इस कहानी पर 'एण्टीविज्म' अमेरिका आन्दोलन का प्रभाव पड़ा है। इसमें संवेदना की अधिकता से सामाजिक चेतना का स्वर प्रखर दिखाई देता है।

प्रश्न :–11 आत्मकथा और संस्मरण को परिभाषित करते हुए अन्तर स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर :– आत्मकथा जैसा कि नाम से स्पष्ट होता है कि यह लेखक के अपने जीवन की कथा है। इसे यों भी कहा जा सकता है कि जब कोई लेखक स्वयं अपने जीवन की कथा को पूरी ईमानदारी से क्रमवार रुप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है तो उसे आत्मकथा कहते है। जबकि संस्मरण में लेखक अपने निकट सम्पर्क में आनेवाले किसी महत्वपूर्ण विशिष्ट या प्रिय व्यक्ति अथवा घटना का यथार्थ एवं कल्पना मिश्रित तथा मूर्तरुप प्रस्तुत करता है। आत्मकथा के लेखक को स्मृतिवान, तटस्थ तथा आत्मनिरीक्षण का पारखी होना आवश्यक है। जबकि संस्मरण के लिए लेखक का संवेदनाशील, प्रभावग्राही और व्यक्ति या वस्तु के वैशिष्ट्य को लक्षित करने वाला होना अपेक्षित है।

प्रश्न :–12 रिपोर्ताज एवं डायरी को परिभाशित करते हुए अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :–रिपोर्ताज एक कलात्मक और साहित्यिक गद्य–विधा है। इसमें समसामयिक घटनाओं को उनके वास्तविक रुप में प्रस्तुत किया जाता है। 'रिपोर्ताज' लेखक का घटना से साक्षात्कार होना आवश्यक है तभी वह किसी महत्वपूर्ण घटना को पाठकों के समक्ष यथावत् प्रस्तुत कर सकता है। 'डायरी' लेखक द्वारा तिथि–विशेष में घटित घटनाक्रम का यथातथ्य रुप में तथा संक्षिप्त प्रतिक्रिया के साथ अंकित की जाने वाली, एक नवीन हिन्दी–गद्य–विधा है, जिसमें न्यूनाधिक कल्पना का मिश्रण हो जाता है। 'डायरी' मूलतः लेखक के वयक्तिगत जीवन की सत्य प्रतिलिपि होती है।

प्रश्न :–13 हिन्दी साहित्य में यात्रावृत लेखन पर टिप्पणी लिखिए ।

उत्तर :–आधुनिक काल मे सर्वप्रथम भारतेन्दुजी ने हरिद्वार, बैजनाथ, आदि के यात्रावृत लिखकर इस विधा की शुरूआत की। बाद में लेखकों ने यात्रावृत लेखन में महत्वपूर्ण योगदान दिया । देश को स्वतन्त्रता मिलने पर भारत के विश्वभर के देंशों के साथ राजनायिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित हुए। इस कारण यात्राओं का दौर चला। सेठ गोविन्ददास, पं. नेहरू, लक्ष्मीकुमारी चुंडावत, बनारसीदास चतुर्वेदी एवं विष्णु प्रभाकर ने अपने –अपने यात्रावृत लिखे।

प्रश्न :–14 रिपोर्ताज क्या है?

उत्तर :– जिस रचना में आँखों देखी तथा कानों सुनी घटनाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति होतीहै, उसे रिपोर्ताज कहते है।

प्रश्न :–15 रिपोर्ताज की विषेशताएँ लिखिए ।
उत्तर :–रिपोर्ताज की अनेक विशेषताएँ होती हैं, उनमें से प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैः–

(1)रिपोर्ताज तथ्यो के साथ–साथ भावप्रवण होता है।
(2) यथार्य के साथ कल्पनानुभूति होती है।
(3) जनजीवन का प्रभावकारी चित्रण होता है।
(4) घटना में कथातत्व रहता है।
(5) अतीत के प्रमाणों की पुष्टि की जाती है।
(6) वस्तुगत तथ्यों का प्रकाशन ऐतिहासिकता की दृष्टि से किया जाता है।
(7) मनोविश्लेषणात्मक शैली, सुबोधता एवं सरसता रहती है।

1. कबीर

1 कबीर का साहित्यिक परिचय दीजिए ?

सन्त कबीर का जन्म वक्रम संवत 1455 में काशी में हुआ था। इनका पालन नीरु और नीमा नामक जुलाहा दम्पति के यहाँ हुआ । कबीर स्वामी रामानंद को अपना गुरु मानते थे । कबीर एकेश्वरवाद में वश्वास रखते थे .120 वर्ष की आयु में बी आपने मगहर नामक स्थान पर भौतिक शरीर त्याग दिया

कबीर की रचनाओं का संग्रह बीजक नाम से प्र सद्ध है । इसके तीन भाग हैं । साखी,सबद और रमैनी ।

2. आशय स्पष्ट कीजिए ?

गुरु गो वंद तौ एक है, दूजा यहु आकार ।
आपा मेटि जी वत मरै, तौ पावै करतार ।।

<u>उत्तर</u>– गुरु की महता का वर्णन करते हुए क व कहता है क गुरु तथा ईश्वर में कोई भेद नहीं है दोनों एक ही. हैं। अज्ञानवश ही मनुष्य दोनों को अलग अलग समझता है । यदि वह अपना अहंकार त्याग दे तथा जीवन काल में ही माया मोह आदि दुर्गुणों से स्वयं को मुक्त कर ले तो उसको ईश्वर का साक्षात्कार हो सकता है ।

3. आशय स्पष्ट कीजिए ?

ज्ञान प्रकाशा गुरु मला, सों जिनि बीसरि जाइ ।
जब गो वंद क्रपा करी, तब गुरु म लया आइ ।।

<u>उत्तर</u> – कबीर कहते हैं कजब मेरे हृदय में ज्ञान का प्रकाश हुआ तभी मेरा सद्गुरु से मलन हो पाया अथवा गुरु की शरण में जाने परही मेरे हृदय में ज्ञान का प्रकाश हुआ । ऐसे कृपालु गुरु और उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान को मैं कहीं भूल न जाऊँ, इसका मुझे निरन्तर ध्यान रखना है । जब ईश्वर कृपा करते हैं तभी जीव को गुरु की प्राप्ति होती है ।

4 पार ब्रह्म के तेज का,कैसा है उन मान ।
कहिबे कूं सोभा नहीं,देख्या ही परमान ।।

<u>उत्तर</u> – कबीर कहते हैं क परमात्मा के तेजोमय स्वरूप की मनुष्य कल्पना ही कर सकता है। वह उसका अनुमान ही लगा सकता है । उसका स्वरूप अवर्णनीय है। मुझमें उसके वर्णन की सामर्थ्य नहीं है। उसका साक्षात्कार करके ही उसको जाना जा सकता है ।

CBEO BHINDER

5. चंता तौ हरि नांव की, और न चतवै दास ।
जे कछु चतवै राम बिन, सोइ काल की पास ।।

उत्तर– कबीर कहते हैं क मुझको ईश्वर के नाम का चन्तन मनन करने की ही चंता रहती है,कहीं ऐसा न हो क मैं प्रभावशाली भगवान का नाम भुला दूं। ईश्वर के ध्यान और मनन करने के अतिरिक्त सांसारिक सुखोपभोग की चंता मुझे नहीं सताती । ईश्वर के नाम का ध्यान करने से ही जन्म मरण के चक्र से मुक्ति मलती है।

6.नैनां अंतर आवतू नैन झां प तोहि लेऊं ।
ना हौं देखौंऔरकूं, ना तुझ देखन देउं ।।

उत्तर– कबीर कहते हैं क जीवात्मा तथा परमात्मा अ भन्न हैं । जीवात्मा परमात्मा को अपना प्रेमी अथवा पति मानते हुए उससे कहती है क हे प्रय तम, आप मेरे नेत्रों के अन्दर आकर बस जाओ । मैं अपनी आंखें बंद करके आपको उनके अन्दर छिपा लुंगी । इस तरह मैं आपके अतिरिक्त कसी अन्य को देखूँगी ही नहीं तथा मेरी पलकों के भीतर होने के कारण आप भी कसी और को दिखाई नहीं देंगे ।

7. मूरिख संग न कीजिये, लोहा जल न तिराइ ।
कदली सीप भुवंग मुख, एक बुन्द तिहूंभाइ ।।

उत्तर – संतकबीर कह रहे हैं क मनुष्य संगति के प्रभाव से बच नहीं सकता । इस लए मूर्खों का साथ नहीं करना चाहिए । जिस प्रकार लोहा पानी में नहीं तैरता, उसी प्रकार मूर्ख संतोंके उपदेशों को ग्रहण नहीं करते संगति का प्रभाव बताते हुए क व कहते हैं क स्वाति नक्षत्र में बादलों से गरने वाली पानी की बूंद तो एक ही होती है कन्तु वह केले में गर कर कपूर, सीप में गर कर मोती तथा सांप के मुख में गर कर वष बन जाती है, इस प्रकार संगति के प्रभाव से उसके तीन परिणाम निकलते हैं ।

8.माषी गुड़ में ग ड रही पंषरही लपटाइ ।
ताली पीटैं, सर धुनै, मीठै बोई माइ ।।

<u>उत्तर</u> – संत कबीर कहते हैं क मक्खी मीठे के लालच में गुड़ में गड़ गई है । उसके पंख गुड़ के कारण उसमें चपक ग्ऐ है । उनपर गुड़ लपटा हुआ है इस कारण वह उड़ कर जाने में असमर्थ है । वह अपने हाथ मलती है और माथा पीटती है अर्थात गुड़ के प्रति अपने लालच के लए पछताती है कन्तु मीठे गुड़ की झकड़से उसकी मुक्ति संभव नहीं हो पाती । क व कहना चाहते हैं क मनुष्य भी सांसारिक सुखों और भोगों की लालसा में पड़ कर अपना जीवन नष्ट कर लेता है तथा मृत्यु तक उनसे मुक्त नहीं हो पाता है ।

9.निम्न ल खत पदों के आशय स्पष्ट कीजिये ?

काहे री न लनी तूं कुम्हलानी
तेरे ही ना लयों सरोवर पानी ।।

<u>उत्तर</u> – संत कबीर कहते हैं क अरे कम लनी तू क्यों मुरझाई हुई है
तेरी नाल तो तालाब के जल में डूबी हुई है , जल मलते रहने पर भी तेरे कुम्हलाने का क्या कारण है । कबीर का कहना है क कमल दण्ड में स्थित जल और सरोवर का जल जैसे एक है, उसी प्रकार आत्मा और परमात्मा भी अ भन्न है ।

10. कबीर केअनुसार मूर्ख का साथ क्यों नहीं करना चाहिए ?

<u>उत्तर</u> – मनुष्य जिसकी भी संगति में रहता है उसी जैसा हो जाता है । संगति के प्रभाव से बच पाना बहुत कठिन है । संगति के प्रभाव का प्रमाण स्वाति नक्षत्र में बरसने वाली बूंद के परिणाम में देखाजासकता है ।

एक ही बूंद केले, सीपी और सर्प के मुख में पड़ने पर क्रमशः कपूर मोती और वष बन जाती है ।अतः मूर्ख का साथ नहीं करना चाहिए ।

11.जीवात्मा कससे मलने के लए रात दिन तड़पती है ?
<u>उत्तर</u> – कबीर स्वयं को परमात्मा रूपी प्रय तम की वरहिणी पत्नी मानते हैं ।यही कारण है क जीवात्मा दिन रात अपने प्रय तम परमेश्वर से मलने के लए तड़पती और तरसती रहती है । अपने प्रय के वयोग में उसका मन पल भर के लए भी चैन नहीं पाता ।

12.कबीर की दृष्टि में कौन से लोग कभी नहीं मरते ?
<u>उत्तर</u> – जीवात्मा को ज्ञानियों और दार्शनिकों ने परमात्मा का ही अंश माना है ,वह हर पल परमात्मा में ही निवास करती है । कन्तु भ्रमवश स्वयं को परमात्मा से भन्न समझ बैठती है । कबीर के अनुसार जो ज्ञानी लोग आत्मा और परमात्मा के इस सम्बन्ध को जानते हैं, वे परमात्मा के समान हो जाते हैं तथा कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होते हैं
13 . गुरु गो वंद तो एक हैं ,पंक्ति में कबीर के मन्तव्य को स्पष्ट करो ?
<u>उत्तर</u> – कबीर मानते हैं क गुरु तथा ईश्वर एक हैं तथा दोनों में कोई अन्तर नहीं है । गुरु धरती पर ईश्वर का दूसरा रूप है । गुरु ईश्वर की कृपा होने पर ही मनुष्य को प्राप्त होता है तथा गुरु की कृपा से ही सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है । गुरु से प्राप्त इस सद्ज्ञान से ही मनुष्य संसार के वषय वकारों तथा माया मोह से मुक्ति होता है । अज्ञान में फंसे मनुष्य को गुरु से प्राप्त ज्ञान सचेत कर देता है तथा वह भौतिक सुखों की नाव को छोड़कर भवसागर में डूबने से बच जाता है ।
14 . जल में उतपति जल में वास, जल में न लनी तोर निवास ।
पंक्ति का मूल भाव ल खए ?
<u>उत्तर</u> – इस पद में कबीर ने न लनी अर्थात कम लनी को जीवात्मा का और सरोवर के जल को परमात्मा का प्रतीक बनाया है । वह कम लनी रूपी आत्मा से प्रश्न करते हैं क अरे न लनी तू क्यों मुरझाई हुई है । तेरे चारों ओर तथा नाल में सरोवर का जल अर्थात परमात्मा है। तेरी उत्पत्ति तथा निवास भी इसी सरोवर में है । मूल भाव यह है क जीवात्मा और परमात्मा अ भन्न हैं जीवात्मा की उत्पत्ति और स्थिति उसी सर्व व्या पनी परब्रह्म में है
15.गुरु की प्राप्ति के वषय में कबीर ने संक लत दोहों में क्या कहा है ?
<u>उत्तर</u>– कबीर केअनुसार गुरु और ईश्वर में कोई अन्तर नहीं है । गुरु की प्राप्ति होना मनुष्य का परम सौभाग्य होता है । उसे पलभर भी हृदय से दूर नहीं होने देनाचाहिए । गुरु द्वारा प्रदत ज्ञान से ही जीव को ईश्वर की प्राप्ति होती है ।
16.कबीर ने संसार की तुलना सेबल के फूल से क्यों की है ?
उत्तर– सेबल के वृक्ष पर लाल रंग के फूल आते हैं । ये देखने में सुन्दर होते हैं । तोता इसे फल समझकर चखने लगता है तो अन्दर से रुई जैसा निरस पदार्थ निकल पडता है । कबीर के अनुसार सासारिक सुख भी बाहर से बडे आकर्षक और प्रय लगते हैं , पर इनका परिणाम निराशाजनक और दुखदायी होता है। यह संसार भी सेबल फूल की तरह केवल बाह्य रूप में आकर्षक है ।
17 . कबीर के दोहों को साखी क्यों कहा जाता है ?
उत्तर– कबीर ने जो कहा है वह उनके जीवन के अनुभव पर आधारित है। उन्होंने सुनी सुनाई बातें नहीं कही । उन्होंने अपने नेत्रों से जो देखा वही अपने दोहों में व्यक्त कया है । आंखों देखी होने के कारण उसे साक्ष्य अर्थात साखी कहा जाता है ।

18.पीछैं लागा जाइ था,लोकवेद के साथ इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिये ?

उत्तर– कबीर ने गुरु के महान उपकार के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की है । जब तक गुरु का मार्गदर्शन प्राप्त नहीं हुआ तब तक कबीर भी बिना सोचे समझे लोकाचार और मान्यताओं के पछलग्गू बने हुए थे । जब गो वन्द की कृपा से उन्हें गुरु का सानिध्य प्राप्त हुआ और गुरु ने उनके हाथ में ज्ञानरुपी दीपक थमाया तब उन्हें दिखाई दिया क वह तो अन्ध वश्वास के मार्ग पर चले जा रहे थे । गुरु ने ही उनके उद्धार का मार्ग प्रशस्त कया ।

19.ज्ञान की आंधी आने पर मन के वकार कस प्रकार दूर होते चले जाते हैं । स्पष्ट कीजिये ?

उत्तर– दास जी ने आंधी के रूपक द्वारा साधु के हृदय में ज्ञानोदय होने का वर्णन कया है । ज्ञान रुपी आंधी के कारण टाट का पर्दा उड़ गया है । भ्रम के दूर होते ही माया के बन्धन भी छिन्न भन्न हो गये । हित और चत अर्थात द् व वधारुपी जिन दो खम्भों पर इसकी छावनी टिकी हुई थी, वे भी नीचे आ गरे और इन पर टिकी हुई मोह रुपी बल्ली भी दो टुकड़े हो गई । इस प्रकार भ्रम से आरम्भ होकर कुबु द्ध पर्यन्त जितने भी मनो वकार थे, सभी एक एक करके मन से बाहर हो गये ।इस प्रकार कबीर ने ज्ञान और योग की महता का प्रतिपादन कया है ।

20.न लनी के कुम्हलाने का कारण कबीर को क्या प्रतीत होता है ?

उत्तर– कबीर ने न लनी और सरोवर के जल के परस्पर संबंध द्वारा जीवात्मा और परमात्मा के तात्विक सम्बन्ध पर प्रकाश डाला है । जब न लनी सरोवर में उगी हुई है, उसके नाल में भी सरोवर का जल है तथा ऊपर से कोई आग उसे तप्त नहीं कर रही है, फर उसके मुरझाने का कारण समझ में नहीं आता । कबीर केअनुसार अज्ञानवश जीवात्मा स्वयं को ईश्वर से भन्न समझ कर दुखी रहती है, जब क वह ईश्वर का ही अंश है और नित्य उसी में निवास करती है ।

पाठ . 2 गोस्वामी तुलसीदास (मंदोदरी द्वारा रावण को सीख)

बहुविकल्पी प्रश्नः–

1. श्री रामचरित मानस के रचयिता कौन है?
   (क) कबीरदास (ख) तुलसीदास (ग) रैदास (घ) सूरदास — उत्तर (ख)
2. मंदोदरी किसकी पत्नी थी?
   (क) रावण (ख) कुंभकर्ण (ग) मेघनाथ (घ) राम — उत्तर (क)
3. शूर्पनखा कोन थी?
   (क) रावण की बहन (ख) राम की बहन (ग) रावण की पत्नी (घ) राम की पत्नी
   उत्तर (क)
4. रावण किसका अपहरण करके लाया था?
   (क) राम (ख) सीता (ग) लक्ष्मण (घ) शूर्पनखा — उत्तर (ख)
5. रावण को सीता हरण के लिए किसने उकसाया?
   (क) मंदोदरी (ख) शूर्पनखा (ग) मारीच (घ) विभीषण — उत्तर (ख)

लघुत्तरात्मक प्रश्नः–

1. तुलसीदास का जन्म कब व कहाँ हुआ था?
   उत्तरः गोस्वामी तुलसीदास का जन्म विक्रम संवत 1589 में उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में स्थित राजापुर गाँव में हुआ था ऐसा माना जाता है।
2. तुलसीदास के माता पिता का नाम क्या था व उन्होंने इन्हें क्यों त्याग दिया?
   उत्तरः इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे व माता का नाम हुलसी था, कहते है कि अशुभ नक्षत्र में पैदा होने से, अनिष्ठ की आशंका के कारण माता पिता ने इन्हें त्याग दिया।

3. तुलसीदास को राम भक्ति के संस्कार कहाँ से मिले?
उत्तरः स्वामी नरहरिदास ने तुलसी को दीक्षा और राम भक्ति के संस्कार दिये।

4. तुलसीदास की पत्नी का नाम क्या था तथा ये वैरागी किस प्रकार हुए?
उत्तरः इनकी पत्नी का नाम रत्नावली था, जिसकी मधुर झिडकी से तुलसी को वैराग्य प्राप्त हुआ।

5. तुलसीदास की मृत्यु कब हुई?
उत्तरः राम भक्ति में तीर्थ स्थानों का भ्रमण करते हुए संवत 1680 में काशी के गंगा घाट पर श्रावन शुक्ला सप्तमी को इनकी मृत्यु हुई।

6. तुलसीदास की मुख्य रचनाएँ कौन–कौन सी है?
उत्तरः इनकी मुख्य रचनाएँ दोहावली, गीतावली, कवितावली, राम चरित मानस, विनय पत्रिका आदि है।

7. मंदोदरी की रावण को सीख प्रसंग कहा से संकलित किया गया है?
उत्तरः यह प्रसंग तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस महाकाव्य के सुंदरकांड तथा लंकाकांड से संकलित है।

8. मंदोदरी ने रावण से राम का विरोध त्याग कर क्या करने को कहा?
उत्तरः मंदोदरी ने रावण से कहा की वह सीता को सौपकर, पुत्र को राज सिहासन पर बिठाकर वन में जाए और राम का भजन करे।

9. मंदोदरी ने राम के बाणों और राक्षसों को किसके समान बताया?
उत्तरः मंदोदरी ने राम के बाण सर्पो के समूह के समान और राक्षसों को मेढकों के समान बताया।

10. मंदोदरी ने राम के स्वभाव के बारे में रावण से क्या कहा?
उत्तरः मंदोदरी ने कहा कि राम दिन दयालु हैं। वह तुम्हे अवश्य क्षमा कर देंगे। हिंसक बाघ भी शरण में आने वाले को नहीं खाता।

11. रावण के व्याकुल और दुखी होकर राजभवन लौटने का क्या कारण था?
उत्तरः अंगद ने उसके पुत्र का वध करने के साथ ही भरी सभा में उसे नीचा दिखाया था। इसी कारण लज्जित और दुःखी होकर लोटा।

12. राम ने रावण के पास अपना दूत क्यों भेजा?
उत्तरः मंदोदरी के अनुसार कृपालु राम ने रावण के हित के लिए ही अपना दूत अंगद रावण के पास भेजा था।

13. रावण के मन में ज्ञान क्यों नहीं उत्पन्न हो रहा था?
उत्तरः मंदोदरी के अनुसार काल के वश में होने के कारण रावण सच्चाई को नहीं समझ पा रहा था।

14. रावण का कौन–सा शरीर रणभूमि में धुल–धूसरित पड़ा था?
उत्तरः रावण के जिस शरीर के चलने पर धरती हिलती थी, अग्नि, सूर्य और चन्द्रमा तेजहीन लगते थे तथा शेषनाग, कच्छप जिसके भार को नहीं सह पाते थे, वही भूमि पर धुल में सना पड़ा था।

15. रावण ने पत्नी मंदोदरी की सीख क्यों नहीं मानी?
उत्तरः अपने बल के अहंकार में डूबे होने से तथा राम को साधारण मनुष्य मानने के कारण रावण ने मंदोदरी की सीख नहीं मानी।

16. रावण द्वारा मंदोदरी की सीख न मानने का क्या परिणाम हुआ?
उत्तरः मंदोदरी की सीख न मानने के कारण रावण युद्ध में राम के द्वारा मारा गया और उसके लिए कुल में कोई रोने वाला भी नहीं बचा।

17. रावण को लंकेश क्यों कहते है?
उत्तरः लंका का स्वामी होने के कारण रावण को लंकेश कहते है।

18. मंदोदरी ने रावण को किससे बैर न करने की सलाह दी?
उत्तरः मंदोदरी ने रावण को राम से बैर न करने की सलाह दी।

CBSEGURINDER

19. कवि ने श्री राम और रावण में किस प्रकार का अंतर बताया है?
उत्तरः कवि ने श्री राम को सूर्य के समान तेजस्वी बताया है और रावण को जुगनू के समान बताया है।

20. मंदोदरी की चारित्रिक विशेषता लिखिए।
उत्तरः मंदोदरी पतिव्रता, सत्यनिष्ठ, दूरदर्शी, विवेकशील, विदुषी तथा अपने पति को मार्ग दर्शन कराने वाली होने के साथ अन्याय व हिंसा का विरोध करने वाली नारी थी।

21. रावण का चरित्र किस प्रकार का था?
उत्तरः रावण एक अहंकारी, हठी, युद्ध पिपासु, निति विरुद्ध आचरण करने वाला, विलासी और पराक्रमी योद्धा था।

22. निम्नलिखित पंक्ति का भावार्थ लिखिएः
सुपनखा कै गति तुम्ह देखि। तदपि ह्रदय नहीं लाज बिसेषी।।
उत्तरः मंदोदरी रावण को समझा रही है कि उसकी बहिन शूर्पणखा के लक्ष्मण ने नाक–कान काट लिए, फिर भी वह कुछ नहीं कर पाया। अतः राम से बैर त्यागकर उनसे क्षमा मांग लो।

23. कंत समुझि मन तजहु कुमति ही। सोह न समर तुम्हहि रघुपति ही।।
रामानुज लघु रेख खचाई। सोउ नहीं नाधेहु असि मनुसाई।।
उत्तरः मंदोदरी अपने पति रावण से बोली कि मन में सच्चाई को समझकर कुविचारों को त्याग दो। याद करो, लक्ष्मण ने सीता की कुटी के बहार एक छोटी सी रेखा खींच दी थी। आप उसे भी नहीं लाँघ सके, अतः राम से वैर त्यागकर सीता को सकुशल राम के पास भेज दो। इस प्रकार विभिन्न उदाहरनो के माध्यम से रावण को समझाने का प्रयास करती है।

रहीम–

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. रहीम ने दोहों की रचना किस भाषा में की है ?
उत्तर– ब्रजभाषा में।
2. रहीम किन–किन भाषाओं के जानकार थे ?
उत्तर– तुर्की, अरबी,फारसी, उर्दू, हिन्दी, संस्कृत आदि।
3. अकबर ने रहीम से प्रभावित होकर उन्हें कौन–सी उपाधि दी थी ?
उत्तर– मिर्जा खान।
4. रहीम ने किसकी भक्ति में पदों की रचना की ?
उत्तर– श्री कृष्ण।
5. 'कदली सीप भुजंग–मुख, स्वाति एक गुन तीन' पंक्ति में रेखांकित शब्द का क्या अर्थ है ?
उत्तर– सर्प/साँप।
6. विपत्ति–कसौटी में कौनसा अलंकार प्रयुक्त हुआ है ?
उत्तर– रूपक अलंकार।
7. रहीम ने किन लोगों को धन्य कहा है ?
उत्तर– जो मान–सम्मान की रक्षा हेतु प्राण त्याग दे।
8. रहीम के अधिकतर दोहे किस विषय के है ?
उत्तर– नीति।
9. रहीम ने किस धागे को चटाकाकर न तोड़ने की बात कही है ?
उत्तर– प्रेम का धागा।
10. 'अच्युत चरन–तरंगिनी' में 'अच्युत' किसे कहा है ?
उत्तर– विष्णु को।

CBEOBHINDER

11. 'रहिमन भंवरी के भए' पंक्ति में रेखांकित शब्द का क्या अर्थ है ?
उत्तर– विवाह के फेरे।
12. 'कीजौ इन्दव भाल' का क्या आशय है ?
उत्तर– हे! शिवजी, मुझे शिव ही बना दीजिए।

13. 'रहिमन सोई मीत है' रहीम के अनुसार सच्चा मित्र कौन होता है ?
उत्तर– विपत्ति आने पर जो साथ दे।
14. रहीम के पिता बैरम खाँ की मृत्यु के बाद उनके शिक्षा–दीक्षा का प्रबंध किसने किया ?
उत्तर– अकबर ने।
15. रहीम का जन्म व देहावसान कब हुआ था ?
उत्तर– जन्म– 1556 ई•, देहावसान– 1626 ई• में

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. रहीम ने परोपकारी व्यक्ति की संगति करने के लिए क्यों कहा है ?
उत्तर– क्योंकि ऐसा करने से यश मिलता है। जैसे मेहन्दी बाँटने या पीसने वाले के हाथों पर मेहन्दी का रंग स्वयं चढ़ जाता हैं, परोपकारी के साथ रहने से स्वयं को भी परोपकार करने की प्रवृति पड़ जाती है और संगति के कारण यश–लाभ प्राप्त होता ही है।

2. रहीम के कृतित्व पर विचार व्यक्त कीजिए ?
उत्तर– रहीम की प्रमुख कृतियों में 'रहीम दोहावली, बरवै नायिका भेद, मदनाष्टक, श्रृगांर सोरठ, रास पंचाध्यायी, नगरशोभा आदि मिलती है। 'खेटकौतुकजातम्' उनका ज्योतिष ग्रंथ है। इस प्रकार रहीम का कृतित्व भक्ति, नीति–उपदेश, एवं लोकानुभव से सजा है।

3. 'काज परै कछु और हैं, काज सरै कछु और' का आशय लिखिए।
उत्तर– इसका आशय यह है कि संसार में सारे लोग मतलब का आचरण करते हैं। जब किसी से काम कराना होता है, तब लोग आत्मीयता दिखाते हैं। परन्तु जब काम निकल जाता है और स्वार्थ सिद्ध हो जाता है, तब एकदम अपरिचित होकर अपनत्व भूल जाते हैं।
4. रहीम के व्यक्तित्व पर संक्षेप में विचार व्यक्त कीजिए?
उत्तर– रहीम बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे बादशाह अकबर के नवरत्नों में से एक थे। वे कुशल सेनापति, प्रशासक, आश्रयदाता, दानवीर, बहुभाषाविद्, कला पारखी और राजनीतिज्ञ तथा प्रत्युत्पन्नमति थे। रहीम का भारतीय संस्कृति से विशेष लगाव था और वे मुसलमान होकर भी कृष्ण भक्त थे।
5. 'बिगरी बात बनै नहीं, लाख करै किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय।।
उपर्युक्त दोहे का भावार्थ लिखिए।
उत्तर– कवि रहीम कहते हैं कि बिगड़ी बात को लाख उपाय करने पर भी नहीं सुधारा जा सकता। जैसे फटे हुए दूध को लाख बार मथने पर भी उससे माखन नहीं निकलता है। आशय यह है कि किसी भी बात को बिगड़ने न दें। वाणी पर नियंत्रण रखें, विवेक से काम लें।
6. रहीम ने दीपक तथा कपूत की समानता का वर्णन क्यों किया है?
उत्तर– रहीम ने बताया कि दीपक जलने पर प्रकाश फैलाता है, परन्तु जब उसकी लौ बढ़ जाती है और वह कालिख छोड़ने लगता है, तो उससे प्रकाश कम और अंधेरा अधिक होता है। इसी प्रकार पुत्र जब जन्म लेता है तो माता–पिता को खुशी होती है, परन्तु बड़ा होने पर वह दुराचरण करता है तब परिवार में सभी को दुःख होता है। इस प्रकार रहीम ने दीपक और कपूत की समानता का वर्णन किया हैं।

CBSE BHINDER

7. रहीम के दोहों की प्रमुख विशेषताओं को संक्षेप में लिखिए।

उत्तर– रहीम ने अपने दोहों मे जीवन के अनुभवों एवं सत्यों को सरल भाषा–शैली में प्रकट किया है। इनके दोहों के प्रमुख विषय वैराग्य, भक्ति, नीति, प्रेम एवं श्रृगांर है। इन्होने विचारों की शुद्धता पर बल देकर प्रेम, सत्संगति, मित्रता, परोपकार, व्यवहारशीलता, उदारता, लोकमंगल और जीवन की क्षणिकता आदि से सम्बंधित दोहे लिखकर पर्याप्त यश प्राप्त किया।

8. खैर–खून–खाँसी खुसी, बैर–प्रीति मद–पान।
रहिमन दाबे ना दबैं, जानत सकल जहान।
उपर्युक्त दोहे का भावार्थ लिखिए।

उत्तर– कवि रहीम कहते हैं कि कुशलता, रक्तपात, खाँसी, प्रसन्नता, वैर, प्रेम और शराब–पान आदि बातें लाख कोशिश करने पर भी छिपाई नहीं जा सकतीं, इन्हें तुरंत ही सभी लोग जान लेते हैं। अर्थात् कुछ ऐसे भाव और व्यवहार है जो लाख कोशिश करने पर भी छिपाए नहीं जा सकते।

9. रहीम के काव्य का प्रमुख प्रतिपाद्य क्या है?

उत्तर– रहीम के काव्य में व्यावहारिक नीति, भक्ति, श्रृगांर और प्रेमभाव आदि के विविध रूपों का वर्णन हैं। रहीम ने भक्ति–भाव की सुंदर अभिव्यक्ति की है, जिसमें उनके भक्त–हृदय के समर्पण–भाव के स्पष्ट दर्शन होते हैं। इन सब विषयों का वर्णन होने पर भी रहीम के काव्य का प्रमुख प्रतिपाद्य नीति–उपदेशात्कमता ही माना जाता है।

10. 'कदली,सीप,भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन' स्वाति–बूँद के तीन गुण कौन–से बताए गए है?

उत्तर– स्वाति नक्षत्र के समय वर्षा की बूँद केले में पड़ने से कपूर का रूप ले लेती है, सीपी में पड़ने पर मोती और सर्प के मुख में पड़ने से जहर बन जाता है। इस प्रकार स्वाति बूँद के तीन गुण बताए गए है।

यशोधरा/भारत की श्रेष्ठता – मैथिलीशरण गुप्त

प्रश्न:1 राजकुमार सिद्धार्थ यशोधरा के थे....
(क) भाई (ख) पति (ग) सगे–संबंधी (घ) पिता

उत्तर: (ख) पति

प्रश्न:2 यह गौरव की बात कि स्वामी गए...
(क) वैराग्य हेतु (ख) सिद्धि हेतु (ग) राज्य प्राप्ति हेतु (घ) तीर्थ यात्रा हेतु

उत्तर: (ख) सिद्धि हेतु

प्रश्न:3 यशोधरा को पीड़ा है कि उसके पति चले गए हैं...
(क) सोता हुआ छोड़कर (ख) लक्ष्य बताए बिना (ग) चोरी–चोरी (घ) खाना खाए बिना

उत्तर: (ग) चोरी–चोरी

प्रश्न:4 कवि के अनुसार प्रकृति का पुण्य तीर्थस्थल है...
(क) भारतवर्ष (ख) हिमालय (ग) गंगा (घ) सागर

उत्तर: (क) भारतवर्ष

प्रश्न:1 "यशोधरा' काव्य किस शैली की रचना है?

उत्तर: 'यशोधरा' **गीतिशैली** की रचना है।

प्रश्न:2 यशोधरा क्यों कहती है–सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

उत्तर: गौतम बुद्ध यशोधरा को बिना बताए घर से चले गए हैं। इससे वह पीड़ित है।

प्रश्नः3 फिर भी क्या पूरा पहचाना' किसने किसको पूरा नहीं पहचाना है?'
उत्तरः गौतम बुद्ध ने अपनी पत्नी यशोधरा को पूरा नहीं पहचाना है।
प्रश्नः4 क्षत्राणियाँ अपना धर्म कैसे निभाती हैं?
उत्तरः क्षत्राणियाँ युद्ध की अवस्था में अपने पति को स्वयं युद्ध के लिए सजाकर विदा करती हैं।
प्रश्नः5 **प्रियतम को प्राणों के पण** में कौन–सा अलंकार है?
उत्तरः इस पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।
प्रश्नः6 गौतम बुद्ध ने गृह त्याग क्यों किया है?
उत्तरः गौतम बुद्ध ने सिद्धि प्राप्त करने के लिए गृह त्याग किया है।
प्रश्नः7 गौतम बुद्ध द्वारा यशोधरा को सोता हुआ छोड़कर जाने के पीछे क्या कारण है?
उत्तरः गौतम बुद्ध यशोधरा को जाते समय रोता नहीं देख सकते थे। उनको उस पर तरस आ रहा था।
प्रश्नः8 'दुःखी न हों इस जन के दुःख' से। पंक्ति में यशोधरा ने 'जन' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है?
उत्तरः 'दुखी न हों इस जन के दुःख से'। पंक्ति में 'जन' शब्द का प्रयोग यशोधरा ने स्वयं अपने लिए किया है।
प्रश्नः9 यशोधरा की क्या मनोकामना है?
उत्तरः यशोधरा की कामना है कि उसके पति को सिद्धि प्राप्त हो।
प्रश्नः10 'गये, लौट भी वे आयेंगे' पंक्ति क्या भाव है?
उत्तरः गये, लौट भी वे आवेंगे, में यशोधरा की आशा व्यक्त हुई है कि उसके पति लौटकर आवेंगे।
प्रश्नः11 "कुछ अपूर्व अनुपम लावेंगे", पंक्ति में क्या संकेत है?
उत्तरः इस पंक्ति में संकेत है कि गौतम बुद्ध को बुद्धत्व प्राप्त हो जायेगा।
प्रश्नः12 गौतम बुद्ध को चुपचाप अपनी पत्नी को छोड़कर जाना क्या आपको उचित लगता है ?
उत्तरः गौतम बुद्ध ने विश्व कल्याण हेतु गृह त्याग किया था, अतः यह उचित है।
प्रश्नः13 'भारत की श्रेष्ठता' कविता किस पुस्तक में संकलित है?
उत्तरः13 'भारत की श्रेष्ठता' शीर्षक कविता गुप्त जी के 'भारत–भारती' नामक काव्य में संकलित है।
प्रश्नः14 'भारत की श्रेष्ठता' कविता में किस भारतीय पर्वत तथा नदी का उल्लेख है?
उत्तर 'भारत की श्रेष्ठता' कविता में हिमालय पर्वत तथा गंगा नदी का उल्लेख है।
प्रश्नः15 'भारत की श्रेष्ठता' कविता की मुल संवेदना क्या है?
उत्तरः 'भारत की श्रेष्ठता' कविता की मुल संवेदना यह है कि भारत के गौरवशाली अतीत का वर्णन करते हुए सोए हुए जनमानस में राष्ट्रीयता का भाव जगाना है।
प्रश्नः16 'भारत की श्रेष्ठता' में किसको भारत का निवासी बताया गया है?
उत्तरः 'भारत की श्रेष्ठता' कविता में आर्यों को भारत का निवासी बताया गया है।
प्रश्नः17 ब्रह्मा जी ने सर्वप्रथम सृष्टि रचना कहाँ की थी?
उत्तरः ब्रह्माजी ने सर्वप्रथम सृष्टि रचना भारत में की थी।

प्रश्नः18 यशोधरा दुःखी क्यों थी?
उत्तरः मानव के चिर–सुख का अमृत खोजने के लिए गौतम बिना बताये यशोधरा और अबोध बालक राहुल को छोड़कर चले गये थे। इसी वेदना से यशोधरा अत्यन्त दुरूखी थीं।
प्रश्नः19 'यशोधरा' का काव्यरूप क्या है?
उत्तरः 'यशोधरा' गुप्त जी द्वारा रचित खण्डकाव्य है।

प्रश्नः20 भारतवर्ष अन्य देशों को सिरमौर क्यों है?
उत्तरः20 भारत संसार का सबसे प्राचीन देश है जहाँ विधाता ने सबसे पहले मानवसृष्टि का निर्माण किया और इस संसार की रचना की तथा समस्त ज्ञान–विज्ञान कौशलों और कलाओं का जन्म स्थान यह भारत देश है। इस कारण यह देश अन्य देशों का सिरमौर है।

CBSE GURINDER

प्रश्नः1 यशोधरा की मूल संवेदना अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तरः यशोधरा अपने पति के प्रति समर्पित है। जो उसके पति को मान्य है, वही यशोधरा को भी स्वीकार है। सिद्धि हेतु उनके जाने में भी वह गौरव का अनुभव करती है। किन्तु उनके चुपचाप चोरी–चोरी, उससे कुछ कहे बिना चले जाना, उसको बहुत पीड़ा पहुँचाता है। इसमें उसको अपनी उपेक्षा का भाव प्रतीत होता है। यह उपेक्षा उसके विरह दुःख को दूगुना कर देती है।

प्रश्नः2 "उपालम्भ दु मैं किस मुख से"–यशोधरा ने यह क्यों कहा है?

उत्तरः यद्यपि सिद्धार्थ अपनी पत्नी यशोधरा से बिना कुछ कहे चोरी–चोरी घर त्याग कर चले गए हैं और इससे यशोधरा बहुत आहत भी है, तथापि वह इसका उलाहना उनको देना नहीं चाहती है। उसके पति सिद्धि प्राप्त करने गए हैं, यह जानकर वह स्वयं भी गौरव का अनुभव करती है। वह उनकी लक्ष्यप्राप्ति की इच्छुक है। महान् सिद्धि पाने में लगे उसके पति उसको अब पहले से भी अधिक अच्छे लगते हैं।

प्रश्नः3 कवि ने भारतवर्ष को भू–लोक का गौरव क्यों बताया है?

उत्तरः भारत का प्राकृतिक सौन्दर्य अनुपम है। यहाँ पर्वतराज हिमालय तथा गंगानदी हैं। संसार के सभी देशों की अपेक्षा भारत महान् तथा समुन्नत है। भारत ऋषि–मुनियों की तपोभूमि है। कवि ने इस कारण भारत को भू–लोक का गौरव बताया है।

प्रश्नः4 'यशोधरा' काव्य की विशेषताएँ बताइए।

उत्तरः 'यशोधरा' एक खण्ड–काव्य है। 'यशोधरा' की कथावस्तु गौतम बुद्ध के गृह त्याग के पश्चात् उनकी पत्नी यशोधरा की वेदना से सम्बन्धित है। इस काव्य में वियोग श्रृंगार रस है। यह एक गीति काव्य है। इसकी रचना गीत छंद में हुई है। इसमें अनुप्रास, रूपक, उपमा, पुनरुक्ति प्रकाश आदि अलंकार आए हैं। काव्य में यशोधरा के सहज नारीगत संताप, आत्मग्लानि, वेदना का प्रभावशाली अंकन हुआ है।

प्रश्नः5 "कह तो क्या मुझको वे अपनी पथ बाधा ही पाते?" यशोधरा द्वारा यह पूछने का क्या तात्पर्य है?

उत्तरः यशोधरा कह रही है कि उसके पति गौतम बुद्ध उसको बिना बताए चले गए हैं। वह सिद्धि हेतु गए हैं। सम्भवतः उन्होंने सोचा होगा कि यशोधरा उनको जाने से रोकेगी और उनके सिद्धि प्राप्त करने के मार्ग में बाधक बनेगी। लेकिन वह ऐसी नहीं है। उसने अपने पति की इच्छा के प्रतिकूल कभी कोई काम नहीं किया है। वह उनको जाने से नहीं रोकती।।

प्रश्नः6 फिर भी क्या पूरा पहचाना? यशोधरा ने यह क्यों कहा है कि गौतम बुद्ध उसको पूरी तरह पहचान नहीं सके?

उत्तरः गौतम बुद्ध के चोरी–चोरी यशोधरा से बिना कहे घर से जाने से यशोधरा को शंका होती है कि गौतम अपनी पत्नी को अच्छी तरह पहचान नहीं सके। उनको आशंका थी कि यदि वह यशोधरा को बताकर जायेंगे तो वह उनको जाने नहीं देगी। जबकी वह ऐसी नहीं है। वह अपने पति की इच्छा के अनुकूल चलने वाली है। वह सिद्धि पाने के लिए जाने वाले अपने स्वामी को कभी नहीं रोकती। किन्तु गौतम की चुपचाप जाना सिद्ध करता है कि वह अपनी पत्नी की भावना को जान नहीं सके।

प्रश्नः7 क्षात्र धर्म क्या है?

उत्तरः युद्ध के आह्वान पर घर–परिवार छोड़कर देश की रक्षा के लिए उसमें कूद पड़ना, पत्नी–बच्चों और अपने जीवन का मोह त्याग देना तथा शत्रु का निर्भीक होकर साहस के साथ सामना करना क्षात्र धर्म है। क्षत्रिय स्त्रियों का धर्म यह है कि वे अपने पतियों को युद्ध के लिए सुसज्जित करके स्वयं विदा करें तथा उसके कर्तव्य के पालन से विमुख होने का कारण न बनें। कर्तव्यपालन में पति की सहायता करना ही क्षत्रिय नारी का धर्म है।

CBEOBHINDER

प्रश्नः8 'हुआ न वह भी भाग्य अभागा'—पंक्ति में यशोधरा ने स्वयं को अभागा कहा है। इसका क्या कारण है?

उत्तरः 'यशोधरा' बता रही है कि पत्नी का कर्तव्य है कि वह अपने पति के कर्तव्यपालन में सहयोगिनी बने। वह उसको कर्तव्य पालन के लिए प्रेरित और उत्साहित करें। यदि उसके मन में कोई मोह है तो उससे उसको विरत करे। युद्ध भूमि के लिए अपने वीर पति को स्वयं विदा करना क्षत्राणी को धर्म है। यशोधरा के पति चुपचाप चले गए। वह सोती ही रह गई। उसको तो अपने पति को विदा करने का सौभाग्य भी प्राप्त न हो सका।

प्रश्नः9 मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि क्यों कहा जाता है?

उत्तरः मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में स्वदेश प्रेम, राष्ट्रीय भावना, भारतीय संस्कृति, भारत के अतीत तथा इतिहास आदि का चित्रण हुआ है। उनकी प्रसिद्ध काव्य—रचना भारत—भारती में भारतीयों को अपने गौरवशाली अतीत का स्मरण कराया गया है तथा उनमें उत्साह तथा स्वाधीनता के प्रति प्रेम का भाव जगाया गया है। इस सभी के कारण उनको राष्ट्र कवि का गौरव प्राप्त है।

प्रश्नः10 मैथिलीशरण गुप्त का संक्षिप्त जीवन—परिचय दीजिए।

उत्तरः मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई० में उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले के अन्तर्गत चिरगाँव में हुआ। वे वैश्य परिवार से थे। इनके पिता सेठ रामचरणजी भगवान राम के परमभक्त थे। उन्होंने घर पर ही हिंदी, संस्कृत और बांग्ला साहित्य का अध्ययन किया। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि प्रदान की और आगरा विश्वविद्यालय ने इन्हें डी. लिट. की उपाधि से सम्मानित किया। गुप्तजी की आरम्भिक रचनाएँ 'वैश्योपकारक' में प्रकाशित हुईं इसके बाद में पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी की 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने लगीं। द्विवेदीजी के आदेश, उपदेश और प्रोत्साहन से इनकी कविताओं में निखार आया। इन्होंने साहित्य जगत् को अनेक रचनाएँ दीं। 1964 में इनका देहांत हो गया। उन्हें राष्ट्रकवि कहा गया।

काव्यः—'पद्य प्रबंध', 'मंगल घट', 'स्वदेश संगीत' (प्रारंभिक रचनाएँ), 'जयद्रथ वध' (1910), 'पंचवटी (1925), 'झंकार' (1929), 'साकेत' (1931), 'यशोधरा' (1932), 'द्वापर' (1936), 'जयभारत' (1952), 'विष्णुप्रिया' (1957) आदि।

नाटकः—तिलोत्तमा, चंद्रहास और अनघ।

अनूदित काव्यः—प्लासी का युद्ध, मेघनाथ—वध और ऋतु संहार। अन्य रचनाओं में चंद्रहास, विष्णुप्रिया, वृत्र—संहार, नहुष आदि प्रमुख हैं।

राष्ट्रीय कवि गुप्त का हिंदी कवियों में अत्यधिक चर्चित और सम्मानपूर्ण स्थान है। हिंदी काव्य के क्षेत्र में आपका योगदान अविस्मरणीय रहेगा।

'राम की शक्तिपूजा'

प्र॰1 राम रावण युद्ध किसका प्रतीक हैं ?

उत्तर सत् व असत् व धर्म व अधर्म का प्रतीक हैं।

प्र॰2 "आया न समझ में यह देवी विधान"यह किसका कथन है ?

उत्तर श्रीराम का

प्र॰3 कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' किस काव्यधारा के कवि है।

उत्तर छायावादी काव्यधारा के

प्र॰4 'राम की शक्तिपूजा' निराला का काव्य हैं ?

उत्तर प्रबन्धात्मक काव्य

प्र॰5 राम की शक्तिपूजा कविता में 'शक्ति' से आशय है?

उत्तर दुर्गादेवी

CBSEGUIDE / CBEOBHINDER

प्र.6 'जानकी! काय उद्धार प्रिया का न हो सका। 'श्रीराम ने ऐसा कब और क्यों कहा ?

उत्तर जब पुष्प–पात्र में रखा अन्तिम नीलकमल नही मला तो साधना की असिद्धि की आशंका से श्रीराम ने ऐसा कहा। क्योंकि रावण पर विजय पाये बिना सीता का उद्धार नहीं हो सकता था। इस कारण हताशा–निराशा में श्री राम ने अपना दुःख व्यक्त करते हुए ऐसा कहा।

प्र.7 महाकवि निराला का परिचय दीजिए।

उत्तर छायावादी काव्यधारा के प्रमुख कवि निराला का जन्म सन् 1896 में मेदिनीपुर (पश्चिम बंगाल) में हुआ। माता–पिता की अल्पायु में मृत्यु होने पर जीवन संघर्षमय रहा। इनकी कविता में तत्कालीन समाज में व्याप्त शोषण, विषमता एवं परतंत्रता आदि का यथार्थ चित्रण हुआ है। ये मुक्त छन्द के प्रवर्तक तथा वाद में प्रगतिवादी धारा में भी सम्मिलित रहें। इनकी रचना अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास इनका निधन सन् 1971 में हुआ।

प्र.8 राम को दुर्गा ने क्या वरदान दिया ? लिखिए।

उत्तर शक्ति ने उन्हें वरदान देते हुए कहा कि हे राघव ! रावण के साथ युद्ध में तुम्हारी विजय होगी, तुम रावण को मारकर सीता का उद्धार कर लोगे। अर्थात् युद्ध में हर तरह से तुम्हारी ही जय होगी।

प्र.9 'राम की शक्ति पूजा' काव्य से क्या प्रेरणा एवं सन्देश व्यक्त हुआ है ?

उत्तर 'राम की शक्ति पूजा' काव्य से यह सन्देश व्यक्त हुआ है कि अटूट एवं सुदृढ़ निश्चय और प्रखर साधना से प्रत्येक कार्य साधा जा सकता है मानवता को दावता की शक्ति का सामना करने के लिए निरन्तर संघर्ष करने की प्रेरणा व सन्देश व्यक्त हुआ है।

प्र.10 श्री राम को उनकी माता जी बाल्यकाल में किस नाम से पुकारती थी ?

उत्तर राजीवनयन (कमल के समान नेत्रों वाला)

प्र.11 राम के हृदय में उत्पन्न निराशा का कारण क्या हैं ?

उत्तर राम देखते है कि महाशक्ति अधर्म का पक्ष ग्रहण करने वाले रावण के साथ है। तो वह निराशा होते है वह पख अन्याय में प्रवृन्त है महाशक्ति दुर्गा का आशीर्वाद पाकर रावण अजेय हो गया है।

प्र.12 राघवेन्द्र शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

उत्तर श्रीराम के लिए

प्र.13 विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण यह किसने कहा हैं ?

उत्तर यह जाम्बवान ने कहां

प्र.14 आसन छोड़ना असिद्धि क्यों कहा गया हैं ?

उत्तर जप के लिए बैठे राम जप पूर्ण होने से पूर्व आसन छोड़ते तो उनका अपने लक्ष्य प्राप्ति में सफलता नहीं मिलती।

प्र.15 हुआ सहसा स्थिर मन चंचल–राम का मन सह सा अस्थिर क्यों हो उठा ?

उत्तर राम शक्ति की पूजा कर रहे थे, अन्तिम जप था ध्यान शक्ति के चरणों में था जब पूजा स्थल पर नीलकमल नहीं मिला, उनका ध्यान भंग हुआ जप को बीच में छोडने पर असिद्धि होती है जप के पूर्ण होने के समय आए इस व्यवधान से राम का ध्यान भंग हो गया।

प्र.16 'राम की शक्ति पूजा' कविता के नायक राम का चरित्र–चित्रण कीजिए।

उत्तर
(1) धीर, गम्भीर व विचारशील
(2) आशावादी
(3) निराश और हताश
(4) साधारण व संघर्षशील पुरूष

प्र.17 महाशक्ति ने राम को क्या आशीर्वाद दिया।

उत्तर उनकी रावण पर विजय अवश्य प्राप्त होगी।

प्र.18 "राम रावण युद्ध सत् और असत् की दो विरोधी प्रवृत्तियों की टकराहट है।" राम की शक्तिपूजा के आधार बताइए।

उत्तर रामसत् का प्रतीक है वह धर्म पथ के अनुयायी हैं न्याय के रक्षार्थ युद्ध कर रहे है। इनका पथ मानवता का है।रावण असत् का सूचक है। धर्म की मर्यादा का उल्लंघन करने वाला। सीता का छलपूर्वक हरण करना। अन्याय पथ का पथिक है दानवता का परिचालक है।

प्र॰19 राम जाम्बवान के परामर्श को मानकर शक्ति की उपासना करते हैं तथा अपने लक्ष्य सिद्धि में सफल होते है क्या आप संकट के समय मित्रों से परामर्श करना उचित मानते हो ?

उत्तर राम ने जाम्बवान के परामर्श से शक्ति की उपासना की तथा रावण पर विजय प्राप्त की । मित्रों से परामर्श करके कठिन परिस्थितयों में आगे बढ सकते है मित्रों से समस्या समाधान होता है संकट के समय मित्रों से परामर्श करना उचित मानता हूँ।

प्र॰20 'हुआ देवी का त्वरित उदय' देवी का उदय किसका रण हुआ ?

उत्तर श्रीराम ने पूजा के लिए एक नील कमल के कम पड़ जाने पर जब अपनी एक आँख को निकालकर चढ़ाने का निश्चय किया और तरकश से चमकता हुआ ब्रह्म शर निकाला तभी देवी का उदय हुआ।

प्र॰21 ''धिक् जीवन को पाता आया विरोध'' प्रस्तुत पंक्ति के आधार पर ही राम की वेदना बताइए।

उत्तर
(1) किशोरावस्था में वन में राक्षसों का विरोध झेला
(2) युवराज बनने पर माता कैकेयी का विरोध झेला
(3) सीता का उद्धार करने के लिए आराधना–साधना करने लगा। परन्तु यहाँ पर भी मेरा भाग्य विरोधी बन गया।
(4) महाशक्ति के द्वारा जप का कमल छिपाना
(5) राज्य की जनता के द्वारा सीता के चरित्र पर ऊँगली उठाना।

i'kksyk dh çfr/ofu

अति लधुत्तरात्मक प्रश्न–

1. पेशोला झील कहाँ स्थितहै?
उत्तरः–उदयपुर।
2. गौरव–सी काया किसकी पड़ी है?
उत्तरः–महाराणा प्रताप की।
3. साँस आशा में किसकी तरह लटकी हुई है?
उत्तरः–मछली की तरह लटकी हुईहै।
4. कवि ने पेशोला किसे कहा है?
उत्तरः–कवि ने पेशोला "पिछोला झील"को कहा है।
5. "पेशोला की प्रतिध्वनि"कविता किस काव्य संग्रह में संग्रहीत है?
उत्तरः–लहर काव्य संग्रह में।
6. "पेशोला की प्रतिध्वनि"कविता के लेखक कौन हैं?
उत्तरः– जयशंकर प्रसाद।
7. "पेशोला की प्रतिध्वनि"कविता का सन्देश क्या है?
उत्तरः–"पेशोला की प्रतिध्वनि"कविता का मूल सन्देश राष्ट्र प्रेम है।
8. "पेशोला की प्रतिध्वनि"कविता मे कौनसा गुणहै?
उत्तरः–"पेशोला की प्रतिध्वनि"कविता ओज गुण की है।
9. जयशंकर प्रसाद आधुनिक कविता के किस वाद से सम्बन्धित है?
उत्तरः–छायावाद और रहस्यवाद।

CEO BHINDER

10. ''पेशोला की प्रतिध्वनि''कविता के आरम्भ में 'अरूण–करूण बिम्ब'किसके लिए प्रयुक्त शब्द है?
उत्तरः– 'अरूण–करूण बिम्ब' शब्दसूर्य के लिए प्रयुक्त है।
11. 'निर्धूम भस्म रहित ज्वलनपिण्ड'किसको कहा गया है?
उत्तरः–सूर्य को कहा गया है।
12. 'कौन लेगा भार यह?'कवि किस का भार लेने कोलिए कह रहाहै?
उत्तरः–देश के अतीतकाल के गौरव को पुनः स्थापित करने का उत्तरदायित्व।

लधुत्तरात्मक प्रश्न–

13. 'मैं हूँ–मेवाड़ मैं'–पंक्ति में मैं शब्द किसकी ओर संकेत करता है?
उत्तरः–पंक्ति में मेवाड भारत का प्रतीक तथा मैं शब्द सर्वनाम शब्द है जो भारतीय मनुष्य के लिए प्रयुक्त है।
14. ''पेशोला की प्रतिध्वनि'' कविता के काव्य–सौन्दर्य पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।
उत्तरः– कविता का आरम्भ प्रकति चित्रण से हुआ है। संध्या और सूर्यास्त का समय है। झील के शान्त जल में बनी महलों की परछाई लोगों को भारत के पुरातन गौरव को पुनः वापस लाने की प्रेरणा दे रही है।
15. कवि लोगों को मृत क्यों मान रहा है?
उत्तरः–लोगों को स्वदेश के गौरवपूर्ण इतिहास तथा संस्कृति का पता नही है वे इस को भूल चुके हैं।देश के अतीत कालीन गौरव पर वे गर्व अनुभव नहीं करते,न इससे कोई प्रेरणा ही ग्रहण करते हैं? कवि ऐसे लोगों को मृत मान रहा है।
16. खेवा की पतवार कौन खींच रहा है? और कहाँ ले जा रहा है?
उत्तरः– खेवा की पतवार काल रूपी धीवर ने थाम ली है। समय का मल्लाह महाराणाओं के प्राचीन ऐश्वर्य और गौरव की नौका को खे रहा है। वह इसको गहरे अन्धकार रूपी दुर्भाग्य के सागर में खींच कर ले जा रहा है। जिसमें प्रकाश की कोई किरण भी नहीं है। इन महाराणाओं के अतीतकालीन गौरव के पुनरुद्धार की कोई आशा नही है।
17. कवि दुर्बलताओं की कसौटी किसे मानता है?
उत्तरः–कवि 'प्रलयोल्का खण्ड' को दुर्बलताओं की कसौटी मानता है।मनुष्य भीषण संकट के छणों में भी अडिग रहता है तो माना जाता है कि वह दुर्बल नहीं है।
18. पेशोला की झील में बने महलों के प्रति बिम्ब विषाद के शिल्प बने हुए क्यों लगते हैं ?
उत्तरः–झील में महलों की परछाई पड़ रही है और वहाँ जो प्रतिबिम्ब बन रहा है उन्हीं महलों में कभी चहल पहल हुआ करती थी लेकिन आज वहाँ पूर्ण शांति है ऐसा लगता है कि प्राचीन शिल्प कला के नमूने ये महल अपने पुराने ऐश्वर्य को स्मरण कर विषाद में डूबे हुए हैं।
19. 'अरावली श्रृंग–सासमुन्नत सिर किसका' में कौनसा अलंकार है
उत्तरः–उपमा अलंकार है। इसमें' सिर'उपमेय तथा'अरावली श्रृंग' उपमान है।

20. 'साँस सफरी सी अटकी है––––'किसकी साँस अटकी है तथा उसको किस बात की आशा है?
उत्तरः–जब मुष्य का अन्तिम समय होता है और उसकी इच्छा अपूर्ण रहती है तो वह उसके पूरे होने की आशा में शान्तिपूर्वक मर नही पाता है। महाराणाप्रताप की साँसे भी इसी आशा में अटकी हैं कि मेवाड को स्वाधीनता तथा पुराना गौरव पुनः कब प्राप्त होगा।
21. 'दुर्बलता इस अस्थि मांस की'में अस्थि मांस से कवि का क्या आशय है? उसकी किस दुर्बलता की ओर कवि ने संकेत किया है?
उत्तरः–भारत पराधीनता एवं सांस्कृतिक पतन के जाल में फंसा है।वह उस से मुक्ति चाहता है। किन्तु भारतीय उसके पुनरुद्धार अशक्त और अक्षम है।इस पंक्ति में अस्थि मांस से तात्पर्य 'भारतीय जनो' से है।

22. 'कालिमा बिखरती है संध्या के कलंक–सी।'का तात्पर्य क्या है?
उत्तरः–अन्धकार संध्या काल के लिए कलंक जैसा है इसने संध्या के सुन्दर स्वरूप को अनाकर्षक बना दिया है। महाराणा प्रताप का गौरव पूर्ण समय तथा उच्च आदर्श आज विस्मृति के अन्धेरे में डूबे हुए है।

पाठ का नाम – कुरूक्षेत्र (तृतीय सर्ग –संकलित)

1. कुरूक्षेत्र काव्य के अनुसार शांति का प्रथम न्यास है ?
   उत्तर– कुरूक्षेत्र काव्य के अनुसार शांति का प्रथम न्यास न्याय है ।
2. कवि ने नर व्याघ्र किसे कहा है ?
   उत्तर– कवि ने नर व्याघ्र दुर्योधन (सुयोधन) को कहा है ।
3. राम तीन दिन तक सागर से क्या मांगते रहे ?
   उत्तर– राम तीन दिन तक सागर से रास्ता मांगते रहे ।
4. हाथ में तलवार उठाकर युद्ध में मरना मारना अनुचित कब नहीं होता है ?
   उत्तर–जब युद्ध अपने अधिकारों की रक्षा के लिए होता है।
5. कुरूक्षेत्र का युद्ध किन–किन के बीच हुआ था ?
   उत्तर– कुरूक्षेत्र का युद्ध कौरव और पांडवों के बीच हुआ था ।
6. क्षमा,दया,सहनशीलता आदि गुण कब पूजनीय होते है ?
   उत्तर–जब हाथों में हथियार और बल हो ।
7. कुरूक्षेत्र कविता में युद्ध और शांति पर किन किनके बीच विचार विमर्श हुआ है उत्तर–युधिष्ठर और भीष्म के बीच
8. कुरूक्षेत्र है–
   उत्तर– खण्ड़ काव्य
9. लोग किस भुजंग से डरते है ?
   उत्तर–जिसके पास भयानक विष हो, लोग उस भुजंग से डरते है ।
10. विनय की दीप्ति किसमें बसती है ?
    उत्तर– विनय की दीप्ति बाण में अर्थात् पराक्रम में बसती है ।
11. सहिष्णुता किसके लिए अभिशाप है ?
    उत्तर–जिसमें प्रतिकार की सामर्थ्य नहीं है,जो अन्याय का डटकर विरोध नहीं कर पाता है, सहिष्णुता उसके लिए अभिशाप है ।
12. आज की कृत्रिम शांति किसकी रखवाली करती है ?
    उत्तर– आज की कृत्रिम शांति अन्याय,शोषण,स्वार्थपरता आदि की रखवाली करती है ।
13. वास्तव में युद्ध करने के लिए दोषी कौन है ?
    उत्तर–जो न्योचित अधिकार मांगने पर भी न दे,अन्याय और शोषण से स्वत्व देने में बाधक बने, वही युद्ध करने के लिए दोषी है ।

CBEO BHINDER

14. "कहो शांति वह क्या है,जो अनीति पर स्थित....।" इसमें कवि ने किस पर आक्षेप किया है ?

उत्तर–इसमें कवि ने बताया है कि युद्ध को निन्दनीय माना जाता है,परन्तु अनीति पर स्थित शान्ति को भी उतना ही निन्दनीय मानना चाहिए। इस तरह कवि ने इसमें अनीति–अन्याय एवं शोषण कर कृत्रिम शान्ति स्थापित करने वालों पर आक्षेप किया है ।

15. सब समेट प्रहरी बिठाकर,कहती कुछ मत बोलो– इस पंक्ति में किसके विषय में बताया गया है ?

उत्तर–इसमें शोषक–वर्ग द्वारा स्थापित शान्ति के विषय में बताया गया है कि अनीति पर स्थित शान्ति सब कुछ समेटकर सभी को अपने वश में कर तथा सब का पहरा बिठाकर कहती है कि मेरे विरूद्ध कुछ मत कहो,कोई मेरा विरोध मत करो ।

16. अहंकार या घृणा ? कौन दोषी होगा उस रण का ? इसमें अहंकार और घृणा किसके प्रतीक बताये गये है ?

उत्तर–अहंकार शोषकों का तथा घृणा शोषितो का प्रतीक है।

17. कृत्रिम शांति किससे डरती है और क्यों ?

उत्तर– कृत्रिम शांति अपने आप से डरती है क्योंकि कृत्रिम शांति रखने वाला व्यक्ति अपनी कमजोरियों को अच्छी तरह जानता है। उसे आशंका रहती है कि कोई भी और कभी भी उसका विरोधी हो सकता है। इसलिए कृत्रिम शांति केवल तलवार पर विश्वास करती है।

18. न्यायोचित अधिकार यदि मांगने से न मिले तो वीर लोग क्या करते है ?

उत्तर– न्यायोचित अधिकार यदि मांगने से न मिले तो वीर लोग युद्ध करके प्राप्त कर लेते हैं। जो युद्ध न कर पाता है, वह कायर कहलाता है। अतएव वीर लोग न्यायोचित अधिकार पाने के लिए पराक्रम का प्रदर्शन करते है।

19. अत्याचार सहन करने का कुफल क्या होता है ?

उत्तर– अत्याचार सहन करने का कुफल यह होता है कि उसे सब कायर और कमजोर समझतें है,उसका हर तरह से शोषण–उत्पीडन करते है तथा उसकी न्यायोचित मांग को भी अस्वीकार कर देते है। उसकी दया,क्षमा आदि भी दोष मानी जाती है।

20. क्षमा किस पुरूष को शोभती है ?

उत्तर–क्षमा उस पुरूष को शोभती है ,जिसमें पराक्रम दिखाने का ओजस्वी गुण हो और जो अपने शौर्य से दूसरों को दण्डित कर सके। विनाशक शक्ति रखने वाले पुरूष को क्षमा शोभती है। जैसे विषदंत रखने वाला भुजंग यदि किसी को नहीं काटे,तो भी उसका भय बना रहता है।

21. "पौरूष का आतंक मनुज, कोमल होकर खोता है।" इसका आशय बताइए।

उत्तर–यदि व्यक्ति क्षमाशील और विनम्र बना रहता है तथा अन्यायी के सामने अपने पराक्रम का प्रदर्शन नहीं करता है,तो उस दशा में उसके शौर्य–पराक्रम के आतंक से कोई भी नहीं डरता है। उस स्थिति में उसका पौरूष प्रभावहीन हो जाता है और हर कोई उसका अनादर करने लगता है।

22. "उठी अधीर धधक पौरूष की, आग राम के शर से ।"

राम के शर से पौरूष की अग्नि धधकने का कारण समझाइये।

उत्तर–सीता की प्राप्ति के लिए श्रीराम ने लंका पर आक्रमण करने का निश्चय किया। वे समुद्र तट पर वानर सेना सहित आए और समुद्र से प्रार्थना करते रहे कि उन्हें सेना सहित लंका में जाने का मार्ग दे दे। तीन दिन तक श्रीराम द्वारा प्रार्थना करने पर भी उस समुद्र ने कोई उत्तर नहीं दिया। तब

CBEO BHINDER

क्रोध में आकर श्रीराम ने समुद्र को सोखने के लिए अपना अग्नि बाण निकाला। इस तरह श्रीराम के शर से पौरूष की अग्नि धधकने लगी।

23. कृत्रिम शांति और स्वाभाविक शांति में क्या अंतर है ?

उत्तर– कृत्रिम शांति शंका ग्रस्त रहती है,वह अपने आप से डरती है। कृत्रिम शांति केवल तलवार से स्थापित की जाती है। यह अस्थायी होती है। जबकि स्वाभाविक शांति व्यक्ति के मन को निश्चिन्त रखती है। उसमें परस्पर विश्वास,श्रद्धा,भक्ति एवं आपसी प्रेम–भाव बना रहता है। स्वाभाविक शांति हार्दिक भावना पर टिकी रहती एवं स्थायी होती है।

24. धर्मराज युधिष्ठिर का न्यायोचित अधिकार क्या था और वे उसे किससे मांग रहे थे ?

उत्तर–तेरह वर्ष का वनवास भोगने के बाद वह अपना राज्य प्राप्त करने का न्यायोचित अधिकार था,उसे कौरवों से अर्थात धृतराष्ट्र एवं दुर्योधन से मांग रहे थे।

25. "कुरुक्षेत्र" (तृतीय सर्ग) से संकलितांश का मूल भाव लिखिए ।

उत्तर– संकलितांश का मूल भाव यह है कि छल–कपट,अनीति,शोषण आदि से वास्तविक शांति स्थापित नहीं हो सकती है। अन्याय से स्थापित शांति शोषण का कारण बनती है। अन्याय का प्रतिरोध अवश्य ही करना चाहिए।

26. " कहो कौन दायी होगा, उस दारूण जगदहन का?"–युद्धोन्माद से होने वाले विनाश का उत्तरदायी किसे मानना उचित होगा ?

उत्तर––युद्धोन्माद से होने वाले विनाश का उत्तरदायी अहंकारी एवं अन्यायी शासक वर्ग को ही मानना उचित होगा ।

27. पठित कविता में युधिष्ठिर के चरित्र की क्या विषेषताएँ बतायी गई है ?

उत्तर–युधिष्ठिर को सहनशील,विनम्र,क्षमाशील,दयालु,तप एवं तेज से युक्त तथा धार्मिक प्रवृत्ति का बताया गया है। युधिष्ठिर पुण्यात्मा एवं न्यायप्रिय था इस कारण उसे धर्मराज भी कहा गया है।

28. कुरूक्षेत्र कविता का मूल संदेश लिखिए ।

उत्तर– कुरूक्षेत्र कविता में कवि दिनकर जी ने भीष्म पितामह और युधिष्ठिर के मध्य हुए वार्तालाप को बताया है।इसमें कवि ने समाज में व्याप्त अशान्ति एवं युद्ध की समस्या पर विचार व्यक्त किये है। अशान्ति का मूल कारण सामाजिक विषमता एवं षोषण है। जब तक समता स्थापित नहीं हो जाती तब तक शान्ति की स्थापना असम्भव है। कवि ने न्यायोचित अधिकार प्राप्त करने के लिए युद्ध एक कारगार उपाय बताया है। शोषकों के प्रति क्षमा, दया,सहनशीलता आदि का व्यवहार न कर प्रतिशोध एवं पौरूष का भाव रखना ही उचित रहता है।

29. दिनकर की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।

उत्तर– दिनकर की काव्यगत विशेषताएँ निम्नलिखित है–

1 समयानुसार विचार– आज के युग में व्याप्त अशान्ति और युद्ध की समस्या पर विचार व्यक्त किये है तथा समता की स्थापना से ही सच्ची शान्ति स्थापित करने के लिए कहा है।

2 क्रान्ति का स्वर– उनके काव्य में क्रान्ति का स्वर शोषण,उत्पीडन एवं अन्याय को लेकर तीव्र रूप में उभरा है।

3 शिल्प–सौन्दर्य– दिनकर के काव्य की खडी बोली तत्सम,तद्भव,देशज व अन्य शब्दों से समन्वित है। वीर रस,ओज गुण,विविध छंद प्रयोग एवं अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग इनके काव्य में दिखाई देता हे।

CBSEPUNJABINDER

30. कवि दिनकर के व्यक्तित्व का परिचय दीजिए।

उत्तर– कवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितम्बर,1908 ई. में सिमरिया,मुंगेर (बिहार) में एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ। इनके पिता रवि सिंह एवं माता मनरूप देवी थी। मात्र 2 वर्ष की अवस्था में ही इनके पिता का स्वर्गवास हो जाने से इनका पालन पोषण उनकी मां द्वारा किया गया। आपकी प्राथमिक शिक्षा गाँव के प्राथमिक विद्यालय में तथा मिडिल तक की शिक्षा राष्ट्रीय मिडिल स्कूल में प्राप्त की। सन् 1965 से 1971 तक भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार रहे।

31. कवि दिनकर के कृतित्व का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–दिनकरजी की पद्य रचानाओं में रेणुका, हुंकार, रसवन्ती, नील कुसुम, कुरूक्षेत्र, रश्मिरथी,उर्वशी, द्वन्द्वगीत, इतिहास के आँसू, सीपी और शंख, नीम के पत्ते, नये सुभाषित, आत्मा की आँखे, बापू, दिल्ली, प्रणभंग, धूप और धुआँ, चक्रवात और परशुराम की प्रतीक्षा आदि प्रसिद्ध रही है।

पद्य के अतिरिक्त गद्य में भी उच्च स्तरीय साहित्य की रचना की है। उनमें संस्कृति के चार अध्याय, मिट्टी की ओर, काव्य की भूमिका, पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण, हमारी सांस्कृतिक कहानी एवं शुद्ध कविता की खोज आदि प्रमुख थें।

32. कवि के अनुसार क्षमा किसे शोभती है ?

(अ)जो धनवान हो (ब) जो शक्तिशाली हो

(स) जो विनम्र हो (द) जो सहनशील हो

सही उत्तर– (ब)

33. कवि दिनकर के अनुसार कृत्रिम शान्ति की आधारशिला है–

(अ) शस्त्र बल (ब) प्रेम और दया

(स) कोमल ह्रदय (द) न्याय और करूणा

सही उत्तर– (अ)

34. लोभ किया क्यों भरत–राज्य का ? फिर आये क्यों वन से ? यह कथन किसे लक्ष्य कर कहा गया है ?

(अ) अर्जुन को (ब) श्री राम को

(स) युधिष्ठिर को (द) भीष्म पितामह को

सही उत्तर– (स)

पाठ– 11 सुमित्रा नन्दन पंत – भारत माता, धरती कितना देती है

बहुविकल्पी प्रश्न :–

प्र01 :–''भारत माता ग्रामवासिनी'' शीर्षक कविता के कवि हैं–

(अ) माखन लाल चतुर्वेदी (ब) मैथिलीशरण गुप्त

(स) सुमित्रा नन्दन पंत (द) इनमें से कोई नहीं

उत्तर : (स) सुमित्रा नन्दन पंत

CBEO BHINDER

प्र02 :–''भारत माता ग्रामवासिनी'' शीर्षक कविता उनके किस काव्य में संग्रहित हैं–
(अ) उच्छवास (ब) ग्राम्या (स) वीणा (द) इनमें से कोई नहीं
उत्तर : (ब) ग्राम्या
प्र03 :– सुमित्रा नन्दन पंत का जन्म कब हुआ था?
(अ) 20 मई 1889ई0 को (ब) 20 मई 1900ई0 को
(स) 20 मई 1902ई0 को (द) इनमें से कोई नहीं
उत्तर : (ब) 20 मई 1900ई0 को
प्र04 :– सुमित्रा नन्दन पंत का जन्म कहाँ हुआ था?
(अ) वाराणसी में (ब) गोरखपुर में (स) कोसानी में (द) इनमें से कोई नहीं
उत्तर : (स) कोसानी मे
प्र05 :– सुमित्रा नन्दन पंत कैसे कवि के रुप में जाने जाते हैं।
(अ) प्रकृति के सुकुमार कवि (ब) हिन्दी कोकिल कवि (स) दोनों (द) इनमें से कोई नहीं
उत्तर : (अ) प्रकृति के सुकुमार कवि

प्र06 :– ''भारत माता ग्रामवासिनि'' कविता में चित्रित भारतमाता को कहाँ की निवासिनि बताया गया है।
(अ) गाँवों की (ब) नगरों की (स) दोनों (द) इनमें से कोई नहीं
उत्तर : (अ) गाँवों की
प्र07 :– भारत माता का अमृत समान दूध बताया गया है–
(अ) सत्याग्रह (ब) अहिंसा (स) पंचशील (द) करुणा
उत्तर : (ब) अहिंसा
प्र08 :– सुमित्रा नन्दन पंत का मूल नाम था–
(अ) गुसाईं दत्त (ब) राम दत्त (स) हरि दत्त (द) प्रयाग दत्त
उत्तर : (अ) गुसाईं दत्त
प्र09 :– ''धरती कितना देती है'' कविता में कवि ने संदेश दिया है–
(अ) भारत रत्न प्रसविनी है (ब) हम जैसा बोएंगे वैसा ही पाएंगे
(स) मैं फल–फूलकर मोटा सेठ बनुंगा (द) बचपन में नासमझी रहती है
उत्तर : (ब) हम जैसा बोएंगे वैसा ही पाएंगे
प्र010 :– पंत जी के किस कविता संग्रह पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ–
(अ) ग्राम्या (ब) युगान्त (स) चिदम्बरा (द) वीणा
उत्तर : (स) चिदम्बरा

अतिलघुत्रात्मक प्रशन :–
प्र01 :– सुमित्रा नन्दन पंत का जन्म कहाँ हुआ था?
उत्तरः– सुमित्रा नन्दन पंत का जन्म उत्तराखण्ड के जिला अल्मोडा के कोसानी नामक ग्राम में सन् 1900 में हुआ था।
प्र02 :– सुमित्रा नन्दन पंत का मूल नाम क्या था?
उत्तरः– सुमित्रा नन्दन पंत का मूल नाम गुसाईं दत्त था।
प्र03 :– पंत जी को साहित्य सेवा के लिए भारत सरकार ने कौन से पुरस्कार से अलंकृत किया?
उत्तरः– सुमित्रा नन्दन पंत को साहित्य सेवा के लिए भारत सरकार ने सन 1961 में पदम भूषण से अलंकृत किया।
प्र04 :– सुमित्रा नन्दन पंत को किस कविता संग्रह पर ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया ?
उत्तरः– सुमित्रा नन्दन पंत कोचिदम्बरा कविता संग्रह पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

CBEO BHINDER

प्र05 :– सुमित्रा नन्दन पंत की काव्य भाषा कैसी है ?
उत्तरः– सुमित्रा नन्दन पंत की काव्य भाषा संस्कृत निष्ठ साहित्यिक खडी बोली है।
प्र06 :– सुमित्रा नन्दन पंत को साहित्य आकादमी पुरस्कार उनकी किस रचना के लिए मिला?
उत्तरः– सुमित्रा नन्दन पंत कोसाहित्य आकादमी पुरस्कार ''अपनी कला और बूढा चाँद'' रचना पर मिला।
प्र07 :– सुमित्रा नन्दन पंत द्वारा रचित महाकाव्य का क्या नाम है?
उत्तरः– सुमित्रा नन्दन पंत द्वारा रचित महाकाव्य का नाम लोकायतन है।
प्र08 :– सुमित्रा नन्दन पंत को हिन्दी की किस काव्यधारा का कवि माना जाता है?
उत्तरः– सुमित्रा नन्दन पंत को हिन्दी की छायावादी काव्यधारा का कवि माना जाता है।
प्र09 :– सुमित्रा नन्दन पंत के काव्य पर किसका प्रभाव है?
उत्तरः– सुमित्रा नन्दन पंत के काव्य पर अरविन्द, महात्मा गांधी, कार्लमार्क्स आदि का प्रभाव है।
प्र010 :– सुमित्रा नन्दन पंत को ''प्रकृति का चितेरा''क्यों कहा जाता है?
उत्तरः– सुमित्रा नन्दन पंत ने प्रकृति के कोमल, सुन्दर व सजीव चित्र अपनी कविताओं में अंकित किये हैं इसलिए उन्हें प्रकृति का चितेरा कहा जाता है।
प्र011 :–भारत माता कविता किस संग्रह से ली गई है?
उत्तरः–भारत माता कविता ''ग्राम्या'' नामक कविता संग्रह से ली गई है।
प्र012 :– भारत माता को ग्राम वासिनी क्यों कहा गया है?
उत्तरः– भारत माता को ग्राम वासिनी कहा गया है क्योंकि भारत के अधिकांश लोग गाँव में रहते हैं।
प्र013 :– भारत माता को गीता प्रकाशिनी कहने का क्या कारण है?
उत्तरः– श्रीमदभगवत् गीता भारतवर्ष में ही लिखी गई है इसी कारण भारत माता को गीता प्रकाशिनी कहा गया है।
प्र014 :–''भारत माता'' कविता में भारत माता का आँचल कैसा दिखता है?
उत्तरः– भारत माता कविता में भारत माता का आँचल श्यामल, धूलभरा और मैला दिखता है।
प्र015 :– भारत माता को किसकी प्रकाशिनी बताया गया है?
उत्तरः– भारत माता को गीता की प्रकाशिनी बताया गया है।
प्र016 :– ''धरती कितना देती है'' कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है?
उत्तरः– ''धरती कितना देती है'' कविता में कवि ने संदेश दिया है कि हम जैसे बीज बोयेंगे वैसे ही फल हमें मिलेंगे।
प्र017 :– ''धरती कितना देती है'' कविता में कवि ने किस को अपनी भूल माना है?
उत्तरः– ''धरती कितना देती है'' कविता में कवि ने पैसे बोने के काम को अपनी भूल माना।
प्र018 :– कवि ने भारत माता के तप संयम को सफल क्यों कहा है?
उत्तरः– भारत माता को गांधी जी की अहिंसा का बल प्राप्त हो चुका है इसलिए वह परतंत्रता तथा दुःख दरिद्रता से मुक्त होंगी।
प्र019 :– ''चिंतित भ्रकुटी–क्षितिज तिमिरांकित'' में कौन सा अलंकार है?
उत्तरः– ''चिंतित भ्रकुटी–क्षितिज तिमिरांकित'' में रुपक अलंकार है ।
प्र020 :– ''धरती कितना देती है'' कविता से कोई पंक्ति छांट कर लिखो जिसमें कवि ने अपनी भूल माना है?
उत्तरः– वह पंक्ति है– ''मैं अबोध था, मेंने गलत बीज बोए थे''।
प्र021 :– ग्रीष्म तपे–वर्षा फूली–शरदें मुस्काई में किस का वर्णन है ?
उत्तरः– इन पंक्तियों में कवि ने छः ऋतुओं का वर्णन किया है।
प्र022 :– कवि क्या देखकर विस्मय से हर्ष विमूढ हो गया?
उत्तरः– कवि अपने आंगन में छोटे–छोटे सेम के नए उगे हुए पौधों को देखकर विस्मय से हर्ष विमूढ होगया।

DEO BHINDER

प्र023 :– ''डिम्ब तोड़कर निकले–चिडियों के बच्चों से'' किसको कहा गया है?
उत्तरः– सेम के बीज को तोड़ कर जो छोटे पौधे निकले वो ऐसे प्रतीत हो रहे हैं जैसे डिम्ब तोड़ कर चिड़िया के बच्चे निकले हों।
प्र024 :– ''रत्न प्रसविनी है वसुधा अब समझ सका हुँ'' कहने का क्या आशय है?
उत्तरः–सेम के बीजों को उगा हुआ और उनपर लदी फलियों को देखकर कवि ने माना कि धरती बहुमूल्य फसलें पैदा करती हैं।
प्र025 :– कवि धरती पर किसकी फसल उगाना चाहता है?
उत्तरः– कवि धरती पर प्रेम, मानवता, सक्षमता व ममता की फसल उगाना चाहता है।
प्र026 :– कवि ने बचपन में धनवान बनने के लिए पैसे बोए थे, आज धनवान बनने के लिए लोग क्या करते हैं?
उत्तरः– आज धनवान बनने के लिए लोग नौकरी या व्यवसाय करते हैं। कुछ लोग भ्रष्टाचार या व्यभिचार से भी धन कमाते हैं।

लघुत्तरात्मक प्रश्न :–

प्र001 :–गाम वासिनी भारत माता किस हालत में दिखती है?
उत्तरः–ग्राम वासिनी भारतमाता का आँचल धूलभरा और मटमेला है, उसकी आंखों में गंगा जमुना के आँसूं हैं। वह दीन है तथा नीचे आँखें झुकाए है। उसके होठों पर रुदन तथा मन में विषाद है। वह अपने घर में ही प्रवास कर रही है किन्तु मिट्टी की मूर्ती के समान दरिद्र है।

प्र02 :– सुमित्रा नन्दन पंत का जीवन परिचय लिखिए?
उत्तरः– सुमित्रा नन्दन पंत का जन्म उत्तराखण्ड के जिला अलमोडा के कोसानी नामक ग्राम में सन् 1900 में हुआ। इनका मूल नाम गुसाईं दत्त था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा अल्मोडा में ही हुई। इन्हें प्रकृति से असीम लगाव था, इसीलिए इन्हें प्रकृति का सुकुमार कवि भी कहा जाता है। इनकी प्रमुख कृतियाँ वीणा, उच्छावास, पल्लव, गूंजन, लोकायतन, मानसी, युगपथ, सत्यकाम आदि हैं।
इन्हें ''चिदम्बरा'' के लिए भारतीय ज्ञानपीठ, ''लोकायतन'' के लिए सोवियत नेहरु शांति पुरस्कार एवं हिन्दी साहित्य की अनवरत सेवा के लिए उन्हें पदम्भूषण् से अलंकृत किया गया है। इनका निधन 28 दिसम्बर 1977 को हुआ।
प्र03 :–भारत माता किसका प्रतीक है? इस कविता में चित्रण का मूल बिन्दु क्या है?
उत्तरः–भारतमाता भारत के जनों का प्रतीक है। इस कविता में कवि ने भारत माता के माध्यम से भारत के ग्रामीण जीवन का सजीव वर्णन किया है। भारत के अधिकांश लोग गांव में रहते हैं। वे दरिद्र, अभावग्रस्त और अशिक्षित हैं। भारतियों की इसी दुर्दशा का वर्णन कवि ने इस कविता में किया है।
प्र04 :– मैं अवाक् रह गया वंश कैसे बढता है– कवि अवाक् क्यों रह गया?
उत्तरः– कवि ने देखा कि सेम के पौधे तेजी से बढने लगे और बेलें बल खाकर आँगन में लहरा उठीं उन पर मखमली चँदोबे लग गए। बेलें बाडे की टाटियों का सहारा लेकर तेजी से ऊपर बढने लगीं। सेम के पौधों के परिवार को तेजी से बढ़ता देख कर कवि अवाक् रह गया कि किसी के वंश या परिवार की वृद्धी इसी प्रकार होती है।

प्र05 :– कवि के दृष्टि में पृथ्वी पर किसकी फसलें उगाना आवश्यक है और क्यों?
उत्तरः– कवि चाहता है कि हमारी धरती सुख सुविधाओं से सम्पन्न हो। मनुष्यों में काम करने की क्षमता का विकास हो। मनुष्यों के बीच ममता एवं समानता का भाव हो। अतः इसके लिए कवि की दृष्टि में पृथ्वी पर मानव ममता, समता और क्षमता की फसलें उगाए।

प्र06 :—''मैं अबोध था, मेंने गलत बीज बोए थे'' कवि ने बचपन मे क्या गलती की थी ?

उत्तरः—कवि ने बचपन में जमीन में पैसे बोए थे। उसने सोचा था कि पैसे के पेड़ उगेंगे और उन पर रुपयों के फल लगेंगे वह खूब धनवान हो जाएगा। कवि का ऐसा सोचना ही उसकी भूल थी।

प्र07 :—अर्द्धशती लहराती निकल गई है तब से— कवि के आधी सदी के जीवन में आई ऋतुओं का वर्णन किजिए।

उत्तरः— कवि के जीवन की आधीसदी व्यतीत हो गई इस बीच छः ऋतुएं बारी—बारी से उनके जीवन में अनेक बार आई और गई हैं। बसन्त आने पर पुष्प पल्लवित हुए, पतझड में पत्ते सूख कर गिरे, भयंकर ग्रीषम ताप ने उनहें तपाया फिर वर्षा ऋतु ने वृक्षों को नया जीवन दिया, शरद के बाद शिशिर और हेमन्त ऋतुओं का आगमन हुआ और तेज सर्दी से मुंह से 'सी—सी' की आवाज निकली है।

प्र08 :—''देखा आंगन के कौने में कई नवागत छोटे—छोटे छांता ताने खडे हुए हैं''— इन पक्तियों का आशय स्पष्ट किजिए ?

उत्तरः—आंगन के कोने में कवि ने सेम के बीज बोए थे। वे बीज कुछ दिनों के बाद अंकुरित हो गए थे। ये छोटे—छोटे पौधे नए आगन्तुक जैसे थे, जो कि मानों छोटे—छोटे छांते लेकर खडे हों। उन अंकुरों पर बीज के जो डिम्ब थे, वे तने हुए छांते के समान दिखते थे।

प्र09 :—''हरे—हरे सौ झरने फूट पडे ऊपर को''इन पक्तियोंमें झरने किन्हें बताया गया है? स्पष्ट किजिए।

उत्तरः—धरती में बोए सेम के बीज बडी—बडी बेलें बन गई जो बाडे की टांटी के सहारे ऊपर की और फेलने लगीं, उस पर लगीं सैकडों कोंपलें या शाखाएँ ऐसी लगती थीं मानो ऊपर की ओर हरे—हरे सौ झरने फूट पडे हों।

प्र010 :—कवि सुमित्रा नन्दन पंत की कविता '' भारत माता'' का प्रतिपाद्य बताते हुए उदाहरण सहित समीक्षा किजिए?

उत्तरः—भारत—माता कविता पंत जी द्वारा रचित भारत की स्वतंत्रता पूर्व की यथार्थ स्थिति को दर्शाती है। इस में उस समय के भारत की दूर्दशा और ग्रामीण जीवन की अभाव ग्रस्त दशा का यथार्थ चित्रण किया गया है। उस समय भारत का ग्रामीण जीवन दरिद्रता से ग्रस्त था। किसान और श्रमिक शोषण से ग्रस्त बुरी दशा में जीवन यापन करते थे। पराधीनता के कारण उनके मन सहनशील, निराशा, कुण्ठा एवं वेदना से भर गए थे।

पाठ—13, गुल्ली—डंडा—प्रेमचन्द

प्र.1— इस कहानी में कथानायक विलायती खेलों का सबसे बडा ऐब क्या मानते हे?

(क) मंहगा होना (ख) सस्ता होना

(ग) चोट का डर (घ) अधिक समय लगना

उत्तर (क)

प्र.2— कहानी में कथानायक और उसका मित्र गुल्ली—डंडा खेलने कहां गए ?

(क) रेल्वे स्टेशन (ख) पाठशाला

(ग) भीमताल (घ) अस्पताल

उत्तर (ग)

CBEOBHINDER

प्र.3— प्रेमचन्द द्वारा कुल कितने उपन्यास लिखे गये ?

(क) 10 (ख) 11

(ग) 15 (घ) 14

उत्तर (ग)

प्र.4— प्रेमन्द द्वारा कहानियों के विकास क्रम को कितने काल खण्डों में बांट सकते है ?

(क) 3 (ख) 5

(ग) 7 (घ) 6

उत्तर (क)

प्र.5— प्रेमचन्द का जन्म कब हुआ था ?

(क) 30 जुलाई 1880 (ख) 31 जुलाई 1880

(ग) 29 जुलाई 1880 (घ) 31 अगस्त 1880

उत्तर (ख)

प्र.6— प्रेमचन्द के किन्ही पांच कहानी संग्रहों के नाम लिखिए ?

उत्तर— प्रेमचन्द के पांच कहानी संग्रह है—

(1) सप्त सरोज (2) नवनिधि (3) प्रेम पूर्णिमा

(4) समर यात्रा (5) मान सरोवर

प्र.7— प्रेमचन्द को किसने ''उपन्यास सम्राट'' की उपाधि से नवाजा था ?

उत्तर— प्रेमचन्द को बंगाली के प्रसिद्ध साहित्यकार शरत चन्द ने उपन्यास सम्राट की उपाधि से नवाजा था।

प्र.8— प्रेमचन्द जी किस युग के प्रसिद्ध कहानीकार थे ?

उत्तर— प्रेमचन्द जी छायावादी युग के प्रसिद्ध कहानीकार थे।

प्र.9— कथानायक के अनुसार बच्चों में ऐसी कौनसी शक्ति होती है, जो बडों में नही होती ?

उत्तर— कथानायक के अनुसार बच्चों में मिथ्या को सत्य बना लेने की शक्ति होती है, जो बडों में नही होती।

प्र.10— लेखक प्रेमचन्द की जीवनी के बारे में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ?

उत्तर— प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 ई.में वाराणसी में लमही गांव में हुआ। इनकी माता का नाम आनन्दी देवी एवं पिता का नाम मुंशी अजायबराय था। इनका मूल नाक धनपतराय श्रीवास्तव था। सात वर्ष की अवस्था में उनकी माता का तथा चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहान्त हो गया था। 1906 में इन्होनें विधवा विवाह का समर्थन करते हुए बाल विधवा शिवरानी देवी से दूसरा विवाह किया। उनके तीन संताने हुई। सोजे वतन पर रोक तथा लेखन बन्द करने के अंग्रेज सरकार के आदेश के बाद प्रेमचन्द नाम से लेखन प्रारम्भ किया। उर्दू में लेखन कार्य नवाबराय के नाम से करते रहे थे बंगाली के प्रसिद्ध साहित्यकार शरद चन्द्र ने उपन्यास सम्राट की उपाधि दी। इनका अंतिम उपन्यास मंगलसूत्र है। इनकी प्रमुख रचनाएं गबन, गोदान, कर्मभूमि आदि । इन्होनें माधुरी एवं हंस नामक पत्रिका का सम्पादन किया।?

प्र.11— लेखक प्रेमचन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर टिप्पणी लिखिए ?

उत्तर— प्रेमचन्द का व्यक्तित्व— हिन्दी कहानी साहित्य में मुशी प्रेमचन्द एक नये युग का सुत्रपात करते है। इनका जन्म सन 1880 में तथा निधन सन 1936 में हुआ। ये पारिवारिक, आर्थिक संकटों के कारण मेट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर शिक्षक बन गये। इन्होनें हिन्दी में प्रेम चन्द के नाम से कथा लेखन प्रारम्भ किया। प्रेमचन्द का कृतित्व— इन्होनें कुल 301 कहानियां लिखी जो कि मान सरोवर (आठ भाग) में संकलित है। उन्होनें सेवा सदन, काया कल्प, प्रेमाश्रय, कर्मभूमि, गबन, गोदान, रंगभूमि आदि उपन्यास भी लिखे। हिन्दी साहित्य जगत में उपन्यास सम्राट के नाम से जाने जाते है।

प्र.12— ''कौन निःस्वार्थ किसी के साथ सलूक करता है ''गुल्ली—डंडा कहानी कथानायक ने ऐसा किस घटना के संदर्भ में कहा, साथ ही इस कथन पर अपने मौलिक विचार संक्षेप में लिखिए ?

उत्तर— कथानायक ने यह बात उस घटना के संदर्भ में कही है जब गया उसे गुल्ली डंडा के खेल में पिदा रहा था। वह खेल में न पिदे इसी स्वार्थ के वशीभूत होकर कथानायक ने कल ही गया को अमरूद खिलाया था। अमरूद खिलाकर भी दांव दे यह तो कोई बात नही हुई। इसी उद्धेश्य को ध्यान में रखकर आज हमारे समाज में भी अधिकांश लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए इस प्रकार का व्यवहार करते हुए दिखाई पडते है, अर्थात रिश्वत का लेन—देन करते है।

प्र.13— प्रेमचन्द की ''गुल्ली—डंडा'' कहानी के आधार पर बताइये कि पद और प्रतिष्ठा मनुष्य और मनुष्य के बीच के नैसर्गिक सम्बन्ध को समाप्त कर देते है ?

उत्तर— प्रकृति के अनुसार बच्चों में प्रेम और अपनत्व की स्वाभाविक भावना होती है। मनुष्य और मनुष्य के बीच उंच नीच, छोटापन बडापन आदि भेदभाव और असमानता सामाजिक पारिस्थितियों की देन है। कोई बडा होने पर किसी बडे पद पर नियुक्त होकर उच्च प्रतिष्ठा और आय का स्वामी हो जाता है। वह स्वंय को दूसरों से बडा मानता है और दूसरे भी उसके पद प्रतिष्ठा से प्रभावित होकर उसको अपने से बडा और आदर का पत्र मानते है।

''गुल्ली डंडा'' कहानी का मुख्य पात्र थानेदार का बेटा था और उसका मित्र गया एक गरीब चर्मकार था। बचपन में दोनों में उंच नीच का अन्तर नही था। कथानायक बडा होकर इंजीनियर बना। वह अपने बाल सखा गया के साथ गुल्ली डंडा खेलने गया परन्तु अपने मित्र गया के खेल में उसको वह दक्षता नही दिखाई दी जो बचपन में थी। उसे लगा कि उसकी अफसरी दोनों के बीच दीवार बन गई थी। उसके पद और प्रतिष्ठा ने दोनों में असमानता का भाव उत्पन्न कर दिया था।

प्र.14— तबादला की बात सुनकर यदि कथानायक के पिता की जगह आप होते तो क्या सोचते ? गुल्ली डंडा कहानी के आधार पर अपने मतानुसार उत्तर लिखिए?

उत्तर— तबादला की बात सुनकर यदि कथानायक के पिता के स्थान पर हम होते तो दुःखी होने के बजाय प्रसन्न होते और हम सोचते कि अच्छा ही हुआ कि हम मन मान कर जो उपरी कमाइ करने के लिए विवश होते थे, उससे बचा, क्योंकि हमें कर्तव्यनिष्ठा के साथ ही अपना दायित्व निभाना चाहिए, इस भाव से भगवान ने मेरी सुन ली।

प्र.15— घर वालों की और खेलने वालों की दृष्टि में ''गुल्ली डंडा'' के खेल में क्या अन्तर है ? स्पष्ट किजिए?

उत्तर— कहानीकार ने बतलाया है कि घरवाले गुल्ली डंडा के खेल के सम्बन्ध में कहते है कि बालकों का भविष्य गुल्ली डंडा का खेलकर दुनियाभर पूरी हुई नौका के समान डगमगा रहे है। जबकि बालकों को गुल्ली डंडा का खेल दुनियाभर की मिठाईयों की मिठास और तमाशों का आनन्द भरा हुआ प्रतीत होता है।

प्र.16— ''तुम्हार एक दांव हमारे उपर है। वह आज ले लो।'' यहां कथानायक ने गया से कौन सा दांव लेने की बात की और क्यों? गुल्ली डंडा कहानी के आधार पर बताइए?

उत्तर— बचपन में गया के साथ दांव लेने और देने के जब कथानायक का उसके साथ विवाद हो गया था, परिणामस्वरूप गया ने उसके चांटा मार दिया था और वह रोता हुआ घर की ओर भाग गया था। कथानायक ने उस दांव लेने की यहां बात कही, वह अफसर बनने के बाद गया के साथ खेलने के लिये अधीन था। क्योंकि गांव आने के बाद उसके मन में बचपन के खेल की स्मृतियां जाग रही थी।

प्र.17— कथानायक और गया के बीच स्मृतियां सजीव होने से कौनसी बात बाधा बनती है अैर क्यों ? गुल्ली डंडा कहानी के आधार पर बताइए?

उत्तर— कथानायक और गया के बीच स्मृतियां सजीव होने पर स्तर की कमी वाली बात बाधा बनती है, क्योंकि कथानायक अफसर बन गया था और गया ठहरा एक साईस। वह अपने आप को उसके बराबर का नही समझता था परिणाम स्वरूप उसमें हीन भावना पनप गयी थी।

प्र.18— अफसर कथानायक की खेल में सारी बेकायदगियां देखकर भी गया क्यों कुछ भी नही कहता था ? गुल्ली डंडा कहानी के आधार पर बताइए?

उत्तर— अफसर कथानायक की खेल में सारी बेकयादगियां देखकर भी उसका साथी गया कुछ भी इसलिए नही कहता था, क्योंकि वह एक मजदूर (सईस) था और कथानायक उंचे ओहदे पर कार्यरत अफसर था वह अफसर के साथ बोलने में हीनता महसूस कर रहा था। इसके साथ हीवह अफसर के सम्मान ही देना चाहता था और उसे हराना उसका अपमान करना भर की समझता था।

प्र.19— कथानायक को गुल्ली डंडा का खेल खेलों का राजा क्यों लगता है ?

उत्तर— कथानायक को गुल्ली डंडा खेलों का राजा इसलिए लगता है क्योंकि यह सब खेलों से अच्छा है तथा इस खेल के लिए कोई भी खर्चा नही होता है। इस खेल के लिए गुल्ली डंडा किसी भी पेड की टहनी तोडकर आसानी से बनाया जा सकता है।

प्र.20— गया के व्यक्तित्व की तीन विशेषताए बताइएं ?

उत्तर— 1— गया गरीब परिवार का पतला, लम्बा तथा काला सा लडका है।

2— वह गुल्ली डंडा का दक्ष तथा कुशल खिलाडी है, गुल्ली उसकी पकड से कभी नही छुटती।

3— गया समझदार है। वह कहानी नायक का अफसर होने के नाते अदब करता है, उसकी धांधली का विरोध नही करता किन्तु मैच देखने का आमंत्रण देकर बताता है कि वह अब भी कुशल खिलाडी है।

प्र.21— कथानायक की चारित्रिक विशेषताएं बताइए ?

उत्तर— गुल्ली डंडा कहानी के कथानायक की चारित्रिक विशेषताएं—थानेदार का पुत्र—कथानायक करने में तैनात थानेदार का बेटा है। उसके पिता सम्पन्न और प्रतिष्ठित है।

प्रेम और समानता— कथानायक के मन में अपने सहचरों के प्रति प्रेम की भावना है। वह सभी को समान समझता है।

गुल्ली डंडा को खिलाडी—वह गुल्ली डंडा खेलने का शौकीन है। वह खेल में इतना मस्त रहता है कि खाने नहाने की भी सुध नही रहती। पढाई में प्रवीण—पढने लिखनें में प्रवीण है। बडा होकर वह इंजीनियर बनता है।

बाल मित्रों तथा क्रीडा भूमि की स्मृति—वह अपने बालमित्रों तथा बचपन से सम्बन्धित स्थलों की याद से व्याकुल है जिले के दौरे पर आने के समय वह छडी उठाकर पुराने स्थलों को देखने निकलता है और पूछताछ कर अपने बालसखा गया को तलाश लेता है। वह उस भूमि से लिपटकर मिलना चाहता है।

नई जगह देखने को उत्सुक—उसके पिता का तबदाला बडे शहर में हो जाता ह। अपने मित्रों से बिछुडने की चिन्ता छोडकर वह नये स्थान देखने को उत्सुक है।

प्र.22— कहानी का शीर्षक ''गुल्ली डंडा'' क्यों रखा गया है ?

उत्तर— गुल्ली डंडा नामक खेल में गुल्ली तथा डंडा का होना आवश्यक होता है। इन दो चीजो के बिना यह खेल नही खेला जा सकता। इस कहानी में लेखक के साथ गया द्वारा गुल्ली डंडा खेले जाने का वर्णन है। विषय का केन्द्र गुल्ली और डंडा ही है। अतः सर्वथा उपयुक्त होने के कारण कहानी का शीर्षक गुल्ली—डंडा रखा गया है।

प्र.23— ''बच्चों में मिथ्या को सत्य बना लेने की शक्ति है''— लेखक तथा उसके कस्बे के साथियों की व्यवहार के आधार पर इस कथन पर टिप्पणी कीजिए ?

उत्तर— लेखक ने अपने साथियों से डींग हांकि कि वहअपने पिता के साथ जिस बडे शहर में जा रहा है, वहां आसमान को छूने वाले उंचे मकान है। वहा अंग्रेजी स्कूल है। मास्टर यदि बच्चों को मारता है तो उसको जेल जाना पडता है। उसकी गप्पों को सच मानकर उसके साथी आश्चर्य चकित हुए तथा वह उनकी दृष्टि में बहुत बडा हो गया। बच्चों में मिथ्या बातों को भी सत्य बनाने की क्षमता होती है।

प्र.24— ''गुल्ली डंडा'' कहानी की कथावस्तु क्या है ?

उत्तर— ''गुल्ली डंडा'' कहानी की कथावस्तु ग्रामीण जीवन पर आधारित है जिसमें इस सच्चाई को चरितार्थ किया गया है कि पद और प्रतिष्ठा मनुष्य मनुष्य के मध्य नैसर्गिक सम्बन्धों को समाप्त कर देती है खेल खेल में इस स्थिति का सहज उदघाटन हो जाता है।

प्र.25— ''गुल्ली डंडा'' कहानी की उद्धेश्य क्या है ? बताइयें?

उत्तर— ''गुल्ली डंडा'' कहानी प्रेमचंद की एक उद्धेश्य प्रधान कहानी है इस कहानी का उद्धेश्य यह बताना है कि आज हम पश्चिम की हर बात का अंधानुकरण करने लगे है भले ही वह हमारे लिए हानिप्रद ही क्यों न हो। यह स्थिति हमारे दिमागी दिवालियापन की द्योतक है। साथ ही यह नकल हमारे देशवासियों के लिए मंहगी पडती है क्योंकि यह हमारे देश की परिस्थितियां, संस्कारों के अनुरूप नही है इसलिए हमें अपने देश की अच्छी बातों को अपनाने में गौरव का अनुभव करना चाहिए। बिना सोचे समझे हर विदेशी चीज को अच्छी और देशी की हर बात को बुरी मान लेना ठीक प्रतीत नही होता है।

प्र.26— गरीब लडकों के सिर क्यों यह व्यसन मढते हो? इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए?

उत्तर— भारत में प्रायः सभी विद्यालयों में फीस लेकर विदेशी खेल खिलाये जाते है ये खेल काफी मंहगे पडते है भारतीय खेल सस्ते होते है, जिन्हें गरीब लडके आसानी से खेल सकते है इसी आशय से कथाकार कहता है कि गरीब लडकों की मंहगे विदेशी खेल खेलने का शौक क्यों लगाते है।

प्र.27— बीस साल बाद हुए लेखक और गया के बीच गुल्ली डंडा के खेल को आप कैसा खेल मानते है?

उत्तर— इंजीनियर बनने के बाद लेखक बीस साल बाद उसी कस्बें में पहुंचा और बालसखा गया के साथ गुल्ली डंडा खेलने भीमताल पहुंचा। इसह खेल को हम खेल नही मानते। लेखक नियम विरूद्ध खेल रहा था और धांधली कर रहा था। गया कोई विरोध नही कर रहा था। खिलाडियों के बीच जो समानता की भावना होती है, वह खेल में नही थी एक अफसर था तो दुसरा टके का मजदूर।

प्र.28— प्रेमचन्दं ने कुल कितनी कहानियां लिखी है? उनकी पहली कहानी कौनसी मानी जाती है?

उत्तर— डॉ. कमल किशोर गोयन के अनुसार प्रेमचन्द ने 301 कहानियां लिखी है। 'संसार का अनमोल रतन' को कुछ विद्धान इनकी पहली कहानी मानते है तो कुछ विद्धान इनकी 'पंचपरमेश्वर' को पहली कहानी मानते है। उनकी सभी कहानियां मानसरोवर (आठ खण्ड) में प्रकाशित है।

CBSECHANDER

प्र.29— ''गुल्ली डंडा'' आपकी दृष्टि में कैसा शीर्षक है। क्या आप इस कहानी का कोई अन्य उपयुक्त शीर्षक रखना चाहेंगे?

उत्तर— हमारी दृष्टि में कहानी का शीर्षक गुल्ली डंडा सर्वथा उपयुक्त है। इस कहानी में बाल सखाओं द्वारा गुल्ली डंडा खेलने का सजीव वर्णन है। यदि कोई अन्य शीर्षक देना ही हो तो ''अकुशल खिलाडी बेईमान खिलाडी'' एक अफसर एक मजदूर इत्यादि शीर्षक दिए जा सकते है। वैसे ''गुल्ली डंडा'' बहुत उचित शीर्षक है। अतः हम कोई अन्य शीर्षक देना नही चाहेंगे।

प्र.30— स्वंयं को कथा नायक कल्पित करते हुए गया के साथ अपने खेल की विशेषताओं पर विचार किजिए?

उत्तर— यदि मैंकुछ देर के लिए स्वंय को गुल्ली डंडा खेल का प्रमुख खिलाडी और कथानायक मान लूं तो अपने खेल में कोई विशेषता नही पाता। इसके विपरित में पाता हूं कि अपनी अकुशलता तथा अभ्यासहीनता को छिपाने के लिए मैने गया के साथ खेलते समय अनियमितता की तथा खेल के नियमों का उल्लघंन किया। मेरा पूरा खेल अनुचित तरीकों का प्रदर्शन था

मिठाईवाला
पाठ-१४ (सरयू)

प्र.-1 मिठाईवाला कहानी के कहानीकार कौन है?

उत्तर मिठाईवाला कहानी के कहानीकार भगवती प्रसाद वाजपेयी है।

प्र.-2 मिठाईवाला कहानी में मिठाईवाला किन-किन रूपों में आया था?

उत्तर मिठाईवाला कहानी में खिलौने वाला, मुरलीवाला तथा मिठाईवाला के रूप में आया था।

प्र.-3 कहानी विधा की दृष्टि से ''मिठाईवाला'' कहानी किस प्रकार की है?

उत्तर कहानी विधा की दृष्टि से ''मिठाईवाला'' कहानी बाल-मनोविज्ञान पर आधारित मनोविश्लेषणात्मक कहानी है।

प्र.-4 ''मिठाईवाला'' कहानी में किस मानवीय भावना का चित्रण हुआ है?

उत्तर ''मिठाईवाला'' कहानी में मानव-मन में छिपे वात्सल्य और उसके समर्पण भाव के साथ अपने अभावों की पूर्ति के लिए दूसरों से जुड़ने की मानवीय भावना का चित्रण हुआ है।

प्र.-5 गली के निकट के मकानों में क्यों हलचल मच जाती थी?

उत्तर फेरीवाले का मधुर मादक ढंग से गाना तथा बच्चों को स्नेहाभिषिक्त कंठ से बुलाना सुनकर निकट के मकानों में हलचल मच जाती थी।

प्र.-6 ''भला आदमी जान पड़ता है।'' रोहिणी को मिठाईवाला किस कारण भला आदमी लगा?

उत्तर मिठाईवाला बच्चों के साथ प्यार से बाते करता था और उन्हें सौदा भी सस्ता देता था। इस कारण रोहिणी को वह भला आदमी लगा।

प्र.-7 ऐसे फेरीवाले व्यवसाय से मिठाईवाला क्या चाहता था?

उत्तर ऐसे फेरीवाले व्यवसाय से वह मानसिक सन्तोष, वेदना सहन करने का धैर्य और कभी-कभी दूसरों के बच्चों से असीम सुख पाना चाहता था।

CBSE BHINDER

प्र.-8 ‘‘मुरलीवाला एकदम अप्रतिभ हो उठा।’’ इसका क्या कारण था?

उत्तर विजय बाबू ने मुरलीवाले पर आक्षेप करते हुए कहा था कि तुम लोग झूठ बोलकर अपना एहसान लादते हो। इस बात पर मुरलीवाला एकदम अप्रतिभ हो उठा।

प्र.-9 ‘‘पेट जो न कराये सो थोड़ा है’’ इस कथन से मिठाईवाले का कौनसा मनोभाव प्रकट होता है?

उत्तर रोहिणी अपने मकान से मुरली वाले की बातें सुनकर सोच रही थी कि वह भला आदमी जान पड़ता है। बच्चों से प्यार से बात करता है तथा सस्ती चीजें उनको देता हैं। समय की बात है कि वह मारा-मारा फिरता है। पेट भरने के लिए आदमी को न जाने क्या-क्या करना पड़ता है। इस कथन में रोहिणी का मिठाईवाले के प्रति दया और सहानुभूति का मनोभाव प्रकट होता है।

प्र.-10 भगवती प्रसाद वाजपेयी के व्यक्तित्व और कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर भगवती प्रसाद वाजपेयी का जन्म १८९९ ई. कानपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इन्होंने उपन्यास, नाटक, कविता एवं कहानी लेखन के द्वारा अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया। इनकी पहली कहानी यमुना १९२३ ई. में शारदा पत्रिका में प्रकाशित हुई। इन्होंने अपनी कहानियों में प्रेमचंद के समान रूढ़ियों कुरूतियों आदि का विरोध किया तथा सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया। इन्होंने बालोपयोगी साहित्य की रचना की। इनके प्रमुख उपन्यास त्यागमयी, पतवार, भूदान है तथा इन्होंने छलना और राय पिथौरा नामक नाटक भी लिखे। कविता संग्रह-ओस की बूंदे नाम से प्रकाशित हुआ।

प्र.-11 ‘‘प्रतिदिन इसी प्रकार उस मुरलीवाले की चर्चा होती।’’ मुरलीवाले की क्या चर्चा होती थी?

उत्तर मुरली वाले को लेकर यह चर्चा होती थी कि वह दुबला-पतला गोरा युवक है, बीकानेरी रंगीन साफा बाँधता है। शायद यह पहले खिलौना बेचता था अब वही मुरली बेचने लगा है। वह मुरली बजाने में ऐसा उस्ताद है कि मधुर मुरली बजाकर सभी को रिझाता है।

प्र.-12 मिठाईवाला अपने बच्चों की खोज कहाँ कर रहा था? स्पष्ट बताइये।

उत्तर मिठाईवाले के दो छोटे-छोटे बच्चे थे। विधाता की लीला से उसके दोनों बच्चों और पत्नी की असामयिक मृत्यु हो गयी थी। तबवह भावावेश में सोचने लगा था कि मृत्यु के बाद कहीं न कहीं उन बच्चों का जन्म हुआ होगा। इस दृष्टि से वह फेरीवाला बनकर दूसरों के बच्चों में अपने बच्चों का प्यार खोजता रहता था और उस प्रकार वह अपने वेदनापूरित मन को संतोष दिलाना चाहता था।

प्र.-13 ‘‘मेरा वह सोने का संसार था’’- मिठाई वाले के इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिये।

उत्तर मिठाईवाला सुखी और सम्पन्न व्यक्ति था। व्यवसाय, ऐश्वर्य, नौकर-चाकर, मकान, गाड़ी-घोड़ा आदि सब कुछ उसके पास था, उसकी पत्नि, दो सुन्दर बच्चे थे। वह उनके बहुत चाहता था। घर कोलाहल से गूंजता था। उसका सोने का संसार था-यह कहने का आशय है कि उसकी गृहस्थी सुन्दर और सुखदायक थी। उसका जीवन आनन्द से परिपूर्ण था।

प्र.-14 मिठाईवाला कहानी के कहानीकार ने कहानी में तत्कालीन समाज में व्याप्त किस प्रथा की ओर संकेत किया है? आपके मतानुसार इस प्रथा की आज के समाज में क्या स्थिति है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर कहानीकार ने कहानी में तत्कालीन समाज में व्याप्त पर्दा प्रथा की ओर संकेत किया है। हमारे मतानुसार आज भी हमारे समाज में इस प्रथा का रूप प्रचलित है लेकिन यह प्रथा शहरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में अपने प्रभावी रूप में ही दिखाई पड़ती है।

प्र.-15 मुरलीवाले को आया देखकर छोटे-छोटे बच्चों में क्या प्रतिक्रिया हुई और उन्होंने क्या कहा?

उत्तर मुरली वाले को आया देखकर छोटे बच्चें जहाँ पर भी थे दौड़कर उसके पास आने लगे। इस भगदड़ में ''किसी की टोपी गिर पड़ी, किसी का जूता पार्क में ही छूट गया और किसी की सोथनी (पाजामा) ही ढीली होकर लटक आई। दौड़ते हांफते बच्चे आकर एक स्वर में सब बोल उठे-''अम बी लेंदे मुल्ली और अम बी लेंटे मुल्ली।''

प्र.-16 मुरलीवाले ने ग्राहकों का दस्तूर क्या बतलाया? दस्तूर के सम्बन्ध में अपना मत स्पष्ट कीजिये।

उत्तर मुरलीवाले ने ग्राहकों के दस्तूर के सम्बन्ध में कहा- ''दुकानदार चाहे हानि उठाकर चीज क्यों ने बेचे, पर ग्राहक यही समझते हैं- दुकानदार हमें लूट रहा है।'' मुरलीवाले का कथन तो सही था लेकिन अधिकतर दुकानदार वस्तु पर ग्राहक से अधिक से अधिक लाभ कमाने की ही आकांक्षा रखते हैं, क्योंकि उनका दृष्टिकोण मानवीय न होकर व्यवसायिक दृष्टि पर आधारित होता है।

प्र.-17 ''मिठाईवाला'' कहानी के प्रमुख पात्र की चरित्रगत विशेषताएं बताइये।

उत्तर ''मिठाईवाला''कहानी का प्रमुख पात्र खिलौनेवाला और मुरलीवाला ही है।उसके चरित्र में ये विशेषताएं दिखाई देती हैं

१. स्नेह और वात्सल्य से पूर्ण- मिठाईवाला बच्चों के साथ आत्मीयता एवं स्नेह से व्यवहार करता तथा हृदय वत्सलता से पूर्ण था। वह दूसरों के बच्चों में अपने बच्चों का रूप देखता था।
२. लोभ-लालच से रहित- मिठाईवाला निर्लोभ व ईमानदार था। सभी को समान भाव व सस्ते में सौदा बेचता था।
३. मानवीय संवेदनशील- मिठाईवाला अपने ग्रहस्थ सुखमय जीवन की व्यथाकथा सुनाते समय मानवीय संवेदना प्रकट करता था।
४. चतुर कलाकार- वह मुरली बजाकर, मधुर स्वर में गाकर बच्चों को आकर्षित करने में, बाल सुलभ चेष्टाओं को समझने में अतीव चतुर कलाकार था।

इस प्रकार मिठाईवाले का चरित्र अनेक विशेषताओं से मण्डित था।

प्र.-18 मिठाईवाला हर्ष, संशय और विस्मयादि भावों में डूबकर बोला।? मिठाईवाले के इन भावों में डूबने का क्या कारण था? लिखिए।

उत्तर रोहिणी ने चिक की आड़ से जब मिठाईवाले से कहा कि ''पहले यही मिठाई बेचते हुए आये थे या और कोई चीज लेकर?'' तब इस प्रश्न से मिठाईवाले को रोहिणी के अपनत्व भाव से हर्ष हुआ, लेकिन साथ ही उसके मन में संशय हुआ कि किस कारण उससे ऐसा पूछा जा रहा है। प्रायः उससे ऐसा अपनत्व भाव दिखाने को तथा प्रश्न पूछने की चेष्टा कोई नहीं करता था, परन्तु रोहिणी द्वारा उसे अच्छी तरह पहचान लेने पर भी प्रश्न किया गया था और उसका वास्तविक परिचय पुनः जानना चाहा गया था। इस कारण उसके मन में विस्मयादि भाव उत्पन्न हुए और वह इन सभी भावों में कुछ क्षणों के लिए डूबा रहा।

प्र.-19 ''जो नहीं है, इस तरह उसी को पाना चाहता हूँ? कथन के अनुसार मिठाई वाले के पास क्या नहीं था और वह उसे कैसे पाना चाहता था?

उत्तर किसी समय मिठाई वाले का परिवार सब प्रकार से सुखी था, नौकर-चाकर थे, उसकी पत्नि तथा दो सुन्दर बच्चे थे। घर बच्चों के कोलाहाल से गूंजता रहता था। परन्तु दुर्भाग्य ने उससे सब छीन लिया। उसके बच्चों की असमय मृत्यु हो गई। उसका मन पीड़ा और विषाद से भर उठा। तब उसने फेरी लगाने का काम शुरू किया। वह खिलौने, मुरली, मिठाई आदि बच्चों की प्रिय चीजें लेकर बच्चों के पास जाता हैं तथा उनको सस्ते में चीजें देकर उनका मन बहलाता है। वह उन हँसते, खेलते-कूदते बच्चों में अपने बच्चों को पा लेता है। इससे उसको अत्यन्त संतोष तथा सुख मिलता है तथा अपने बच्चों के विछोह की पीड़ा से मुक्ति मिलती है। उसको धन की आवश्यकता नहीं है। धन तो उसके पास बहुत है। उसे मन का सुख-संतोष चाहिए तथा यह बच्चों के बीच रहने से उसको प्राप्त होता है।

प्र.-20 मिठाईवाला कहानी की मूल संवेदना क्या है?

CBSE OBHINDER

उत्तर “मिठाईवाला” कहानी में खिलौना, मुरली तथा मिठाई बेचने वाला एक ही आदमी है, जो किसी समय अपने नगर का प्रतिष्ठित आदमी था। उसकी पत्नी और दो छोटे बच्चे थे। परन्तु विधाता ने एक दिन उससे पत्नि और बच्चे छीन लिए। तबसे वह अपने हृदय में छिपे वात्सल्य की पूर्ति के लिए और बच्चों के अभाव की वेदना से स्वयं को मुक्त करने के लिए दूसरों के बच्चों के बीच सम्बन्ध जोड़ता था। इससे वह उन सभी बच्चों में अपने बच्चों की झलक पाकर संतुष्टि प्राप्त कर लेता था। प्रस्तुत कहानी में मानव हृदय की वात्सल्य भावना की संतुष्टि दर्शाना ही इसकी मूल संवेदना है।

पाठ का नाम :– शिरीष के फूल (निबन्ध)

अतिलघुरात्मक प्रश्न :–

प्र.1 कवि ने शिरीष की तुलना किससे की है ?

उत्तर अवधूत

प्र.2 शिरीष के फूल किस प्रकार का निबन्ध है ?

उत्तर ललित निबन्ध

प्र.3 'अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाटक की नायिका कौन थी ?

उत्तर शकुन्तला

प्र.4 शिरीष के फूल में किन कवियों की अनासक्ति की बात की है ?

उत्तर कालिदास, सुमित्रानंदनपंत और रविन्द्रनाथ

प्र.5 'उधो का लेना, न माधो का देना' मुहावरे का अर्थ लिखिए।

उत्तर किसी से कोई मतलब नही, संसार के रागद्वेष से मुक्त रहना

बहुविकल्पी प्रश्न :–

प्र.7 प्राचीन 'कर्णाट राज्य' का आधुनिक नाम क्या है ?

(अ) कर्नाटक (ब) तमिलनाडु

(स) केरल (द) असम (अ)

प्र.7 'मेघदूत की रचना किसने की ?

(अ) कबीर (ब) तुलसी

(स) कालिदास (द) वाल्मीकि (स)

प्र.8 'देश में एक बूढा था' – किसकी ओर संकेत किया गया है ?

(अ) कबीर (ब) गाँधी

(स) कालिदास (द) रवीन्द्रनाथ (ब)

प्र.9 शिरीष के फुल के माध्यम स`लेखक ने संघर्षशीलता एवं जिजीविषा की जो व्यंजना की है, उसे स्पष्ट कीजिए।

उत्तर लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी ने बतलाया है कि शिरीष वसंत के आगमन के साथ खिल उठता है और आषाढ़ तक निश्चित रूप से मस्त रहता है। भीषण गर्मी और तपन से जब सारे पेड–पौधे झुलसने लगतें है तब भी शिरिष वृक्ष हरा–भरा और फूलों से लदा रहता है। यह वायुमण्डल से रस ग्रहण करता है। इस प्रकार यह विपरित परिस्थितीयों में भी संघर्षशीलता एवं जिजीविषा रखता है।

प्र.10 लेखक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर इनका जन्म सन् 1907 ई. में बलिया (उत्तर प्रदेश) के आरत दुबे के छपरा नामक गांव में हुआ। इनके पिता का नाम अनमोल द्विवेदी एवं माता का नाम ज्योतिष्मती था। सन् 1949 में लखनऊ विश्व विद्यालय ने डी. लिट्. की उपाधि से सम्मानित किया एवं भारत सरकार ने इन्हे 'पद्म भूषण' से अलकृंत किया। इनकी प्रमुख रचनाएं :– 'अशोक के फूल', 'कल्पलता', 'विचार और वितर्क', 'कुटुज' , विचार–प्रवाह'; (निबन्ध), सूर साहित्य का आदिकाल (आलोचना, साहित्येतिहास) बाणभट्ट की आत्मकथा, 'चांरू चन्द्रलेख' , पुनर्नवा, अनामदास का पोथा

CBEO BHINDER

प्र.11 'दिन दस फूला फूलिके खंखड़ भया पलास इस पंक्ति का भावार्थ लिखिए।

उत्तर इस कहावत का भावार्थ है कि वसन्त ऋतु आने पर 10–15 दिन फूल कर फलास वृक्ष खखंड हो जाता है अर्थात सूखा–सूखा श्री हीन लगता है। इस फूलने से न तो न फूलना ही अच्छा है। संसार के माया–मोह, राग–छटा बिखेरकर चले जाते है। अनासक्त रहकर जीना सभी के बस की बात नहीं होती है।

प्र.12 लेखक ने 'शिरीष के फूल' को काल जयी अवधूत की तरह क्यों बताया हैं ?

उत्तर लेखक ने 'शिरीष के फूल' को काल जयी अवधूत की तरह इसलिए बताया है क्योंकि अवधूत जिस प्रकार अनासक्त होता है वह संसार के सुःख–दुःख में समरस होकर जीता है। इसी कारण वह काल को जीतने में समर्थ होता है। शिरीष का फूल भी ऐसा ही है। जब चारों ओर भीषण गर्मी पडती है, लू के थपेडें लगते है, धरती निधूर्म अग्नि कुंड बन जाती है तब भी शिरीष हरा–भरा तथा फूलों से लदा रहता है।

प्र.13 'धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना। इस पंक्ति में तुलसीदास जी ने क्या संदेश दिया।

उत्तर तुलसीदास ने इस पंक्ति में संसार के शाश्वत अटल सत्य वृद्धावस्था तथा मृत्यृ के बारे में बताया है। जो फलता है, वह झड जाता है तथा जो जन्म लेता है वह मर जाता है। यह प्रकृति का नियम है।इसका उल्लघंन नहीं हो सकता। तुलसी ने संदेश दिया है कि इसको स्वीकार करके निर्लिप्त जीवन बिताना चाहिए।

प्र.14 लेखक के अनुसार कवि के लिए कौन से गुण आवश्यक है ?

उत्तर लेखक के अनुसार कवि में अनासक्ति, फक्कडपन, मौज–मस्ती तथा लाभ–हानि के हिसाब–किताब से दूर रहने का भाव आदि गुण आवश्यक होते है। प्रेम के हार्दिक स्वरूप को पहचानना भी कवि का गुण होना चाहिए।

प्र.15 द्विवेदी जी शिरीष के फूल के प्रति आकर्षित क्यों हैं ?

उत्तर द्विवेदी जी को शिरीष के फूल उसकी जीवन शक्ति और संघर्षशलता के कारण पसंद है क्योंकि वह जेठ की जलती हुई धूप में भी फूलों से लदा रहता है और कठोरतम परिस्थितियों में से जीवन रस खींचकर जीवन की अजेयता का मंत्र फूँक सकता है।

प्र.16 आरग्वध के साथ शिरीष की तुलना क्यों नहीं की जा सकती है ?

उत्तर शिरीष वसन्त से फूलना आरम्भ करता है तथा आषाढ़ तक निर्बाध खिलता है। कभी–कभी तो वह भादो तक खिलता है। आरग्वध अर्थात अमलतास वसन्त ऋतु में फूलता है। वह 10–15 दिन फूलता है फिर सूख जाता है। इस कारण शिरीष के साथ उसकी तुलना नही हो सकती।

प्र.17 ''जब–जब शिरीष की ओर देखता है, तब–तब हूक उठती है।'' लेखक को हूक क्यों उठती है? बताइयें।

उत्तर आज हमारे भारत देश में भ्रष्टाचार और स्वार्थपरता का बोलबाला है। गरीब जनता अत्याचार और शोषण से कराह रही है। अन्याय, अनाचार हो रहे है। आज ऐसा कोई भी कर्मयोगी देशभक्त नहीं है, जो इन सब बुराईयों से देश का उद्धार कर सके। इस स्थिति में गांधी जी की तरह देशभक्त कर्मयोगी की जरूरत है जो शोषित पीडित जनता का मार्गदर्शन कर सके। लेखक को ऐसा व्यक्ति नही दिखाई देने से हूक उठती है।

प्र.18 महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहें है – इसका निहितार्थ क्या है ?

उत्तर महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहें है – इसका निहितार्थ है कि मृत्यु हर क्षण प्राणियों को चिरनिन्द्रा में सुला रही है। वृद्ध होना और फिर मृत्यु होना चिरंतन सत्य है। मनुष्य की जिजीविषा तथा अटल मृत्यु में निरन्तर संघर्ष चल रहा है। मनुष्य जीना चाहता है और मृत्यु उसका अन्त करना चाहती है।

प्र.19 शिरीष के फूलों व आधुनिक नेताओं के स्वभाव में लेखक को क्श समानता दिखाई पडती है ?

उत्तर शिरीष के फूलों आधुनिक नेताओं के स्वभाव में एक जैसी अडिगता और मजबूती दिखाई देती है। ये दोनों आसानी से अपना स्थान नहीं छोडतें है। इन्हे जबरदस्ती धक्का देकर चलता करना पडता है।

प्र.20 आरग्वध और पलाश में क्या समानता है ? बताइये।

उत्तर आरग्वध अर्थात अमलतास वसन्त ऋतु में दस–पन्द्रह दिन तक फूलता है, ठीक इसी प्रकार पलाश भी दस–पन्द्रह दिन तक खिलकर सूख जाता है। इस विषय में कबीर का कथन द्रष्टव्य है– 'दिन दस फूला फूलिके , खंखड भया पलास'।

प्र.21 रवीन्द्रनाथ ने राजोध्यान के बारे में क्या संदेश दिया है ?

उत्तर रवीन्द्रनाथ ने संदेश दिया है कि राजोद्यान का सिंहद्वार कितना ही उंचा क्यों न हो, उसका सौंदर्य कितना ही कीमती हो, लेकिन वह अंतिम नही है। उसका सौंदर्य किसी और गहरे तथा ऊँचें सौंदर्य की और संकेत करता है। वह हमें और आगे बढने की प्रेरणा देता है।

प्र.22 शिरीष की कर सरसता को देखकर लेखक के मन में कौन–सा भाव उठता है ?

उत्तर शिरिष कीह सरसता को देखकर लेखक के मन में यह भाव उठता है कि शायद चिलकती धूप, वर्षा, आंधी, लू अपने आप में सत्य नहीं है। सत्य है – शिरीष की भाँति अनासक्त होकर वातावरण से रस खींचनाऔर सदा सरस व स्थिर रहना।

प्र.23 चिलकती धूप में भी सरस बने रहने वाला शिरिष हमें क्या प्रेरणा देता है ?

उत्तर चिलकती धूप में भी सरस बने रहने वाला शिरिष हमें यह प्रेरणा देता है कि कठिन कठिनाईयों में भी मस्त और अविचलित रहना चाहिये। जिजीविषा एवं संघर्शशीलता रखकर जीवन में कर्मठ बने रहना चाहिये, साथ ही मानवीय मूल्यों की स्थापना का प्रयास करना चाहिए।

प्र.24 ''हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी–कभी जरूरी होती है।'' कथन को पाठ के आधार पर स्पष्ट किजीए।

उत्तर हृदय की कोमलता को बचाने के लिए प्रायः व्यवहार की कठोरता आवश्यक हो जाती है। शिरीष का वृक्ष भी अपनी सरसता को बचाये रखने के लिए बाहर से कठोर हो जाता है। उसके फल विशेष रूप से मजबूत और कठोर होते है। प्रायः कठोर आवरण के नीचे सरसता सुरक्षित रह जाती है।

प्र.25 द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन स्थितियों में अविचल रहकर जिन्दा रहने की सीख क्यों दी हैं ? सपष्ट किजीए।

उत्तर द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से यह सीख दी है कि जीवन में कितना भी संघर्ष और कोलाहल हो, मनुष्य को अपनी सरसता और उत्साह को उसी प्रकार से बचाकर रखना चाहिए जिस प्रकार शिरीष भीषण गर्मी और लू के बावजूद भीतर से सरस बना रहता है, उसी प्रकार मनुष्य को भी चारों और फले भ्रष्टाचार , अत्याचार, मार–काट, लूटपाट के बीच निराश नहीं होना चाहिए।

पाजेब

1 – पाजेब कहानी किस शैली में लिखी गई है?

अ– डायरी शैली   ब– आत्मकथात्मक शैली

स– व्यास शैली   द– व्यंग्य शैली   (ब)

2– आशुतोष की बहिन का नाम है?

अ– मुन्नी   ब–शीला

स–चुन्नी   द–रूक्मिन   (अ)

3– पाजेब कहानी के लेखक है?

अ– प्रेमचंद   ब– जयशंकर प्रसाद

स– महादेवी वर्मा   द– जैनेंद कुमार   (द)

4 – पाजेब कहानी किस पर आधारित है?

उत्तर– पाजेब कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित है

5–इस कहानी की रचना का क्या उद्देश्य है ?

उत्तर– इस कहानी की रचना का उद्देश्य उद्देश्य बालकों के मनोविज्ञान का चित्रण करना है।

6–मुन्नी अपने पिताजी से क्या लाने की जिद्द करती है?

उत्तर– मुन्नी अपने पिताजी से पाजेब लाने की जिद्द करती है।

CBEO BHINDER

7–पाजेब मुन्नी के लिए कौन लाता है?
उत्तर– पाजेब मुन्नी के लिए उसकी बुआ इतवार को लेकर आती है।
8–आशुतोष अपनी बुआ से जन्मदिन पर क्या लाने को कहता है?
उत्तर– आशुतोष अपनी बुआ से जन्मदिन पर बाइसिकल लाने को कहता है।
9–पाजेब खो जाने पर कौन परेशान होता है?
उत्तर– पाजेब खो जाने पर आशुतोष की मॉ परेशान होती हैं।
10– पाजेब खो जाने पर श्रीमती जी किस पर संदेह करती है?
उत्तर– श्रीमती जी अपने नौकर बंशी पर संदेह करती है।
11–आशुतोष बाजार से क्या खरीद कर लाया?
उत्तर– आशुतोष बाजार से पतंग और पिन्ना (डोर) खरीद कर लाया।
12–आशुतोष पाजेब किसको देने की बात करता है?
उत्तर– आशुतोष पाजेब छुन्नू को देने की बात करता है।
13–छुन्नू की मां छुन्नू को क्यों पिटती है?
उत्तर– आशुतोष के कहे अनुसार छुन्नू ने पाजेब ली है सुनकर छुन्नू को पिटती है।
14–छुन्नू ने आशुतोष द्वारा पाजेब किसे देने की बात कही?
उत्तर– छुन्नू ने आशुतोष द्वारा पाजेब पतंग वाले को देने की बात कही।
15– लेखक ने प्रकाश को किसके पास भेजा?
उत्तर– लेखक ने प्रकाश को पतंग वाले के पास पाजेब के बारे में पता लगाने भेजा।
16–आशुतोष से पूछताछ की जा रही थी तब अचानक उसके घर कौन आया?
उत्तर– आशुतोष की बुआ उसके घर मिठाई व केले लेकर आई

17–पाजेब शीर्षक कहानी में प्रायः सभी पात्रो की स्थिति तनाव पूर्ण क्यो रहती है?
उत्तर– पाजेब शीर्षक कहानी में पार्य सभी पात्र एक दुसरे को समझने में असमर्थ रहते है इस लिए उनकी स्थिति तनाव पूर्ण रहती है।

18–पाजेब कहानी में चलन में आए पाजेब की क्या विशेषता बताई गई है ?
उत्तर– लेखक के अनुसार पैरों में पडकर बहुत अच्छी लगती है उनकी कड़ियां लचक के साथ जुड़ी रहती हैं पाजेब का स्वयं का आकार कुछ भी नहीं है वे जिस पांव में पड़े उसी के अनुकूल रहती हैं

19– वह शहीद की भॉती पीटता रहा था, इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए ?
उत्तर– छुन्नु पर जब पाजेब चोरी का आरोप जानकर उसकी मॉ ने उसको पीटना शुरू कर दिया। वह रोया बिलकुल नहीं। जिस प्रकार कोई शहीद दंड का विरोध नहीं करता उसे साहस के साथ सहन करता है उसी तरह छुन्नु ने भी अपनी पीटाई का विरोध नहीं किया। आषुतोष एक कोने में खडा था।

20–"देखो हमारे बेटे ने सच कबूल किया है" आशुतोष ने क्या सच कबुल किया?
उत्तर– लेखक ने अपनी पत्नी से कहा– "देखो हमारे बेटे ने सच कबूल लिया है" लेखक के बार बार पुछने पर आशुतोष ने कह दिया कि उसको पाजेब पडी मिली थी। यह सच नहीं है आशुतोष ने अपनी पिता के प्रश्नों से घबराकर उनसे बचने के लिये कह दिया कि पाजेब उसे पडी मिली थी। पाजेब उसे पडी हुई नहीं मिली थी न ही पतंग वाले को बेची थी।

CPEO BHINDER

21–पाजेब कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ?
उत्तर– इस कहानी का उद्देश्य बाल मनोवृति का विश्लेषण करना है और यह बताना है कि अपराध के प्रति करुणा होनी चाहिए प्रेम से अपराधवृतिको जीता जा सकता है भय और क्रोध से दबाना ठीक नहीं है बालक का स्वभाव कोमल होता है और हमेशा उसके साथ स्नेह का व्यवहार करना चाहिए आशुतोष अपराधी ना होते हुए भी भय के कारण अपराध स्वीकार कर लेता है अतः मन स्थिति में विभिन्न, मनोदशाओं का अंकन किया गया है।

22–पाजेब पाकर मुन्नी पर क्या प्रतिक्रिया हुई?
उत्तर– मुन्नी की बुआ द्वारा लाई गई पाजेब पहनकर खुशी से झूम उठे बाल मनोवृति से पूरित होकर उसने अपने पैरों में पहनी पाजेब रुकमणी व शीला को दिखाया सब ने उसके पायल की प्रशंसा की उस समय मुन्नी की खुशी का ठिकाना नहीं था जो बाल मनोवृति की एक झलक थी।

23–पाजेब कहानी की दो विशेषताएं लिखिए ?
उत्तर– पाजेब कहानी की दो विशेषताएं निम्नलिखित हैं 1–यह कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित है इसमें बताया गया कि बच्चों की बुद्धि कोमल होती हैं तथा उनके साथ स्नेह पूर्ण व्यवहार करना चाहिए 2–पाज सोद्देश्य कहानी है इसमें पात्रों का चरित्र चित्रण कथावस्तु के अनुकूल है।

24– आशुतोष को पाजेब के विषय में पूछने पर उसकी क्या मनःस्थिति हुई?
उत्तर– आशुतोष से पाजेब के विषय में पूछने पर कोमल बाल स्वभाव पर विपरीत प्रभाव पड़ा क्योंकि वह स्वयं निर्दोष था पिताजी की बात सुनकर उसका कोमल मन भय और त्रास से पूरित हो गया और बिना कुछ बोले गुमसुम बैठकर स्वयं को निर्दोष बताने के लिए सिर हिलाता रहा।

25–पाजेब कैसे मिलती है? पाजेब मिलने पर लेखक की प्रतिक्रिया को व्यक्त कीजिए ?
उत्तर– पाजेब बुआ के आने पर उसके बास्केट में मिलती है पाजेब के मिलने पर माता–पिता को अपने बिना सोचे समझे किए गए कार्यों पर बड़ा दुख होता है वह सोचते हैं कि अपराध को प्रेम से ही जीता जा सकता है भय और क्रोध से बालक की मनः स्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

26–पाजेब कहानी के मुख्य पात्र आशुतोष का चरित्र चित्रण कीजिए ?
उत्तर– 1–कोमल बुद्धि–वह 8 वर्ष का बालक है उसकी बुद्धि कोमल और अपरिपक्व है वह पिता के स्नेह प्रलोभन से काम करना स्वीकार कर लेता है 2–तर्क कुतर्क से अनभिज्ञ–अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए तर्क कुतर्क का सहारा नहीं लेता है 3–बाल हठ–बालक होने के कारण हठ भी करता है वह अपनी बहन के पाजेबपहना देखकर बाइसिकल की जिद करता है 4–अकारण संदेह का पात्र–उसने पाजेब नहीं ली है उसके उपर चोरी का और अकारण संदेह किया जाता है।

27–पाजेब कहानी के शीर्षक की उपयुक्तता स्पष्ट कीजिए ?
उत्तर– पाजेब जैनेंद्र जी के मनोवैज्ञानिक कहानी है इस कहानी के कथानक का मूल बिंदु पाजेब है मुन्नी की बुआ द्वारा लाई गई पाजेब की जोड़ी में से एक पाजेब खोजाती है उस खोई हुई पाजेब को लेकर कथानक आगे बढ़ता है पाजेब किसने ली। जब भी प्रष्न आता है तो माता–पिता बिना सोचे समझे यह मान लेते हैं कि पाजेब आशुतोष ने चुराई है आरोप को सुनकर आशुतोष टूट जाता है भय व आतंक के कारण वश स्वीकार कर लेता है की पाजेब चोरी में छुन्नू भी शामिल है आशुतोष को कोठरी में बंद कर देते हैं कहानी में (छुन्नु) बुआ के आने पर रहस्य खुलता है पाजेब बुआ के बास्केट में चली गई इस प्रकार कहानी में कथानक पाजेब के चारों ओर घूमता रहता है।

28–लेखक परिचय लिखिए ?
उत्तर– श्री जैनैंद कुमार का जन्म सन 1905ई अलीगढ़ के कोडियागंज नामक कस्बे में हुआ उनके पिता का नाम प्यारे लाल माता का नाम श्रीमती रामदेवी था इनकी प्रारम्भिक शिक्षा जैन गुरुकुल हस्तिनापुर में हुए यह मैट्रिक की परीक्षा उर्तीण करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए काशी विश्वविद्यालय आए महात्मा गांधी के आंदोलन का भी इन पर प्रभाव पड़ा किए पढ़ाई छोड़ कर आंदोलन के उत्साही कार्यकर्ता बन गए।

29–जैनैंद जी का साहित्यिक परिचय लिखिए ?
उत्तर– जैनैंद कुमार एक उपन्यास कार, कहानी कार, निबंधकार तथा प्रसिद्ध विचारक थे उनका यह रूप उनके निबंधो मैं दिखाई देता है साहित्य, दर्शन, संस्कृति,राजनीति, समाज धर्म आदि से संबंधित विषयों का संपूर्ण विवेचन आपके निबंधों में मिलता है आपने खेल कहानी तथा परख उपन्यास लिखकर हिंदी साहित्यकारों में अपना नाम लिखवाया है इनकी भाषा में तत्सम शब्द प्रधान तथा विषय अनुकूल है उसमें मुहावरों का प्रयोग हुआ है चिंतक होने के कारण वाक्यों में गंभीरता दिखाई देती है आप की शैली विचारात्मक, मनोविश्लेषणात्मक तथा व्यंगात्मक है इनको पद्म भूषण से सम्मानित किया गया है।

30–जैनैंद्र कुमार की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए ?
उत्तर– जैनैंद कुमार की प्रमुख रचनाएं निम्नलिखित हैं।
उपन्यास–परख, सुनीता, सुखदा, त्यागपत्र, कल्याणी विवर्त, जयवर्धन मुक्तिबोध इत्यादि।
कहानी संग्रह–फांसी जय संधि वातायान, नीलम देश की राजकन्या एक रात दो चिड़िया पाजेब।
निबंध संग्रह प्रस्तुति प्रश्न जड़ की बात पूर्वोदय साहित्य का श्रेय और प्रेम मंथन राष्ट्र और राज्य आदि।
संस्मरण–ये और वे।
अनुवाद–मंदाकिनी पाप और प्रकाश प्रेम में भगवान आदि।

अलोपी

प्र 1 महादेवी वर्मा का जन्म कब और कहा हुआ था?
उत्तर–महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फर्रूखाबाद उत्तरप्रदेश में हुआ।
प्र.2 महादेवी ने अपनी प्रारंभिक रचनाएँ किस भाषा में लिखी?
उत्तर –महादेवी वर्मा ने अपनी प्रांरभिक रचनाए ब्रज भाषा में लिखी।
प्र.3 महादेवी वर्मा को ''हिन्दी के विशाल मंदिर की सरस्वती'' किसने कहा?
उत्तर–सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कहा।
प्र. 4 महादेवी को ज्ञानपीठ पुरस्कार किस कृति पर मिला ?
उत्तर ''यामा'' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार सन 1982 में मिला।

प्र. 5 महादेवी वर्मा के तीन कविता संग्रह के नाम लिखो।
उत्तर– 1 नीहार 2 रश्मि 3 नीरजा

प्र 6– 'अलोपी' नामक पाठ किस विधा में लिखा गया है?
उत्तर –'अलोपी' नामक पाठ संस्मरण विधा में लिखा गया है।
प्र 7– ' अलोपी' संस्मरण की लेखिका का नाम बताइये ?
उत्तर–'अलोपी'संस्मरण की लेखिका महादेवी वर्मा है।

CEO BHINDER

प्र 8—छायावाद के कितने स्तम्भ है, नामलिखिए
उत्तर—छायावाद के चार स्तम्भ मानें गए है, जयशंकरप्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रानन्दनपंत और महादेवी वर्मा।
प्र. 9—महादेवी वर्मा के माता—पिता का नाम बताइए।
उत्तर—महादेवी वर्मा की माता का नाम हेमरानी देवी तथा पिता का नाम गोविदप्रसाद वर्मा था।
प्र. 10—अलोपी के चक्षु के अभाव की पूर्ति किसने की?
उत्तर—अलोपी के चक्षु के अभाव की पूर्ति उसकी रसना अर्थात जीभ ने की।

प्र. 11— '' तुम कौनसा काम कर सकते हो?'' पूछे जानें पर अलोपी ने अपने किस कार्य का प्रस्ताव रखा?
उत्तर—अलोपी ने लेखिका के सामनें प्रस्ताव रखा कि वह देहात के खेतों से सस्ती और अच्छी तरकारिया (सब्जिया) लेखिका और छात्रावास की छात्राओं के लिए प्रतिदिन लायेगा।
प्र. 12— 'गिराअनयन, नयनबिनुबानी' लेखिका इन शब्दों को किस संदर्भ में ठीक मानतीहै?
उत्तर—जब लेखिका ने अलोपी से कहा कि तरकारियों का प्रतिदिन का हिसाब कौन रखेगा, तब उसने कहा कि इसका हिसाब तो मेरा ताउ रख लेगा औनर छात्रावास का हिसाब मैडम रख लेगी।रग्घू पढा—लिखा न था तो अलोपी अन्धा था।अलोपी के पास वाणी थी पर नेत्र नही ंथे जबकि रग्घू के पास नेत्र थे,पर समझदारी नहीं थी।इसी सन्दर्भ में लेखिका ने इस कथन को ठीक माना है।
प्र. 13— अलोपी के चरित्र की दो विशेषताए बताइए।
उत्तर— 1 धीर तथा वाचाल—अलोपी धैर्यशील था। अन्धा होने पर भी वह अपना मार्ग धीरता से कदम रखते हुए तय कर लेता था, परन्तु वह बोलता अधिक था।

2 समझदार—अलोपी काफी समझदार था।उसे तरकारियों का पुराज्ञान था। वहबूढ़ी माँ से काम कराना अनुचित मानता था।

प्रं 14 —भिखारी का स्वर सुनकर लेखिका की क्या प्रतिक्रिया थी?
उत्तर —लेखिका भिखारी को डाटने या उस परक्रोध करनें के बजाय दया रखने लगी और उसने अपनी शिष्टता के आधार पर भिखारी की बात सुनने का निश्चय किया।
प्र 15— '' आज के पुरूष का पुरूषार्थ विलाप है ।'' लेखिका ने ऐसा क्यों कहा?
उत्तर—लेखिका ने जब कोई पुरूष याचक बनकर आताहैं, तोउसे लक्ष्य करव यंग्य रूप में कहा है कि वह दीन—स्वर में, अनेक बनावटीभाव—भंगिमाएं बनाकर तथा अपने जीवन को अनेक कष्टों स घिरा हुआ बताकर इस तरह याचना करता है कि वह वास्तविक रूप से ही भाग्य का मारा है। इस प्रकार लोग समर्थ पुरूष होते हुए भी पुरूषार्थी न बनकरअपने जीवन का नकली रोना रोते है।

प्र 16 —लेखिका को यह विश्वास क्यो ंहै कि अलोपी बिना भटके अपने गन्तव्य तक पहुँच जाएगा ?
उत्तर—अलोपी यद्यपि अन्धा था तथा वह रग्घू की सहायता से चलता था, फिर भी अलोपी को रास्ते का पूरा ज्ञान था।कहाँ कीचड़ हैं, कहाँ उबड़—खाबड़ है, कहाँ वर्षा में मार्ग अवरूद्ध हो सकता है।उसके इसी ज्ञान को देखकर लेखिका को विश्वास हो गया कि अलोपी बिना भटके ज्ञान को देखकर लेखिका को विश्वास हो गया कि अलोपी बिना भटके अपने गंतव्य तक पहुच जायेगा।

प्र 17— वंश—बेलवृदधि के सम्बन्ध में हमारे समाजमें क्या धारण रही है
उत्तर —वंश—बेलवृदधि के सम्बन्ध में हमारे समाज में यह धारणा रही है कि पुत्र की प्राप्ति अवश्य होनी चाहिए, क्योंकि पुत्र के उत्पन्न होनें सें ही वंश—बेल की वृद्धि होती है। इस कारण प्रत्येक माता—पिता पुत्र की कामना करते है।तथा इस हेतु ईश्वर से या अपने कुलदेवता से मनौती पूरी करने की प्रार्थना करते हैं

प्र 18 –महादेवीवर्माका जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर– जीवन परिचय–महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फर्रूखबाद में हुआ।इनकी माता हेमरानी देवी हिन्दी की विदुषी थी। छायावादी काव्य धरा के चारस्तम्भों जयशंकरप्रसाद, सुमित्रानन्दनपंत, सुर्यकान्त त्रिपाठी निराला तथा महादेवी वर्मा का हिन्दी साहित्य में विशेष स्थान है।इन्होंने प्रारंभिक कविताएँ ब्रजभाषा में लिखी किंतु बाद में मैथिली शरणगुप्त की खड़ीबोली से प्रभावित होकर इन्होंने भी खड़ीबोली को काव्य भाषा के रूप मेंअपना लिया।

रचनाए– 1 संस्मरण व रेखाचित्र– ''अतीत के चलचित्र'' और ''अतीत के चलचित्र''और ''स्मृति की रेखाए''

2 कविता–संग्रह :–नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्य गीत।

प्र 19 –अलोपी किस कारण छात्रावास की बालिकाओं को फल देता ?

उत्तर–अलोपी की आठ–नौ वर्ष की एक चचेरी बहन मर चुकी थीं। उन छात्रावास की बालिकाओं के स्वर में अपनी बहन की प्रतिच्छाया देखता था। इसी कारण वह उन्हें स्नेह से फल देता था।

प्र 20 –''ऐसे आश्चर्य से मेरा कभी साक्षात् नहीं हुआ था।'' लेखिका ने इसमें किस आश्चर्य की ओर संकेत किया है?

उत्तर:–अलोपी के पिता के निधन के बाद उसकी बूढ़ी मॉ तरकारियाँ लेकर फेरी लगाती थी।अलोपी को यह बात अच्छी नहीं लगती थी कि जवानआदमी घर में बैठा रहे और बुढ़िया मर–मर के कमायें। अलोपी के इसी चिन्तन की ओर संकेत करते हुये लेखिका ने आश्चर्य व्यक्त किया है।

पाठ–21 संस्कारों और शास्त्रों की लड़ाई (व्यंग्य निबंध) – हरिशंकर परसाई

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र॰1 'संस्कारों और शास्त्रों की लड़ाई निबंध में लेखक नारी मुक्ति का कारण किसे मानता है?

उत्तर मँहगाई को

प्र॰2 संस्कारों के सीने पर चढ़कर गला कौन दबा रहा है ?

उत्तर अर्थशास्त्र संस्कारों के सीने पर चढ़कर गला दबा रहा है।

प्र॰3 लेखक के अनुसार प्रयाग और इलाहाबाद में क्या अंतर है?

उत्तर लोग जब चोरी करने जाते है। तब इस शहर को इलाहाबाद कहते है, पिण्डदान करने जाते है तब प्रयाग कहते है।

प्र॰4 क्रान्तिकारी का पहला और सबसे बडा संघर्ष किससे होता है?

उत्तर मदर इनं लां से

प्र॰5 बीस साल से मित्र ने सच्चा पिता किसे मान रखा था?

उत्तर मार्क्सवाद को

प्र॰6 'संस्कारों और शास्त्रों की लड़ाईक निबंध में लेखक ने किस बात का उद्घाटन किया?

उत्तर इस निबंध में व्यंग्यकार ने विचारों और आचरण में विरोध का सशक्त रूप में उद्घाटन किया।

प्र॰7 लेखक को कैसे पता लगा कि मित्र का भी कोई था?

उत्तर मित्र पिताजी का पिण्डदान करने प्रयाग जा रहे थे और उनका मुण्डन हुआ था, इससे लेखक ने अनुमान लगाया की उनका कोई था।

प्र॰8 उन्होंने खुद अपने हाथों मार्क्सवाद का मुण्डन कर दिया था, लेखक का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर लेखक का आशय है कि दोस्त ने जिस मार्क्सवादी सिद्धान्त का बीस वर्ष से पालन किया था, उसे एक झटके में तोड़ दिया, उसे भुला दिया।

CBSE BHINDER

प्र॰9 ''अगर तुम्हारी यह भावना है तों मैं क्रान्ति छोड देता हूँ''।

उत्तर यदि चाची यह कह देती कि तुम्हारें चाचा की आत्मा को दुःख होगा, परलोक में उनकी दुर्गति हो जाएगी, तो दोस्त क्रान्ति को छोडने को तैयार हो जाता है।

प्र॰10 लाला की क्रान्तिकारिता भ्रान्तकारिता में कब बदल जाती है?

उत्तर जब मदर इनं लां आकर कहती है, लाला अपनी नहीं तो बच्चों का ख्याल करो, तब लाला की क्रान्तिकारिता भ्रान्तकारिता में बदल जाती है।

प्र॰11 माँ ने लड़की की सरकारी शादी को स्वीकार क्यों कर लिया?

उत्तर माँ ने लड़की की सरकारी शादी को स्वीकार करने के पीछे दहेज बचने का कारण था।

प्र॰12 लेखक को दोस्त के पिता की मृत्यु की उपेक्षा किसकी चिन्ता अधिक थी?

उत्तर लेखक को दोस्त के पिता की मृत्यु की अपेक्षा उसकी चिन्ता अधिक थी, जिसे उन्होने बीस साल से सच्चा पिता मान रखा था लेखक को उसी की चिंता थी।

प्र॰13 लेखक 'मदर इनं लां' को क्रान्ति का दुश्मन क्यों मानता है?

उत्तर मदर इनं लां क्रान्तिकारी के विचारों को बदल देती है, वह दोस्त की धोती पहनकर पालथी मार कर सत्यनारायण की कथा सुनने को विवश कर देती है, और कहती है– ''लाला अपना नही तो बच्चों का तो ख्याल करो।'' बच्चों का ध्यान दिलाकर क्रान्ति के विचारों को बदल देती है, इसलिए लेखक ने उसे क्रान्ति का दुश्मन कहा है।

प्र॰14 'संस्कारों और शास्त्रों की लड़ाई'शीर्षक निबंध में व्यक्त लेखक के विचारों को संक्षेप में लिखिए।

उत्तर निबंध में लेखक ने विचारों और आचरण में विरोध दिखाया है। निबंध में कई घटनाओं से यह व्यक्त किया है कि थोड़ी–सी विपरीत परिस्थिति उत्पन्न होने पर सिद्धान्तवादियों के सिद्धान्त समाप्त हो जाते है। आचरण और विचार के विरोध, व्यवहार में दोगलापन उपस्थित कर देते है। इन्ही विचारों को इस निबंध में व्यक्त किया है।

प्र॰15 'संस्कारों और शास्त्रों की लडाई पाठ के मूल उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।'

उत्तर यह एक व्यंग्य प्रधान निबंध है, इस निबंध में निबंधकार ने विचार और आचरण में विरोध तथा व्यवहार में दोगलेपन का उद्घाटन सशक्त तरीके से किया है। साथ ही निबंध में घटनाओं के कई ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए है, जिनमें थोड़ी सी विपरीत परिस्थितियों के दबाव में सिद्धान्तवादियों के सिद्धान्त टूट जाते है। अतः विचार और आचरण के विरोध तथा व्यवहार में दोगलेपन को प्रस्तुत करना ही निबंध में लेखक का मुख्य उद्देश्य है।

प्र॰16 ''अर्थशास्त्र संस्कारों के सीने पर चढ़कर गला दबा रहा है''। परसाई द्वारा दिए गयें उदाहरण की सहायता से इस उक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर एक लड़के ने एक लड़की को उसकी इच्छा से भगाकर सरकारी शादी कर ली। पहले को संस्कारवश लड़की की माँ ने हाय–तौबा किया। लेकिन जब उसे इस बात पर ध्यान आया कि दहेज के पन्द्रह हजार रूपये सहज ही बच गये तो माँ ने दावत देकर उसें मान्यता दे दी। इससे स्पष्ट होता है कि अर्थशास्त्र संस्कारों के सीने पर चढ़कर गला दबा रहा है।

हिंदी गद्य का वकास

1. गद्य कसे कहते हैं?

उत्तर-जिस शब्दार्थ युक्त भाषा का साधारण बातचीत में प्रयोग कया जाता है उसे ही गद्य कहा जाता है।

2. संस्कृत साहित्य में गद्य को कस अर्थ में ग्रहण कया जाता है?

उत्तर-संस्कृत साहित्य में आचार्यों ने गद्य को काव्य के अर्थ में ग्रहण कया है।

3. आचार्य वामन ने गद्य के बारे में क्या कहा है?
उत्तर-आचार्य वामन ने गद्य को क वयों की कसौटी कहा है ।यथा -गद्य क वनाम् निकषं वदन्ति।
4. गद्य एवं पद्य में क्या अंतर है?
उत्तर-गद्य में सरलता, सहजता और साधारण भाषा की प्रधानता होती है जब क पद्य में वशेष प्रकार के क्रमबद्ध ताल और लय की योजना के लए असाधारण भाषा का प्रयोग होता है।
5. कस काल में हिंदी गद्य का चहुंमुखी और समृद्ध पूर्ण वकास हुआ?
उत्तर-आधुनिक काल में।
6. आधुनिक युग में हिंदी गद्य का वकास कस लेखक के समय शुरू हुआ?
उत्तर-हिंदी गद्य का वकास भारतेंदु हरिश्चंद्र के उदय के साथ हुआ।
7. भारतेंदु युग के प्र सद्ध गद्य लेखकों के नाम बताइए?
उत्तर-राजा शवप्रसाद सतारे हिंद, राजा लक्ष्मण संह, देवकीनंदन खत्री, बालमुकुंद गुप्त, बालकृष्ण भ आदि।
8. आचार्य महावीर प्रसाद द् ववेदी ने कस पत्रिका का संपादन कया?
उत्तर-आचार्य महावीर प्रसाद द् ववेदी ने "सरस्वती "नामक पत्रिका का सन्
उन्नीस सौ में संपादन कया।

9. द् ववेदी युग की प्रमुख वशेषता बताइए?
उत्तर-इस युग में समकालीन वद्वानों ने अनेक वषयों पर सारग र्भत लेख परिमार्जित और परिष्कृत रूप में प्रका शत होने लगे थे।
10. द् ववेदी युग के प्र सद्ध लेखकों के नाम बताइए?
उत्तर-आचार्य रामचंद्र शुक्ल ,प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद ,महादेवी वर्मा इत्यादि।
11. गद्य की व भन्न वधाएं कौन-कौन सी है?
उत्तर-कहानी, एकांकी ,निबंध ,नाटक, रेखा चत्र, संस्मरण ,आत्मकथा, यात्रा वर्णन ,रिपोर्ताज ,साक्षात्कार, हास्य व्यंग्य ,फीचर आदि गद्य की वधाएं हैं।
12. कहानी कसे कहते हैं?
उत्तर-हिंदी में कहानी अत्यंत प्राचीन वधा है कहानी में जीवन की कसी एक घटना का चत्रण होता है।

13. एकांकी कसे कहते हैं?
उत्तर-आधुनिक एकांकी अंग्रेजी साहित्य की देन है इसे एक अंक वाला नाटक कहा जाता है जो क मानव जीवन के कसी एक पक्ष ,एक चरित्र, एक कार्य अथवा एक भाव की कलात्मक अ भव्यंजना करता है।
14. हिंदी साहित्य की प्रथम एकांकी कौन सी है?
उत्तर-जयशंकर प्रसाद के ' एक घूंट' को हिंदी साहित्य की पहली एकांकी मानते हैं।

15. निबंध से क्या तात्पर्य है?

उत्तर-इसका मौ लक अर्थ बांधना या रोकना है निबंध को प्रबंध, लेख ,रचना ,प्रस्ताव आदि के नाम से जाना जाता है ।इसमें लेखक स्वच्छंदता, सरलता ,आडंबर हीनता और आत्मीयता से कसी वषय पर प्रकाश डालता है।

16. रेखा चत्र कसे कहते हैं?

उत्तर-जिस गद्य रचना में थोड़े से शब्दों में कसी वस्तु या घटना का चत्रण कर पाठक में संवेदना जाग्रत की जाए उसे रेखा चत्र कहते हैं। इसमें अनुभूत जीवन का सत्य व्यक्त होता है। तथा यह एक ही वस्तु ,घटना या चरित्र प्रधान होता है।

17. संस्मरण क्या होता है?

उत्तर-सम्यक् स्मरण ही संस्मरण है इसमें कसी वशेष व्यक्ति या स्थान की वशेषताओं को इस ढंग से प्रस्तुत कया जाता है क वह एक छोटी सी इकाई बन जाता है संस्मरण में कहानी, व्यंग्य, वनोद ,वर्णन , ववरण ,रेखा चत्र आदि का मश्रण रहता है इसके मूल में अतीत की स्मृतियां होती है। महादेवी वर्मा के संस्मरण वह रेखा चत्र प्र सद्ध है।

18. आत्मकथा कसे कहते हैं?

उत्तर-इसमें लेखक स्वयं अपने बीते हुए जीवन का संहावलोकन करके एक व्यापक पृष्ठभू म में अपने जीवन का महत्व दिखलाता है ।इसमें स्वाभा वकता ,सत्यवादिता ,तटस्थता एवं निष्कपटता का गुण होना चाहिए।

19. जीवनी कसे कहते हैं?

उत्तर-जीवनी में कसी लेखक द्वारा कसी अन्य महान व्यक्ति के जीवन के बारे में लखा जाता है।

20. गद्य वधा में यात्रा वर्णन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर-यह एक आधुनिक गद्य वधा है जिसमें साहित्यिक मनोवृति वाला व्यक्ति अपने यात्रा वर्णन को पूर्ण रोचकता और मुक्त रूप से अ भव्यक्ति प्रदान करता है।

21. रिपोर्ताज कसे कहते हैं?

उत्तर-फ्रेंच भाषा के 'रिपोर्ट' शब्द से 'रिपोर्ताज' बना है । यह कसी घटना को उसके वास्त वक रूप में प्रस्तुत करता है इसमें साहित्यिक सरसता और कलात्मकता का समावेश होता है।

22. साक्षात्कार का साहित्यिक महत्व क्या है?

उत्तर- कसी व्यक्ति से प्रश्न पूछ कर उनके उत्तर पाना और लेख बद्ध कर प्रका शत करना साक्षात्कार कहलाता है। इसमें मानव के व्यक्तित्व की अ भव्यक्ति एवं आत्मानुभूति का प्रकाशन होता है।

23. हास्य व्यंग्य लेखन का उद्देश्य क्या है?

उत्तर-इसमें जीवन में व्याप्त वसंगति को व्यंग्य एवं हास्य का लक्ष्य बनाना लेखक का उद्देश्य होता है।

24. गद्य काव्य कसे कहते हैं?

उत्तर-छंद बंधन रहित ,इतिवृत्तहीन, भावपूर्ण और कल्पना प्रधान रचना को गद्य काव्य कहते हैं।

25. फीचर कसे कहते हैं?

उत्तर-पाश्चात्य प्रभाव से आई यथा तथ्य सूचनाओं पर आधारित रचना को फीचर कहा जाता है।

राष्ट्र का स्वरूप – डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल

प्र.1– सच्चे अर्थों में सम्पूर्ण राष्ट्रीय विचारधाराओं की जननी कौन है ?
(अ) पृथ्वी (ब) संस्कृति (स) जन (द) राष्ट्र (अ)

प्र.2– जन का मस्तिष्क है ?
(अ) संस्कृति (ब) नदी (स) पर्वत (द) राष्ट्र (अ)

प्र.3– संस्कृति का अमित भण्डार किसमें भरा हुआ है ?
(अ) लोकगीतों व लोककथाओं में (ब) प्राकृतिक सौंदर्य में (स) जनमानस में (द) धर्म–विज्ञान में (अ)

प्र.4– निम्नलिखित में से कौन–सा राष्ट्र के स्वरूप का आवश्यक अंग नहीं हैं ?
(अ) भूमि (ब) धन (स) जन (द) संस्कृति (ब)

प्र.5– पृथ्वी वसुंधरा क्यों कहलाती है ?

उत्तर– पृथ्वी की कोख में अमूल्य निधियाँ भरी है, जिनके कारण वह वसुंधरा कहलाती है ।

प्र.6– जागरणशील राष्ट्र के लिए आनन्दप्रद कर्त्तव्य किये माना है ?

उत्तर– पृथ्वी का सम्पूर्ण अध्ययन ही एक जागरणशील राष्ट्र के लिए आनन्दप्रद कर्त्तव्य माना गया है।

प्र.7– सैंकड़ों वर्षों से शून्य और अंधकार भरे जीवन के क्षेत्रों मे उजाला कब दिखाई देगा ?

उत्तर– जब चारों ओर से हमारे ज्ञान के कपाट खुलेंगें, तब सैंकड़ों वर्षों से शून्य और अंधकार भरे जीवन के क्षेत्रों में उजाला दिखाई देगा ।

प्र.8– राष्ट्र की वृद्धि कैसे संभव है ?

उत्तर– संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि संभव है।

प्र.9– राष्ट्र का स्वरूप कैसे बनता है ? समझाइये ।

उत्तर– भूमि, भूमि पर बसने वाले जन और जन की संस्कृति इन तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है।

प्र.10– हमारा आवश्यक धर्म क्या है ? राष्ट्र का स्वरूप अध्याय के आधार पर बताईये ।

उत्तर– पृथ्वी की भौतिक स्वरूप की आद्योपांत जानकारी प्राप्त करना, उसकी सुंदरता,उपयोगिता और महिमा को पहचानना हमारा आवश्यक धर्म है।

प्र.11– राष्ट्रीयता की कुंजी क्या है ?

उत्तर– भूमि माता है और मैं इसका पुत्र हूँ। जन के हृदय में इस सूत्र का अनुभव ही राष्ट्रीयता की कुंजी है।

प्र.12– पृथ्वी के वरदानों में भाग पाने का अधिकार किसे व क्यों है ?

उत्तर– जो जन पृथ्वी के साथ माता और पुत्र के सम्बन्ध को स्वीकार करता है, उसे ही पृथ्वी के वरदानों में भाग पाने का अधिकार है।

CBEO BHINDER

प्र.13— '' जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है '' से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर— जिस प्रकार वृक्ष का सर्वोत्तम अंग उसका पुष्प हुआ करता है, उसका सौंदर्य,गौरव और मधु पुष्प में ही विद्यमान रहता है ठीक उसी प्रकार किसी राष्ट्र की संस्कृति ही उसका गौरव,सौंदर्य और राष्ट्रीय जीवन होता है। राष्ट्र—जीवन सौंदर्य और यश उसकी संस्कृति के यश और सौंदर्य में ही अन्तर्निहित होता है। अतः यह सत्य है कि जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है।

प्र.14— राष्ट्र का लोप कब समझना चाहिए ?

उत्तर— यदि भूमि और उस पर बसने वाले जन संस्कृति से विरहित कर दिए जाएं तो राष्ट्र का लोप समझना चाहिए ।

प्र.15— माता अपने पुत्रों को किस भाव से चाहती है ?

उत्तर— माता अपने सभी पुत्रों को समान भाव से चाहती है। पृथ्वी पर बसने वाले सभी जन बराबर है, उनमें ऊँच—नीच का भाव नहीं है।

प्र.16— किसी भी राष्ट्र के स्वरूप के लिए आवश्यक तत्व कौन—कौन से है ?

उत्तर— किसी भी राष्ट्र के लिए निम्नलिखित तीन तत्व आवश्यक है :—

(1) भूमि (2) जन (3) संस्कृति

प्र.17— भूमि और जन के दृढ़ बंधन का आधार क्या है ? राष्ट्र का स्वरूप अध्याय के आधार पर बताइये ।

उत्तर— भूमि और जन के सम्मिलन से ही राष्ट्र के स्वरूप का निर्माण होता है। जब जन के हृदय में भूमि के प्रति माता और पुत्र का संबंध जाग्रत होता है, तब उसके मन में आनन्द और श्रद्धा से भरा प्रणाम भाव प्रकट होता है। ये प्रणाम भाव ही भूमि और जन का दृढ़ बंधन है।

प्र.18— मेघ हमारे अध्ययन की परिधि में क्यों आने चाहिये ? राष्ट्र स्वरूप निबंध के आधार बताइये ।

उत्तर— हमें अपनी मातृभूमि के सांगोपांग अध्ययन के लिए इस पर बरसने वाले मेघों की भी सम्पूर्ण जानकारी रखनी चाहिए। ये प्रतिवर्ष समय पर आकर अपने अमृत—जल से भूमि को सींचते हैं । मेघों के जल से पूरी प्रकृति सरस हो उठती है। पृथ्वी उपजाऊ होती है व सौंदर्य की वृद्धि होती है। अतः मेघ भी हमारे अध्ययन की परिधि में आने चाहिए।

प्र.19— डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने राष्ट्र के भूमि तत्व के अन्तर्गत किन—किन को शामिल हैं ?

उत्तर— सम्पूर्ण भू—भाग पर्वत,वन व नदियाँ आदि को शामिल किया है । साथ ही भू—गर्भ में मौजूद अनमोल खनिज, नदियों का जल, मिट्टियाँ, समुद्री जलचर, वनस्पति,रत्नों के भण्डार आदि ।

प्र.20— लेखक ने राष्ट्रीयता की कुंजी किसे माना और क्यों ? राष्ट्र का स्वरूप अध्याय के आधार पर बताइये।

उत्तर— '' माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या : '' जन के हृदय में इस सूत्र का अनुभव ही राष्ट्रीयता की कुंजी है। इसी भावना से जन के हृदय में राष्ट्र—निर्माण के अंकुर पैदा होते है। ' भूमि माता है और मैं इसका पुत्र हूँ ' यह भाव जब सशक्त होता है तब मनुष्य पृथ्वी के साथ सच्चे संबंधों को प्राप्त करता है। जिस समय भी जन का हृदय भूमि के साथ माता और पुत्र के संबंध को पहचाता है उसी समय राष्ट्रीयता की भावना साकार रूप ग्रहण कर लेती है।

प्र.21— ' उस राष्ट्र का हम स्वागत करते है।' राष्ट्र का स्वरूप अध्याय के आधार बताइये कि लेखक किस प्रकार के राष्ट्र का स्वागत करना चाहते है ?

उत्तर— जो राष्ट्र अपने पूर्वजों का नैतिक चरित्र, धर्म—विज्ञान, साहित्य, कला, संस्कृति आदि के क्षेत्र में पराक्रम और गौरव को धारण करता और उसके तेज को भावी जीवन में साक्षात देखना चाहता है तथा जो राष्ट्र अपने अतीत को भार स्वरूप नहीं मानकर अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनाता है, जहां भूत और वर्तमान में कोई विरोध नहीं है वरन् समन्वय भाव हो, लेखक उस राष्ट्र का स्वागत करना चाहते है।

प्र.22— मातृभूमि के प्रति पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य क्या है ? राष्ट्र का स्वरूप अध्याय के आधार बताइये ।

उत्तर— मातृभूमि के प्रति अनुराग एवं सेवा—भाव रखना ही पुत्र का स्वाभाविक कर्तव्य है। पुत्र का माता के प्रति निःस्वार्थ सेवा एवं प्रेमभाव होता है। यदि जन के मन में माता के प्रति लेश मात्र भी स्वार्थ भाव

CBSEGUIDER

उत्पन्न होता है तो यह उसके अधोपतन का सूचक है। अतः जो मातृभूमि के प्रति स्नेह भाव से जुड़ा रहता है वही माता के वरदानों में भाग पाने का अधिकारी होता है।

प्र.23– हमारी राष्ट्रीयता कैसे बलवती हो सकती है ? राष्ट्र का स्वरूप अध्याय के आधार बताइये ।

उत्तर– हमें अपनी मातृभूमि के भौतिक रूप, सौंदर्य और समृद्धि के प्रति सचेत होना आवश्यक है। इसके पार्थिव स्वरूप के प्रति हम जितने अधिक जागरूक होंगें हमारी राष्ट्रीयता उतनी ही बलवती होगी। इसके भौतिक स्वरूप की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना, सुन्दरता, उपयोगिता व महिमा को जितना अधिक पहचानेगें हमारी राष्ट्रीयता उतनी ही बलवती होगी।

पाठ का नाम – निर्वासित (कहानी)
लेखिका – सूर्य बाला

वस्तुनिष्ठ प्रश्न – **उत्तर**

प्र.1 निर्वासित कहानी के लेखक है –

(क) दीप बाला (ख) प्रेमचन्द्र (ग) जयशंकर प्रसाद (घ) सूर्यबाला (घ)

प्र.2 'निर्वासित' कहानी का अन्त होता है –

(क) सुखान्त (ख) प्रसादांत (ग) दुखांत (घ) शान्त (ग)

प्र.3 माँ बाबूजी को अपने पास बुलाने के पश्चात् बेटों ने गाँव के मकान का क्या किया ?

(क) बेच दिया (ख) ढ़हा दिया

(ग) किराए पर दे दिया (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

अति–लघुत्तरात्मक प्रश्न –

प्र.4 बड़े बेटे के घर जाने पर माँजी बच्चों के लिए क्या कार्य करती है ?

उ– बडे बेटे के घर जाने पर माँजी बच्चो को सुलाने के लिये ढाका, बंगला कौआ की कहानी सुनाती है।

प्र.5 निर्वासित कहानी के आरम्भ से अन्त तक कौनसे भाव अभिव्यक्त हो रहे थे ?

उ– निर्वासित कहानी में वृद्ध दम्पती अपने स्वतंत्र जीवन के विपरित गाँव छोडकर बेटे–बहू के पास रहने लगे। बुजुर्ग दम्पती का जीवन उदासीन व नीरसता से भर गया था। अतः कहानी के प्रारम्भ से अन्त तक उदासीन व नीरस भाव अभिव्यक्त होते रहे है। वृद्ध दम्पती के प्रति करूणा के भाव भी उत्पन्न होते है।

प्र.6 बड़े बेटे राजेन ने अपने पिता से क्या प्रार्थना की?

उ– बाबूजी एवं माँजी अपने बेटे के घर आकर अपना मन लगाने का प्रयत्न करने लगे। परन्तु उनके मन के अनुरूप वातावरण नहीं मिल पाया। राजेन ने अपने पिताजी से विनम्र प्रार्थना की कि शाम को मेरे मित्र घर पर आएं तो आप कृपया घर के अन्दर चले जाया कीजिये। उन्हें ड्रिंक्स लेनी होती है एवं स्मोक करना होता है। आप बुजुर्ग है इसलिये उन्हे संकोच होता है।

प्र.7 रीमा ने अपनी सास को क्या समझाया?

उ– रीमा अपने सास–श्वसूर के क्रिया कलापो से अप्रसन्न थी। एक दिन रीमा ने मांजी से बड़ी विनम्रता से कहा कि "मांजी बाबूजी से कहिएगा कि पूजा पाठ में जोर से न बोलें, यहां सब अफसरो के बंगले है उन्हे अच्छा नहीं लगता, अतः आप लोग मन मे ही बोल लिया करें।

प्र.8 मांजी के चाय बनाते समय क्या घटना घटित हुई?

उ– बाबूजी के कहने पर मांजी दोपहर दो बजे रसोई में चाय बनाने चली गई। मिट्टी का तेल स्टोव में भरने लगी तो बोतल हाथ से फिसल कर टूट गई जिससे तेल फर्श पर बिखर गया वह जल्दी–जल्दी कपड़े से केरोसीन सूखाने लगी। तभी आवाज सुन कर बड़ी बहू रसोई में आयी तो मांजी रीमा को देख कर अपराधिन सी दयनीय अवस्था में खड़ी रही। बहू ने कहा कि अभी दोपहर में चाय कौन पियेगा? शाम को नौकर आकर बना देगा।

CBSE HINDER

प्र.9 अपना घर छोड़कर बेटे के यहाँ आने की घटना के समय पड़ोसियों ने क्या विचार व्यक्त किये?

उ– पिताजी के सेवानिवृत होने के डेढ वर्ष बाद ही राजेन अपने माता पिता को अपने पास आने का संदेश देता है। यह सुन कर पड़ोसियों ने भी बेटे–बहू की प्रशंसा की थी कि बेटा बड़ा अफसर है, आज्ञाकारी है तो बहू भी बहुत सुशील है। अपना घर और सामान छोड़कर दोनों अपने पुत्र के यहाँ रहने आ गये। किन्तु एक पड़ोसन बूढ़ी दरोगानी ने अन्य लोगों से अलग राय देते हुए कहा था कि स्वतंत्रता या स्वराज के सामने सारे सुख व्यर्थ है। बेटे–बहू का व्यवहार देख कर मांजी को दरोगानी की बातें याद हो आई।

प्र.10 माँजी ने बाबूजी को घर चलने का कहने पर बाबूजी की क्या प्रतिक्रिया थी?

उ– एक दिन मांजी ने कहा कि घर चले, बहुत दिनो से जाकर देखा भी नहीं। घर का नाम सुनकर पहले तो बाबूजी खुश हुए, परन्तु फिर उदास होकर बोले कि पूरा घर तो किराए पर दे दिया है और फिर इस उम्र में कुछ दिनो के लिये चलने से क्या फायदा। इस प्रकार वे दोनों उदास और अनमने से जीवन यापन कर रहे थे।

प्र.11 "माँ–बाबूजी" दम्पती पर विपत्तियों का पहाड़ कब टूट पड़ा?

उ– वृद्ध दम्पती अपने बड़े बेटे के घर पर घुटते हुए अपना जीवन यापन कर रहे थे। एक दिन दूसरे शहर में नौकरी कर रहा छोटा बेटा रणधीर वहाँ आया। सबसे मिलना–जुलना, हँसी मजाक आदि किये। दूसरे दिन सुबह वृद्ध दम्पती को पता चला कि बाबूजी छोटे बेटे के साथ रहने जाएंगे और मांजी बड़े के साथ यहीं रहेगी। सात–आठ महीनो बाद मांजी छोटे के साथ और बाबूजी बड़े के साथ रहेंगे। पुत्रो के इस निष्ठुरतापूर्ण–निर्णय से वृद्ध दम्पती पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा।

प्र.12 निर्वासित कहानी की नायिका(माँजी) का समय पहले कैसे व्यतीत हो जाता था?

उ– कहानी की नायिका "माँजी" के बेटे जब छोटे थे (राजेन व रणधीर) तब सारा समय उनको सम्भालने में ही व्यतीत हो जाता था। भरी दोपहरी में भी उन्हे आराम करने का समय नहीं मिल पाता था। बच्चो को सुलाने के लिये कहानियाँ सुनाती, आंगन व बरामदे मे पानी का छिड़काव करती तथा पानी को ठंडा रखने के लिये उसे सुराहियों मे भरती थी। और शाम होते–होते सोंफ व काली मिर्च की ठंडाई पीसती थी और समय का पता ही नहीं चलता था।

प्र.13 "वह बहू के दर्शन–ज्ञान और अकाट्य तर्क के सामने निरूत्तर थी।" स्पष्ट करे।

उ– बाबूजी बड़े ऊँचे स्वर में पूजा पाठ किया करते थे। इस बात पर राजेन की पत्नी रीमा ने एक दिन बड़े ही मीठे स्वर में मांजी को समझाया कि आप कृपया बाबूजी से कहिये कि इतनी तेज आवाज में पाठ न किया करे, वहाँ गाँव की बात अलग थी। यहाँ सभी घर बड़े अधिकारियों के है, और फिर अकाट्य तर्क देती है कि कबीर दास जी ने भी कहा है कि "ता पर चढी मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय"। आप और बाबूजी मन में ही पूजा पाठ किया करे ये गुस्सा होते है। इस प्रकार माँजी बहू के दर्शन–ज्ञान और अकाट्य तर्क के सामने निरूत्तर हो गई।

प्र.14 निर्वासित कहानी में निहित लेखिका का उद्देश्य क्या है?

अथवा

"वर्तमान परिपेक्ष्य में वृद्ध दम्पतियो को एकांकीपन/निर्वासन का कष्ट भोगना पड़ रहा है।" उक्त कहानी के आधार पर इस कथन की व्याख्या कीजिये।

उ– प्रस्तुत कहानी में अपने जीवन का उत्तरार्द्ध जीवनयापन कर रहे वृद्ध दम्पती के दुःखो की कहानी है। जो अपने स्वतंत्रतापूर्ण जीवन को छोड़कर अपने पुत्र एवं पुत्र वधू की इच्छा, भावना एवं विचारो के अनुसार निहायत ही दुःखद स्थिति में रहने को विवश है। सबसे त्रासद स्थिति तब उत्पन्न होती है, जब जीवन भर के सुख–दुःख के साथी इस उम्र में दोनो बेटो के साथ अलग–अलग रहने को विवश हो जाते है। कथा लेखिका का वृद्ध दम्पती की निर्वासित जीवन की व्यथा एवं छटपटाती संवेदना को उकेरना मूल उद्देश्य है।

CBSE CHINDER

वास्तव में ये उन दम्पतियों की व्यथा न होकर वर्तमान समय में हर दूसरे घर की व्यथा है। वृद्ध दम्पतियो को एकांकी जीवन जीने को उनकी अपनी संताने ही स्वार्थ पूर्वक विवश कर रही है। जो कि उनके प्रति प्रताड़ना ही है।

प्र.15 "निर्वासित" कहानी की कथा वस्तु को अपने स्वयं के शब्दो मे लिखो।

उ– लेखिका सूर्यबाला ने बूढ़े दम्पतियो के जीवन के अवसान वेला में भोगे जाने वाली पीड़ा का सटीक वर्णन किया है। इसमें वृद्ध दम्पती अपने गाँव का स्वतंत्रता पूर्वक जीवन छोड़कर अपने पुत्र–पुत्र वधू की इच्छानुसार रहने को विवश हो जाते है। यहाँ के वातावरण में इनका दम घुटता है क्योकि वे अपनी इच्छानुसार न तो जोर से बोल सकते है और न ही जब तब यहाँ–वहाँ आ जा सकते है। उन्हें अपनी इच्छाओं का दमन करके अपने बहू–बेटे के कहे गये कार्य करने पड़ते है। उनका छोटा बेटा अन्य शहर मे कार्यरत है।

हद तो तब हो जाती है जब छोटा बेटा कहता है कि आज से बाबूजी मेरे साथ रहेंगें जब कि माताजी बड़े बेटे के साथ यहीं रहेगी। एक का खर्च बड़ा बेटा जब कि दूसरे का खर्च छोटा बेटा उठाएगा। इससे इनका हृदय ऐसे करूण–क्रन्दन कर उठा जैसे बाण–बिद्ध–क्रौंच पक्षी का जोड़ा कर उठा था तथा जिसे देखकर वाल्मिकी का हृदय करूणा की अथाह लहरो से भर गया था।

प्र.16 "और आंखो में बाण–बिद्ध–क्रौंच **युगल की मूक पीड़ा थी" इस पक्ति मे निहित क्रोंच–युगल का संदर्भ दिया गया है। उक्त प्रसंग का संक्षिप्त परिचय दो।**

उ–"निर्वासित" कहानी मे वृद्ध पति–पत्नी के अलग–अलग रहने की विवशता की पीड़ा की तुलना बाण–बिद्ध–क्रोंच पक्षी की पीड़ा से की है। पौराणिक कहानी है कि एक बार क्रोंच पक्षी–(सारस) का जोड़ा किसी नदी के किनारे प्रेम क्रीड़ा में निमग्न होकर आनन्द विभोर हो रहा था। नदी में प्रातः स्नान कर सूर्य को अर्ध्य देते हुए वाल्मिकी ऋषि ने देखा कि किसी शिकारी ने नर पक्षी को अपने बाणों से बिन्ध दिया। उसकी मृत्यु हो जाती है। कुछ समय पश्चात उसकी मादा भी विरह वेदना में अपना सिर पटक–पटक कर अपने प्राण त्याग देती है। इस दृश्य को देखकर ऋषि का हृदय वेदना से भर जाता है। उसी क्षण ऋषि ने उस शिकारी को सम्मान रहित जीवन जीने का शाप दे दिया।

प्र.17 "निर्वासित" कहानी के कहानीकार का साहित्यिक परिचय दीजिये।

उ– "सूर्यबाला" का जन्म सन् 1943 में बनारस में हुआ था। इन्होने सर्वप्रथम "मेरे संधि पत्र"
नामक उपन्यास का लेखन किया। यह एक चर्चित उपन्यास था इनकी रचनाओ मे प्रमुख रूप से मानव की कोमल भावनाओ का समावेश रहता है। नारी अस्मिता एवं नारी स्वतंत्रता तथा गाँधी वादी दृष्टि से इनकी रचनाऐं समृद्ध है। इन्हें कई साहित्यिक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए। इनकी रचनाऐं निम्न है–
कहानी संग्रह– कात्यायनी संवाद, मुंडेर पर, दिशाहीन, साँझवती, गृहप्रवेश, मानुष गंध आदि।
उपन्यास– सुबह का इन्तजार, अग्निपंखी, यामिनीकथा, दीक्षान्त
व्यंग्य– धृतराष्ट्र टाइम्स, झगडा निपटाकर दफ्तर, अजगर करे न चाकरी

प्र.18 "अब तो असिस्टेन्ट भी पूरे घाघ मिलते है। कड़ी नजर रखते है कस्टमर्स पर।" इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिये।

उ– एक दिन बातचीत में अपनी अफसरी पर चर्चा करते हुए अपने पिता एवं भाई से कहता है कि बड़ा अफसर होने का अब कोई लाभ नहीं है अर्थात अब ऊपर की कमाई के दिन लद गये क्योकि अब छोटे कर्मचारी अर्थात् लिपिक वर्ग कार्यालय में आने वाले लोगों को पहले ही रिश्वत देने को मजबूर कर देते है जिससे बड़े अफसरों को रिश्वत की राशि नहीं मिलती है। सरकारी नौकरी मे तो छोटे पदों पर कार्य करने वाले ज्यादा लाभ कमाते है। ऐसा कह क रवह अपने आपको कम कमाने वाला सिद्ध करने का प्रयास करता है। जब कि उसका छोटा भाई अधिक कमाई करता है। यह बताना चाहता है।

प्र.19 उक्त कहानी का शीर्षक "निर्वासित" रखा गया है यह कहाँ तक उचित है?

उ– कहानी या उपन्यास का शीर्षक इस प्रकार होना चाहिये कि केवल मात्र शीर्षक के द्वारा ही कहानी या उपन्यास की विषय वस्तु का ज्ञान हो जाए। प्रस्तुत कहानी मे लेखिका सूर्यबाला ने निहायत उचित शीर्षक का चुनाव किया है। जिस प्रकार किसी देश में युद्ध, भुखमरी, हिंसा, प्रताड़ना आदि से वहाँ के निवासी सुखद वातावरण की खोज में अपना सब कुछ छोड़कर अन्यत्र पलायन को मजबूर हो जाते है इसी घटना को निर्वासन कहा जाता है। प्रस्तुत कहानी मे भी वृद्ध दम्पती अपने पुत्रो के अतिलोभ के कारण अलग–अलग जीवन यापन को मजबूर हो जाते है।

वास्तव में बुढापे में दम्पतियों को एक दूसरे की भावनाओं को समझने की ज्यादा आवश्यकता होती है। ऐसे समय में इन्हे एक दुसरे को जुदा करना, निर्वासन से कम घटना नहीं है अतः शीर्षक की सार्थकता सर्वथा उचित है।

प्र.20 निर्वासित कहानी मे वर्णित वृद्ध दम्पती पर अपने दोनो बेटों के साथ अलग–अलग रहने की बात सुन कर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उ– जब वृद्ध दम्पती ने यह बात सुनी कि अब उन्हे दोनो बेटो के साथ अलग–अलग रहना होगा, दोनो के मध्य जब दो शहरो की दूरी हो गई तो उन्हें अथाह पीड़ा हुई। दोनो एक दूसरे को देखकर मन ही मन बड़े दुःखी हुए जैसे आँखे पथराकर एक ही दिशा में टिक गई। उन आँखो में एक ही प्रश्न दिखाई पड़ा जैसे पूछ रही हो कि हमारा अपराध क्या है जिसकी सजा हमें एक दुसरे का विच्छोह सहना पड़ रहा है। जिसकी सजा स्वरूप घोर यातनामय जीवन जीने को मजबूर किया जा रहा है। वे इस स्थिति की कल्पना मात्र से ही अवाक् रह गये। उन्हें बोलने की सामर्थ्य भी न रहा जिव्हा लड़खड़ाने लगी, शरीर काँपने लगा। वे असहाय से अन्धकारपूर्ण व निराशापूर्ण भविष्य की कल्पना से निष्प्राण से होते जा रहे थे।

प्र.21 आप अपने आपको वृद्ध दम्पती का बड़ा पुत्र मानते हुए निर्वासित कहानी को क्या मोड़ देना चाहेंगे?

उ– यदि निर्वासित कहानी मे बड़े पुत्र राजेन की जगह मैं स्वयं होता तो वृद्ध दम्पती के निर्वासन का विरोध करता। मैं अपने माता–पिता की इच्छाओं का सम्मान करता, आदर करता। जब तक उनका शरीर इनकी नियमित दिनचर्या, रोजमर्रा के कार्य करने में समर्थ होता, तब तक उन्हें गाँव में ही रहने देता। गाँव में पास–पड़ौसी भी किसी सगे से कम नहीं होते क्योकि अकेले रहने वाले दम्पतियों को गाँव में पड़ौसी ही सभी कार्य मे सहयोग करते है तथा बीमार होने पर भी उन्हें औषधी आदि का प्रबन्ध करते है।

जब वे दैनिक कार्य करने में असमर्थ हो जाते तो मैं उन्हें एक साथ मेरे पास ही रखता एवं उन्हें निर्वासन का दुःख भोगने के लिये कभी भी एक दूसरे को जुदा नहीं करता।

पाठ का नाम – सुभाष बाबू

1. सुभाष बाबू का जन्म हुआ?
   (अ) 23 फरवरी 1897 (ब) 30मार्च1926
   (स) 2 अक्टूबर 1950 (स) 1मई 1927 (अ)

2. सुभाष बाबू की मातृभाषा थी ?
   (अ) हिंदी (ब) अंगेजी
   (स) बंगला (द) उर्दू (स)

3. मातृ भूमि की सेवा का मन्त्र सुभाष बाबू को किस से मिला ?
   (अ) गाँधी (ब) नेहरु
   (स) तिलक(द) विवेकानंद (द)

4. सुभाष बाबू आई.सी.एस. में कब चुने गए?

(अ) अगस्त 1940 (ब) सितम्बर 1920

(स) मई 1924 (द) मार्च 1945 (ब)

5. सुभाष बाबू को साधू जीवन से घृणा क्यों हो गई ?

उत्तर- सुभाष बाबू का ध्यान योगाभ्यास और अध्यात्म की ओर लग रहा था | उन्होंने एक सच्चे महात्मा के चरणों में बेठ कर योग सीखने की सोची | एक दिन घर से निकल गए और अनेक तीर्थों ,आश्रमों, और संत निवासों में जाकर अनेक महात्माओं से मिले , देखा कि हजारों साधू गांजा, भांग, और दुसरे नशे में चूर रह कर जीवन की अमूल्य घड़ियाँ व्यर्थ खो रहे हैं| यह देख कर उन्हें साधू जीवन से घृणा हो गई |

6. सुभाषबाबू के माता-पिता का क्या नाम था ?

उत्तर- पिता का नाम श्री जानकीनाथ बोस और माता का नाम श्रीमती प्रभावती था |

7. सुभाष बाबू के अनुसार अंग्रेज कौनसी भाषा समझतेथे?

उत्तर – सुभाष बाबू के अनुसार अंग्रेज शक्ति की भाषा समझतेथे |

8. हैदर जैसे गुंडे का ह्रदय परिवर्तन किस कारण हुआ ?

उत्तर – एक दिन हैजे ने हैदर के परिवार को भी चपेट में ले लिया | इससे मुक्ति के लिए वह नगर के प्रत्येक डाक्टरऔर वैद्य के पास गया किन्तु कोई भी उसके साथ नहीं आया | जब वह निराश हो कर लौटा तो यह देख कर चकित रह गया कि सेवादार बच्चे उसके घर की सफाई कर रहे थे , दवाई पिला रहे थे , उनका मन बहला रहे थे | उनके सेवा कार्य को देख कर हैदर का ह्रदय परिवर्तन हो गया |

9. सुभाष बाबू के मन में कौनसे दो संशय थे ?

उत्तर –(1.) प्रथम तो यह कि सांसारिक जीवन की ओर मेरे मन में आकर्षण आता था किन्तु मेरी आत्मा उसके विरुद्ध विद्रोह करती थी |

(2.) दूसरा यह कि मेरे मन में भोग की चेतना पैदा होने लगी जो कि प्राकृतिक थी लेकिन मेरी आत्मा उसे अनैतिक मानती |

10. स्कूल के किस प्रधानाध्यापक ने उन्हें बहुत प्रभावित किया ?

उत्तर – बाबू बेनी माधव दास ने उन्हें बहुत प्रभावित किया |

11. कटक में आये सन्यासी ने कौनसी तीन बातें बताई ?

उत्तर – (1) निरामिष भोजन,(2) नियमित मंत्र पाठ और(3) नियमित माता पिता के चरण स्पर्श करना |

12. घर में नज़रबंद कर दिए जाने के बावजूद नेताजी किस प्रकार बर्लिन पहुंचे ?

उत्तर – 15 जनवरी 1941 को सायंकाल एक मौलवी के वेश में नेताजी घर से निकल पड़े और अफगानिस्तान के रास्ते से मास्को होते हुए बर्लिन पहुँच गए |

CBEO BHINDER

भारत के महान वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बोस (आत्मकथा)

प्र. 1 योगी कथामृत कस महापुरुष से सम्बं धत है।

(अ) युक्तेश्वर जी से

(ब) महावतार बाबा जी से

(स) योगानंद जी से

(द) स्वामी प्रणवानंद जी से

उत्तर - (स) योगानंद जी से

प्र.2 जगदीश चंद्र बोस वैज्ञानिक थे -

(अ) परमाणु वज्ञान के

(ब) जीव वज्ञान के

(स) भूगर्भ शास्त्र के

(द) वनस्पति शास्त्र के

उत्तर - (द) वनस्पति शास्त्र के

प्र.3 भारत के महान वैज्ञानिक सर जगदीश चंद्र बोस पाठ के लेखक कौन है ?

उत्तर - परमहंस योगानंद।

प्र.4 जगदीश चंद्र बोस के आत्मकथांश का मूल स्वर क्या है ?

उत्तर - जगदीश चंद्र बोस के समष्टि मूलक उदार वचार तथा जड़ चेतन के प्रति एकात्मक भाव तथा संवेदना वर्तमान वश्व के प्रस्तर तुल्य जीवन में स्नेह व सरसता का संचार करेगी।

प्र.5 वायरलेस का आ वष्कार मार्कोनी से पहले कसने कया था ?

उत्तर - जगदीश चंद्र बोस ने।

प्र.6 पेड़ पौधों में कौन-कौनसी भावानुभूति होती है ?

उत्तर - प्रेम,घृणा,आंनद,भय,सुख, दुःख, मूर्च्छा और अन्य उत्तेजनाओं के प्रति असरल प्रकार की प्रति क्रयाओं की भावानुभूति जिस प्रकार सब प्रा णयों को होती है, उसी प्रकार सब पेड़ पौधों को भी होती है।

प्र.7 मंदिर में मूर्ति वहीन रिक्त स्थान क्या सू चत करता है ?

उत्तर - ईश्वर की निराकारता को सू चत करता है ।

प्र. 8 वज्ञान के उपासक का जीवन अनिवार्य रूप से संघर्ष से कैसे भरा होता है ?

उत्तर - लाभ और हानि,सफलता और वफलता को एक समान मानते हुए उसे अपना जीवन प्रेमश्रद्धा युक्त अदर्य के रुप में अर्पण करना पड़ता है।

प्र. 9 संसार को अपनी वजय के अनुभव का फल कौन प्रदान करता है ?

उत्तर - जिसने संघर्ष कर वजय प्राप्त की हो।

CBEO BHINDER

प्र. 10 सभी आ वष्कारक वैज्ञानिक वास्त वक प्रयोगशाला कसे व कैसे मानते है ?
उत्तर - वास्त वक प्रयोगशाला मन है, जहाँ वे माया के पर्दे के पीछे छिपे सत्य के नियमों को खोज निकालते है ।

प्र.11 पच्चीस शताब्दियों पूर्व भारत में कौन-कौन से वश्व वद्यालय थे ?
उत्तर - नालंदा और तक्ष शला।

प्र.12 पौधों से फूल तोड़ने पर संत की क्या प्रति क्रया रही, जिसे योगानंद जी ने जगदीश चंद्र बोस के सामने व्यक्त कया ?
उत्तर - योगानंद जी ने जगदीश चंद्र बोस के सामने एक संत का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा क वे कभी फूल नही तोड़ते थे। वे कहते थे क गुलाब के पौधे से में उसका सौन्दर्या भमान कैसे छीन लूँ । अपनी उद्दण्डता से उसे ववस्त्र करके उसके आत्मसम्मान को धक्का कैसे पहुँचाऊ।योगानंद जी ने जगदीश चंद्र से कहा क सर आपके इस क्षेत्र में आने से पहले तो सारी श्रष्टि में व्याप जीवन की अद् वतीय धड़कन एक क व की कल्पना मात्र लगती होगी।

प्र.13 बोस के क्रेस्कोग्राफ की क्या वशेषता है ? ल खए।
उत्तर - बोस के क्रेस्कोग्राफ की परिवर्धन शक्ति एक करोड़ गुना है। यह माइक्रोस्कोप की तुलना में बहुत अ धक तुलना वाला यंत्र है जो प्रकृति जगत के बहुत से भेद और रहस्य को खोल देता है। यह यंत्र सद्ध कर देता है क पेड़ पौधों में भी संवेदनशील स्नायु तंत्र होता है।
प्र.14 ऋ ष तुल्य वैज्ञानिक बोस के व्यक्तित्व का वर्णन कीजिए।
उत्तर - वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बोस स्वभाव से गंभीर,प्रशांत और एकांत प्रेमी व्यक्ति थे। शष्टाचार से युक्त व्यक्तित्व सुगठित शरीर तथा स्वप्निल नेत्रों वाले रूपवान, ज्ञानवेता बोस का बोलने में वशुद्ध उच्चारण उनके वैज्ञानिक स्वभाव को दर्शाता था।क्रेस्कोग्राफ यंत्र के आ वष्कार से उन्होंने वनस्पति शास्त्र में नयी चेतना का संचार कया। ऋ ष तुल्य वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बोस ने अपने आ वष्कारों से कोई आ र्थक लाभ उठाने की चेष्टा नहीं की।
प्र.15 टिन धातु के टुकड़े पर बोस द्वारा कये गए प्रयोग का वर्णन कीजिये ?
उत्तर - वैज्ञानिक बोस के अनुसार धातुओं की प्राण शक्ति उत्तेजना के प्रभाव में अनुकूल या प्रतिकूल प्र कया दिखाती है। यह समझाने के लये उन्होंने आण्विक संरचना की लक्षण स्वरूप तरंगों को अं कत करने वाले लेखा चत्र को दिखाया। जब उन्होंने टिन को क्लोरोफॉर्म लगाया तब कंपन लेखन थम गया। जब धीरे-धीरे उस टिन की सामान्य अवस्था लौट आई तब वह पुनः शुरू हो गया। इसके पश्चात बोस महाशय ने एक वषैला रसायन लगाया। टिन के छटपटाते छोर के साथ-साथ सुई ने अद्भुत रूप से रेखा चत्र पर मृत्यु की सूचना अं कत कर दी। इस प्रकार उन्होंने यह सद्ध कया क धातुओं में भी प्राण शक्ति वद्यमान होती है, जो परिस्थिति के अनुसार प्रति क्रया भी करती है।

प्र.16 मछली पात्र में डाले जाने वाले पौधे का क्या नाम है ? इसकी क्या वशेषता है।
उत्तर - निटेला - इसमें एक लंबी को शका होती है, उसकी को शका में और तंत्री तंतु की को शकाओं में पूर्ण समानता होती है। कोई भी भन्नता नही होती है। निटेला पौधे के तंतुओ को उत्तेजित कये जाने पर वे वद्युत तरंगों का निर्माण करते है।

प्र. 17 वनस्पति जगत के जीवन की अ वभाज्य एकता तथा गति दर्शाने वाले यंत्र का नाम लखो ?
उत्तर - क्रेस्कोग्राफ।
प्र.18 जगदीश चंद्र बोस के अंतरंग क व मत्र का नाम लखो ?
उत्तर - रवीन्द्रनाथ टैगोर।

CBEO BHINDER

प्र.19 लेखक ने जगदीश चंद्र बोस का परिचय कन शब्दों में प्रस्तुत कया है?

उत्तर - वे ऋ ष तुल्य महान वैज्ञानिक मेरे घर के पास ही रहते थे। इनके प्रति मेरे हृदय में लम्बे समय से श्रद्धा भाव था। वे गम्भीर प्रशान्त और एकांत प्रेमी वनस्पति शास्त्र के ज्ञाता थे। वे बहुत ही वनम्र और शष्ट व्यक्ति थे। वे घने केश, वस्तीर्ण ललाट तथा स्वप्निल नेत्रों के रूपवान व्यक्ति थे। उनका शरीर सुगठित था। बोलने में उनका वशुद्ध उच्चारण शुरु से ही उनके वैज्ञानिक स्वभाव को दर्शाता था।

प्र. 20 जगदीश चंद्र बोस को वायरलेस का आ वष्कार करने का श्रेय क्यों नही मल सका ?

उत्तर - जगदीश चंद्र बोस ने वायरलेस कोहिरर(Wireless Coherer) और वद्युत तरंगों की वक्रता दर्शाने वाले यंत्र का आ वष्कार सबसे पहले कया था। परंतु इस भारतीय वैज्ञानिक ने अपने आ वष्कारों से कोई आ र्थक लाभ उठाने की चेष्टा नही की। शीघ्र ही उन्होंने अपना ध्यान अजैव से जैव जगत की ओर मोड़ दिया। इस कारण उनको वायरलेस के आ वष्कार का श्रेय नही मल सका।

प्र. 21 जगदीश चंद्र बोस ने अपने प्रयोगशाला में उपलब्ध सु वधाओं के बारे में क्या इच्छा व्यक्त की ?

उत्तर - जगदीश चंद्र बोस ने कहा क मेरी यह इच्छा है क इस संस्थान की सु वधाएं सभी देशों के अनुसंधानकर्ताओं के लये उपलब्ध हो। इसमें मैं अपने देश की परम्पराओं को आगे चलाने का प्रयास कर रहा हूं। पच्चीस शताब्दियों पूर्व भी भारत नालंदा और तक्ष शला के अपने प्राचीन वश्व वद्यालयों में वश्व के सभी हिस्सों से आने वाले छात्रों को ज्ञान प्राप्ति की सु वधा उपलब्ध कराता था।

'भोर का तारा' (मंदाकिनी)

प्र.1 मंदाकिनी पुस्तक में संकलित पाठ 'भोर का तारा' के लेखक और पाठ की विधा बताइए।

उत्तर – लेखक जगदीश चन्द्र माथुर और विधा एकांकी है

प्र.2 'भोर का तारा' एकांकी मूलभाव या उद्देश्य लिखिए?

उत्तर –यह जगदीश चन्द्र माथुर की एक ऐतिहासिक एकांकी है जिसमें लेखक ने व्यक्तिगत प्रेम और सौन्दर्य को त्याग कर, राजधर्म के निर्वाह हेतु लोकमन में राष्ट्रप्रेम का भाव जगाया है और बलिदान की प्रेरणा दी है। इसका कथानक गुप्त वंश के अंतिम प्रतापी शासक स्कन्द गुप्त के शासन से सबंधित है।

प्र.3 'भोर का तारा' एकांकी के मुख्य पात्र का परिचय दीजिए।

उत्तर – इस एकांकी का मुख्य पात्र शेखर है जो कि गुप्त साम्राज्य की वैभव पूर्ण नगरी उज्जयिनी का रहने वाला है,शेखर एक प्रतिभावान व भावुक हृदय कवि है जो हृदय–सृष्टि के अनुपम सौन्दर्य में डूबा रहता है तथा इसकी पूर्ति नारी यानि अपनी प्रेयसी छाया में देखता है । सम्राट कवि की प्रतिभा से प्रभावित होकर उसे राजकवि बना देता है साथ ही उसका विवाह छाया से हो जाता है।

CBEO BHINDER

प्र.4 एकांकी में 'भोर का तारा' नामक रचना करने के बाद क्या घटनाक्रम होता है?

उत्तर – 'भोर का तारा' रचना करने का बाद शेखर उसे राजा को भेंट करना चाहता है किन्तु अचानक राजनैतिक स्थिति में परिवर्तन होता है और हूण शासक तोरमाण तक्षशिला पर आक्रमण कर देता है। इस संकट में माधव राजकवि शेखर से उसकी वाणी मांगता है जो कि लोगों में राष्ट्रप्रेम का भाव जगाएं और उन्हें बलिदान के लिए प्रेरित करे। शेखर राजधर्म के निर्वाह हेतु अपनी 'भोर का तारा' रचना को अग्नि भेंट कर देता है और राजधर्म का निर्वाह करता है।

प्र.5 माधव ने शेखर को तक्षशिला से आकर क्या सूचना दी?

उत्तर – पश्चिमोत्तर सीमा पर आग लग चुकी है हूणों का सरदार तोरमाण भारतवर्ष पर चढ़ आया है जिसने सिंधु नदी को पार कर लिया है। सेना तक्षशिला को पैरों तलें रौंद रही है। इस समय तक्षशिला संकट में है और तुम्हारी ओजस्वी वाणी की आवश्यकता है।

प्र.6 शेखर ने अपने जीवन की कौनसी दो साधनाएँ बताई?

उत्तर – शेखर ने अपने जीवन की दो निम्नलिखित साधनाऐं बताई – एक छाया का प्यार और दूसरी उसकी कविता।

प्र.7 शेखर को राजकवि क्यों बनाया गया?

उत्तर – राजदरबार में छाया ने गीत सुनाकर महराज से निवेदन किया कि यदि यह गीत आपको पसंद है तो इसके लिखने वाले कवि को अपने दरबार में बुलाइये। सम्राट स्कंदगुप्त ने दूसरे दिन से ही शेखर को दरबार में बुलाकर राजकवि बना दिया क्योंकि उस गीत का रचनाकार शेखर ही था जिस गीत को छाया ने सम्राट को सुनाया और सम्राट उस गीत पर रीझ गये।

प्र.8 शेखर छाया को कौनसा भेद बताता है?

उत्तर– शेखर अपने महाकाव्य 'भोर का तारा' के विषय में छाया को बताता है कि यह महाकाव्य उसने उस दिन लिखना प्रारंभ किया था जिस दिन छाया का भाई देवदत्त तक्षशिला के क्षत्रप वीरभद्र को दबाने के लिए गया था। यह महाकाव्य शेखर और छाया के अमर प्रेम का प्रतीक था जिसे शेखर सम्राट के समक्ष दरबार में पढ़कर सुनाने की तमन्ना पाले हुए था।

प्र.9 ''देश तुमसे यह बलिदान माँगता है।'' यह वाक्य किसने किससे और कब कहा?

उत्तर– यह वाक्य माधव ने शेखर से उस समय कहा था जब हूणों का सरदार तोरमाण तक्षशिला को पददलित कर रहा था। माधव शेखर से आग्रह करता हुआ कहता है कि वह अपनी ओजस्वी वाणी के प्रभाव से और अपने शब्दों के बल पर युवकों की सोई हुई शक्ति को मातृभूमि के हित में लड़ने के लिए प्रेरित करो । शेखर तुम अपने प्रेम को भूलकर मातृभूमि के लिए कार्य करो।

प्र.10 'भोर का तारा' एकांकी के मुख्य पात्र शेखर की चारित्रिक विशषताँए बताइए।

उत्तर– शेखर एकांकी का नायक है। वह एक सहृदय कवि, आदर्श प्रेमी, और एक सच्चा मित्र है वह अपनी प्रेमिका छाया और काव्य रचना दोनो को अपने जीवन की साधना बताता है वह अपने प्रेम को

अमरता प्रदान करने के लिए भोर का तारा नामक महाकव्य की रचना करता है । शेखर माधव के कहने पर अपने प्रेम और काव्य रचना को त्याग कर अपने आप को देश सेवा के लिए समर्पित कर देता है।

प्र.11 क्या शेखर ने कवि कर्म का निर्वाह किया? यदि हां तो कैसे?

उत्तर– शेखर ने कवि कर्म का निर्वाह किया था वह अपनी अद्‌भुत रचना 'भोर का तारा' सम्राट को भेंट करना चाहता था लेकिन राजनैतिक संकट के कारण अपने प्रेम और सौन्दर्य जगत को त्याग कर माधव के कहने पर राजधर्म के निर्वाह हेतु अपने महाकव्य को अग्नि भेंट कर देता है और लोक मन में राष्ट्रप्रेम का भाव जगाने के लिए बलिदान की प्रेरणा देने हेतु निकल जाता है।

प्र.12 मनुष्यों की उलझनें सुलझाने की बात पर शेखर ने माधव से क्या कहा?

उत्तर– शेखर ने कहा कि आप राजनितिज्ञ और मंत्री लोग बड़ी सादगी के साथ अमीरी,गरीबी युद्ध और संधि की समस्याओं को हल करने का अभिनय करते हो परंतु मनुष्य को इन उलझनों से बहार कभी नही लाते। कवि इस दिशा में प्रयत्न करते है तो तुम लोंग उन्हें पागल समझते हो।

प्र.13 अपनी कविता के लिए शेखर ने छाया से क्या कहा?

उत्तर– शेखर ने कहा मेरी कविता ही मेरी हरी–भरी वाटिका है मैं उसे प्यार करता हूँ क्योंकि मुझे तुम्हारे हृदय में सौन्दर्य दिखता है जिस दिन मैं तुमसे दूर हो जाऊंगा उस दिन सौन्दर्य से दूर हो जाऊंगा, अपनी कविता से दूर हो जाऊंगा, मेरी कविता मर जायेगी यानि उसकी छाया ही उसकी कविता है।

प्र.14 माधव ने शेखर को कौनसी महत्वपूर्ण खबर सुनाई? जिसे सुनकर शेखर खुशी से उछल पड़ा।

उत्तर – प्रथम तो यह समाचार सुनाया कि वह कवि शेखर से राजकवि शेखर बनने जा रहा है। दूसरा समाचार यह सुनाया कि छाया का भाई देवदत्त जो तुम्हारे प्रेम मिलन में बाधक है वह मेरे साथ तक्षशिला के क्षत्रप वीरभद्र को दबाने के लिए प्रस्थान करने वाला है। इस प्रकार उसकी मनोकानाऐं पूर्ण होने जा रही है। यह समाचार सुनकर शेखर खुशी से उछल पड़ा।

प्र.15 गुप्त साम्राराज्य संकट में है और हमें घर–घरी भीख मांगनी पड़ेगी? ऐसा किसने और क्यों कहा? अथवा तक्षशिला से लौटकर माधव शेखर से क्या याचना करता है।

उत्तर – तक्षशिला से लौटकर माधव शेखर और छाया से अपने कर्तव्य का पालन करने की बात कहते हुऐ ऐसा कहता है।

प्र.16 शेखर ने अपना काव्य भोर का तारा अग्नि को भेंट क्यों किया?

उत्तर – जब माधव ने तक्षशिला से लौटकर शेखर को बताया की तक्षशिला पर तोरमाण ने आक्रमण कर दिया है देश संकट में है शेखर तुम्हारी वाणी में ओज है तुम अपने शब्दों से युवा शक्ति में जान फूंको तो यह सुनकर शेखर ने अपने अमर काव्य 'भोर का तारा' को जलती अंगीठी में अग्नि को समर्पित कर दिया। और अपने प्रेम को त्याग कर मातृभूमि के प्रति कर्तव्य निर्वहन के लिए निकल पड़ा।

CBEO BHINDER

प्र.17 एकांकी के तत्वों के आधार पर भोर का तारा एकांकी की समीक्षा कीजिए।

उत्तर – एकांकी के निम्नलिखित तत्वों के आधार पर भोर का तारा एकांकी एक पूर्णतः सफल रचना है –

1. **कथानक** – ऐतिहासिक, रोचक, कौतुहलपूर्ण

2. **पात्र** – सीमित संख्या, अभिनय कुशलता

3. **संवाद** – सक्षिप्त पात्रानुकूल और घटनानुरूप

4. **देशकाल**– ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में प्रेम और युद्ध का समांजस्य

5. **भाषाशैली**– पात्रानुकूल भाषा

6. **उद्देश्य** – उद्देश्य को स्पष्ट करने मे सफल – ''निज प्रेम पर स्वदेश प्रेम की महत्ता है''

7. **अभिनयशीलता** – पात्र सीमित, छोटे संवाद और सुंदर वातावरण

मंदाकिनी अध्याय 10 गेहूँ बनाम गुलाब (निबन्ध)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.मानव को मानव किसने बनाया?
उत्तरः मानव को मानव उसकी भावात्मक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्ति ने बनाया।
प्रश्न 2.मानव शरीर में सबसे नीचे का स्थान क्या है?
उत्तरः मानव शरीर में सबसे नीचे का स्थान पेट है।

प्रश्न 3. लेखक के अनुसार आने वाली दुनिया को हम कौन–सी दुनिया कहेंगे?
उत्तरः आने वाली दुनिया को हम गुलाब की अर्थात् भावात्मक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्ति की दुनिया कहेंगे।

प्रश्न.4 गेहूँ और गुलाब का सम्बन्ध किनसे है?
उत्तरः गेहूँ का संबंध मनुष्य के शरीर के पुष्ट होने अर्थात् उसकी भौतिक सुख–सुविधाओं से है और गुलाब का संबंध उसके मन अर्थात् उसके भावात्मक एवं मानसिक आनंद से है।

प्रश्न 5. 'अब गुलाब गेहूँ पर विजय प्राप्त करे' से क्या तात्पर्य है?
उत्तरः तात्पर्य दृ अब समय है जब मनुष्य अपनी भूख और भौतिक सुख–साधनों की समृद्धि से सुख प्राप्त होने की कल्पना को त्यागकर मानसिक सुख–शान्ति को प्राप्त करने का प्रयास करें। नवीनीकरण द्वारा भौतिक वृत्तियों पर विजय प्राप्त करें।

प्रश्न 6. लेखक के अनुसार राक्षसता क्या है?
उत्तरः राक्षसता से लेखक का अभिप्राय उन दूषित मानसिक–प्रवृत्ति वाले लोगों से है जो दूसरों की बहू–बेटियों पर बुरी नजर रखते हैं। गरीबों का शोषण करते हैं। न खाने योग्य पदार्थों का सेवन करते हैं। संपन्न होते हुए भी और अधिक पाने की लालसा से ग्रसित

CBEO BHINDER

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. ‘गेहूँ बनाम गुलाब’ नामक निबन्ध में गेहूं व गुलाब किसके प्रतीक हैं?
उत्तरः प्रस्तुत पाठ में लेखक ने गेहूँ को मानवे की भौतिक आवश्यकताओं का प्रतीक माना है। गेहूँ की आर्थिक, राजनैतिक एवं शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति का साधन है। गुलाब को मानव की सांस्कृतिक प्रगति का प्रतीक माना है। गुलाब मनुष्य के मानसिक तथा बौद्धिक विकास को प्रस्फुटित करता है।
प्रश्न 2. मनुष्य जन्म से ही अपने साथ क्या लेकर आया? अपनी भूख शांत करने के लिए उसने क्या–क्या किया?
उत्तर मनुष्य जन्म से ही अपने साथ भूख और प्यास लेकर आया। अपनी भूख को शांत करने के लिए उसने माँ का स्तनपान किया, वृक्षों को झकझोरा। अपनी भूख को शांत करने के लिए उसने कीट–पतंग, पशु–पक्षी किसी को भी नहीं छोड़ा।
प्रश्न 3. “मैदानजोते जा रहे हैं, बाग उजाड़े जा रहे हैं”– किसके लिए? लिखिए।
उत्तरः मनुष्य को जब गेहूँ के विषय में ज्ञात हुआ वह कि इसे उगाकर और खाकर अपनी भूख को शांत कर सकता है तो उसने गेहूँ की खेती करने के लिए मैदानों को जोतकर और बागों को काटकर उन्हें साफ कर लिया।

प्रश्न 4. पशु और मानव अन्तर का आधार क्या है?
अथवा
मनुष्य पशु से किस आधार पर श्रेष्ठ है?
उत्तरः
पशुओं के लिए केवल गेहूँ का महत्त्व है, उसके लिए गुलाब कोई महत्त्व नहीं रखता है, जबकि मनुष्य के लिए गुलाब उसकी मानसिक सन्तुष्टि का द्योतक है। मनुष्य में उसका मस्तिष्क, हृदय तथा पेट ऊपर से नीचे की ओर व्यवस्थित होता है, पशुओं में ऐसा न होकर सब कुछ एक सीध में होता है। मनुष्य के लिए मानसिक तुष्टि का महत्त्व पशु से अधिक है। यही कारण है कि वह पशु से श्रेष्ठ है।

प्रश्न 5. भूख के साथ अपनी मानसिक संतुष्टि के लिए मनुष्य ने क्या–क्या कार्य किए?
उत्तरः भूख को शांत करने के लिए जब उसने ऊखल और चक्की में गेहूँ को कूटा और पीसा तो उससे उत्पन्न संगीत ने उसे आनंद प्रदान किया। अपनी भूख मिटाने के लिए उसने जिन पशुओं को मारा, उनका माँस खाया, उनकी खाल से उसने ढोल बनाए। सग से तुरही बनाई। बाँस से लाठी के साथ बंशी भी बनाई। इन सभी ने उसे मानसिक संतुष्टि प्रदान की।
प्रश्न 6.पेट की अग्नि (क्षुधा) शांत हो जाने पर मनुष्य किस ओर आकर्षित हुआ? इसका उस पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तरः पेट की अग्नि (भूख) शांत हो जाने पर मनुष्य प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य की ओर आकर्षित हुआ। उसने ऊषा की लालिमा, सूर्य के प्रकाश और मधुरिम हरियाली के अनेक दृश्यों को निहारा तो वह उल्लास और प्रसन्नता से झूम उठा। आकाश में उमड़ते–घुमड़ते बादलों और इन्द्रधनुष को देखकर उसका मन मयूर नाचने लगा।
प्रश्न 7. ‘गेहूँ की आवश्यकता उसे हैय किन्तु उसकी चेष्टा रही है गेहूँ पर विजय प्राप्त करने की।’ आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तरः आरम्भ से मनुष्य अपनी भूख शान्त करने के लिए गेहूँ को आवश्यक मानकर महत्त्व देता रहा है, परन्तु केवल उसने भूख को मिटाना ही अपने जीवन का मूल उद्देश्य नहीं समझा। सत्यता यह है कि वह व्रत, उपवास और तपस्या जैसे अनेक साधनों को अपनाकर अपनी शारीरिक इच्छाओं पर विजय प्राप्त करने की कोशिश करता रहा है।

CBEO BHINDER

प्रश्न 8. गेहूँ और गुलाब के मध्य सन्तुलन के समय मानव की स्थिति कैसी थी?
उत्तरः गेहूँ और गुलाब के मध्य सन्तुलन के समय मानव सुखी और सानन्द रहा। वह कमाता हुआ गाता था और गाता हुआ कमाता था। वह बहुत प्रसन्न और सुखी था। उसके श्रम के साथ संगीत जुड़ा हुआ था तो उसके संगीत के साथ श्रम। इन दोनों के तालमेल ने उसे शारीरिक पुष्टि और मानसिक तुष्टि दोनों ही प्रदान की।
प्रश्न 9. 'गेहूँ बनाम गुलाब' निबन्ध में लेखक ने 'साँवला' कहकर किसे सम्बोधित किया है? उसका आरंभिक जीवन कैसा था?
उत्तरः प्रस्तुत पाठ में लेखक ने 'साँवला' कहकर श्रीकृष्ण को संबोधित किया है। मथुरा जाने से पूर्व वह एक ग्वाले थे। वे वन में अपनी गाय चराने जाते थे और अपनी बाँसुरी बजाते थे। ऐसी स्थिति में भी वह अपने उच्च विचारों को नहीं भूले और जब मथुरा पहुँचे तब भी अपनी संस्कृति से जुड़े रहे। वहाँ भी उन्होंने बाँसुरी बजाना नहीं छोड़ा।
प्रश्न 10. प्राचीनकाल से चले आ रहे गेहूँ और गुलाब के बीच सन्तुलन टूटने पर गेहूँ किसका प्रतीक बनकर रह गया?
उत्तरः जब गेहूँ और गुलाब के बीच का यह सन्तुलन टूटने लगा तो गेहूँ जो प्राचीन समय में भूख और श्रम का प्रतीक था वह अब कमर तोड़, उबाने और थकाने वाले और नरक जैसी यातना देने वाले श्रम का परिचायक बन गया। ऐसा श्रम जो मनुष्य की भूख को ठीक से शांत नहीं कर पाता था, जो मात्र उसे कष्ट और यातनाएँ प्रदान करता था।

प्रश्न 11. इस असन्तुलन ने गुलाब को किसका परिचायक बना दिया?
उत्तरः प्राचीन समय से जो गुलाब बौद्धिक और सांस्कृतिक प्रगति का परिचायक था, वह गेहूँ और गुलाब के मध्य उत्पन्न हुए असन्तुलन से विलासिता का, भ्रष्टाचार का, दूषित मानसिकता और गलीज का परिचायक बन गया। यह ऐसी मानसिक विलासिता हैं जो मात्र मनुष्य के शरीर को ही नहीं नष्ट करती अपितु उसके मन और चरित्र को भी नष्ट करती है।

प्रश्न 12. गेहूँ पर गुलाब की प्रभुता से क्या तात्पर्य है?
अथवा
गेहूँ पर गुलाब की प्रभुता किस प्रकार संभव है?
उत्तरः मानव को भौतिक वस्तुओं के जाल से मुक्त होकर सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक सौन्दर्य के आनन्द को प्राप्त करना होगा। भौतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक आवश्यकताओं के स्थान पर सांस्कृतिक एवं भौतिक आवश्यकताओं को महत्त्व देना होगा। उसे मानसिक आवश्यकताओं का स्तर, शारीरिक आवश्यकताओं के स्तर से ऊँचा उठाना होगी। तभी गेहूँ पर गुलाब की प्रभुता संभव होगी।
प्रश्न 13. विज्ञान ने हमें गेहूँ और मनुष्य की भूख के विषय में क्या–क्या जानकारियाँ प्रदान की हैं?
उत्तरः वर्तमान समय में विज्ञान ने हमें गेहूँ के स्वरूप के विषय में बताया कि एक विशेष प्रक्रिया के माध्यम से आकाश और पृथ्वी के तत्व पौधों की बालियों में एकत्र होकर गेहूँ बन जाते हैं। वहीं मनुष्य में स्थित चिर–बुभुक्षा अर्थात् सदैव बनी रहने वाली भूख इन्हीं तत्वों की कमी का परिणाम है।

प्रश्न 14. कौन–सी बात हस्तामलकवत् के समान कब सिद्ध होकर रहेगी? इस दिशा में विज्ञान किस प्रकार योगदान दे सकता है?
उत्तरः मनुष्य के जीवन में गेहूं से अधिक गुलाब की उपयोगिता है। भौतिक आवश्यकताओं से अधिक मानसिक तुष्टि आवश्यक है। एक न एक दिन यह बात अवश्य सिद्ध होकर रहेगी, जब मनुष्य का ध्यान गेहूँ अर्थात् भौतिक संसाधनों को जुटाने से होने वाले असाध्य कष्टों की ओर जाएगा। यह बात स्वतः ही सिद्ध हो जाएगी। इसके लिए विज्ञान को सृजनशील बनना होगा। उसे जीवन की समस्याओं पर ध्यान देना होगा।

GEO BHINDER

प्रश्न 15. लेखक के अनुसार गेहूँ पर विजय किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है?
उत्तरः लेखक के अनुसार गेहूँ पर विजय सभी भौतिक वृत्तियों में नवीनीकरण द्वारा प्राप्त की जा सकती है। अर्थात् विज्ञान के माध्यम से ऐसे उत्तम किस्म के खाद, बीज और सिंचाई और जुताई के उन्नत तरीके ईजाद किए जाएँ जिनसे गेहूं की समस्या का पूर्णतः समाधान हो जाए और सम्पूर्ण विश्व में गेहूँ हवा और पानी के समान सभी को उपलब्ध हों।

प्रश्न 16. प्रस्तुत पाठ में लेखक द्वारा उल्लेखित सोने की नगरी कौन–सी है? वहाँ के निवासी कैसे थे और क्या कहलाते थे?
उत्तरः प्रस्तुत पाठ में लेखक द्वारा उल्लेखित सोने की नगरी, राक्षसराज रावण की नगरी लंका है, जो स्वर्ण निर्मित थी। इस नगरी के निवासी दुराचारी निशाचर थे। ये लोगों का खून पीते थे। दिन में सोते थे और रात्रि में भोजन की तलाश। दूसरों की बहू–बेटियों का अपहरण करने में इन्हें तनिक भी संकोच नहीं होता था। ये सभी राक्षस कहलाते हैं।

प्रश्न 17. लेखक इन्द्रिय संयमन को कैसा मानता है? लिखिए।
उत्तरः लेखक का मानना है कि इन्द्रिय संयमन के द्वारा मनुष्य की दुष्प्रवृत्तियों पर नियन्त्रण नहीं किया जा सकता। इंन्द्रियों पर संयम रखना आसान काम नहीं है। वह मानता है कि इसमें दुष्प्रवृत्तियाँ नियन्त्रित होने के स्थान पर बढ़ेगी और हम संयम की बात पर जितना जोर देंगे, समाज में उतना ही कदाचार बढ़ेगा।
प्रश्न 18. वर्तमान में किसकी दुनिया समाप्त होने के कगार पर है?
उत्तरः वर्तमान में गेहूँ की अर्थात् भौतिकता की दुनिया समाप्त होने वाली है। मनुष्य ने स्वार्थवश जिस भौतिकता को अपनाया, उसी ने उस पर आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से राज्य करना प्रारंभ कर दिया और उसका शोषण करने लगी। किन्तु अब यह भौतिकवादी भावना. संसार से नष्ट होने वाली है और जल्द ही नए युग का आरंभ होने वाला है।

प्रश्न 19. लेखक के अनुसार किसकी दुनिया आरंभ होने जा रही है? यह दुनिया कैसी होगी?
उत्तरः लेखक के अनुसार गुलाब की अर्थात् सांस्कृतिक और बौद्धिक प्रगति की दुनिया आरंभ होने जा रही है यह दुनिया सन्तोष प्रदान करने वाली होगी। इस दुनिया में मन को सन्तोष मिल सकेगा और मानव संस्कृति विकसित हो सकेगी। हम शरीर को बाह्य आवश्यकताओं के बन्धन से मुक्त हो सकेंगे और हमारे मन में आध्यात्मिक शांति का नया संसार विकसित होगा।

प्रश्न 20. "शौके दीदार अगर है, तो नजर पैदा कर!' भाव स्पष्ट कीजिए।
उत्तरः जल्द ही इस संसार से भौतिक युग समाप्त हो जाएगा और लोग धन अथवा अपने स्वार्थों को महत्त्व देने के स्थान पर श्रेष्ठ और महान विचारों तथा प्रेम और सौहार्द पर आधारित भावनाओं को महत्व देना प्रारंभ कर देंगे। शारीरिक भूख और तृप्ति के स्थान पर मानसिक सन्तोष और भावनाओं की सन्तुष्टि पर अधिक बल दिया जाएगा। सम्पूर्ण संसार सुखमय हो जाएगा। याद कोई आने वाले ऐसे सुनहरे युग को देखना और महसूस करना चाहता है तो उसे स्वयं में प्रत्यक्षीकरण की प्रबल जिज्ञासापूर्ण दृष्टि उत्पन्न करनी होगी।

CBEOBHINDER

CBEO BHINDER

उच्च माध्यमिक परीक्षा मॉडल प्रश्न–पत्र 2021
विषय–हिन्दी साहित्य

समयः 3¼ घण्टे **पूर्णांक 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :–
GENERAL INSTRUCTION TO THE EXAMINEES:

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।

2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य है।

3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखें।

4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड है उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

6. प्रश्नों का अंकभार निम्नानुसार है।

खण्ड	प्रश्नों की संख्या	अंक प्रत्येक प्रश्न	कुल अंक भार
खण्ड–अ(A)	1 (i से x) 2 से 11=20	1	20
खण्ड–ब(B)	12 से 19 = 8	2	16
खण्ड–स(C)	20 से 23 = 4	4	16
खण्ड–द(D)	24 से 25 = 2	5	10
खण्ड–य(E)	26 से 28 = 3	6	18

प्रश्न–पत्र

विषय–हिन्दी साहित्य

कक्षा–12

<u>खण्ड–अ</u>

SECTION-A

दिये गए प्रश्नों के उत्तर का सही विकल्प चयन कर उत्तर–पुस्तिका में लिखिए :–

1. बहुवैकल्पिक प्रश्न (Multiple Choice Questions) 1 X 10 = 10

(i) भारतेन्दु युग के प्रमुख कवि नहीं है

(अ) बद्री नारायण चौधरी 'प्रेमधन' (ब) प्रताप नारायण मिश्र

(स) माधव दास चारण (द) अम्बिका दत्त दास

(ii) 'भारत दुर्दशा' नाटक के रचनाकार है –

(अ) गोपालचन्द्र गिरधरदास (ब) श्रीधर पाठक

(स) राधाकृष्ण दास (द) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(iii) 'कामायनी' के लेखक है –

(अ) महादेवी वर्मा (ब) जयशंकर प्रसाद

(स) सूर्यकांत त्रिपाठी (द) सुमित्रानंदन पंत

(iv) ' छायावाद' काव्य का रचनाकाल माना जाता है –

(अ) सन् 1843 से 1900 तक (ब) सन् 1918 से 1936 तक

(स) सन् 1936 से 1943 तक (द) सन् 1954 से 1960 तक

(V) गुरू तो ऐसा चाहिए, सिख सों कछू न लेई।

'सिख तो ऐसा चाहिए, गुरू को सरबस देई।'। इसमें काव्य गुण है –

(अ) प्रसाद गुण (ब) ओज गुण

(स) माधुर्य गुण (द) उपर्युक्त सभी

(vi) काव्य का ऐसा गुण जो चित्त को द्रवित कर उसे आह्लादित कर देता है –

(अ) ओज गुण (ब) माधुर्य गुण

(स) प्रसाद गुण (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(vii) हरिगीतिका छंद के प्रत्येक चरण में मात्राएँ होती है –

(अ) 30 मात्राएँ　　(ब) 28 मात्राएँ

(स) 32 मात्राएँ　　(द) 36 मात्राएँ

(viii) दोहा और रोला के मेल से .... छंद बनता है –

(अ) हरिगीतिका　　(ब) छप्पन

(स) सवैया　　(द) कुण्डलिया

(ix) ''माली आवत देखि के, कलियन करी पुकारि।

फूले–फूले चुन लिये, काल्हि हमारी बारि।।''

इसमें अलंकार है –

(अ) समासोक्ति अलंकार　　(ब) विभावना अलंकार

(स) अन्योक्ति अलंकार　　(द) व्यतिरेक अलंकार

(x) जब स्वाभाविक उपमेय को उपमान और उपमान को उपमेय बना दिया जाता है, तब .... अलंकार होता है –

(अ) व्यतिरेक　　(ब) प्रतीप

(स) विभावना　　(द) समासोक्ति

प्रश्न संख्या 2 से 8 तक प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में दीजिए :

2. अति लघूत्तरात्मक प्रश्न : 1 X 7 = 7

प्र.- 2 'ओज' गुण की परिभाषा लिखिए।

प्र.- 3 'गीतिका' के आरंभ में कितनी मात्राएँ जोड़ने से हरिगीतिका बनता है ?

प्र.- 4 'समासोक्ति' अलंकार से क्या अभिप्राय है ?

प्र.- 5 लेखक ने 'शिरीष के फूल' की तुलना किससे की है ?

प्र.- 6 कबीर दास ने किस प्रकार की आँधी आने की बात कही है ?

प्र.- 7 कबीर दास ने माधव से उसके कन्धों को पकड़ कर तख्त पर बिठाते हुए क्या पूछा ?

प्र.- 8 सर जगदीश चन्द्र बोस ने हमारी राष्ट्रीय संस्कृति का सार क्या बतलाया है ?

रिक्त स्थान की पूर्ति करते हुए उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में लिखिए। 1 X 3 = 3

प्र.- 9 काव्य में .... गुण होने से वाक्य का समस्त अर्थ तुरन्त मन में स्पष्ट हो जाता है।

प्र.- 10 काव्य जिसमें रोला और उल्लाला के मिलने से .... छंद बनता है।

प्र.- 11 काव्य में जहाँ पर कारण न होने पर भी कार्य हो जाए, वहाँ .... अलंकार होता है।

खण्ड — ब

SECTION - B

प्रश्न संख्या 12 से 19 तक प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दो में दीजिए :

लघूत्तरात्मक प्रश्न 2 X 8 = 16

प्र.- 12 '' खुद लापरवाह हो, दोष उल्टे मुझे देते हो।'' जैनेन्द्र कुमार के इस कथन को समझाइए।

प्र.- 13 '' साधारणतः आज के पुरूष का पुरूषार्थ विलाप है।'' महादेवी वर्मा के इस कथन को समझाइए।

प्र.- 14 ' काज परै कछु और है, काज सरै कछु और।' इस पंक्ति का भावार्थ समझाइए।

प्र.- 15 ' गौरव—सी काया पड़ी माया है प्रताप की।' इस काव्य पंक्ति का आशय लिखिए।

प्र.- 16 ' निर्वासित' कहानी के मूलभाव को स्पष्ट कीजिए।

प्र.- 17 ''प्राणियों में जैसे रक्त संचार होता है, वैसे ही पेड—पौधो में रस संचार होता है।'' लेखक परमहंस योगानंद के अनुसार इस कथन का आशय समझाइए।

प्र.- 18 ' अब, गुलाब गेहूँ पर विजय प्राप्त करे।' इस कथन में निहित भाव की व्यंजना कीजिए।

प्र.- 19 ''अपने निःस्वार्थ कार्यो से किसी के भी व्यक्तित्व में परिवर्तन लाया जा सकता है।'' इस कथन की व्याख्या 'सुभाष चन्द्र बोस (संकलित) पाठ के आधार पर कीजिए।

<u>खण्ड – सी</u>

<u>SECTION - C</u>

प्रश्न संख्या 20 से 23 तक प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दो में दीजिए :

लघूत्तरात्मक प्रश्न 4 X 4 = 16

प्र.- 20 भारतेन्दु युग को पुनर्जागरण काल क्यों कहा जाता है ? इस काल के गद्य साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

' नई कविता की परिभाषा एवं उसकी प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

प्र.- 21 प्रसाद के नाटकों की विशेषताओं का वर्णन करते हुए प्रमुख नाटकों का उल्लेख कीजिए।

अथवा

'जीवनी' एवं 'आत्मकथा' विधा की परिभाषा एवं अन्तर स्पष्ट कीजिए।

प्र.- 22 आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के साहित्यिक योगदान को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

' रेखाचित्र 'व' संस्मरण' को परिभाषित करते हुए अंतर स्पष्ट कीजिए।

प्र.- 23 'अन्योक्ति' अलंकार को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

अथवा

' विभावना' अलंकार को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

<u>खण्ड – द</u>

<u>SECTION - D</u>

प्रश्न संख्या 24 से 25 तक प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दो में दीजिए :

लघूत्तरात्मक प्रश्न 2 X 5 = 10

प्र.- 24 निम्नलिखित गद्यांशो में से किसी एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

विलायती खेलो में सबसे बडा ऐब है कि उनके सामान महंगे होते है। जब तक कम–से–कम एक सैंकडा न खर्च कीजिए, खिलाडियों में शुमार नहीं हो सकता। यहाँ गुल्ली–डंडा है कि बिना हर्र–फिटकरी के चोखा रंग देता है, पर हम अँग्रेजी चीजों के पीछे ऐसे दीवाने हो रहे हैं कि अपनी सभी चीजों से अरूचि हो गई। स्कूलों में हरेक लड़के से तीन– चार रूपये सालाना केवल खेलने की फीस ली जाती है। किसी को यह नहीं सूझता कि भारतीय खेल खिलाएँ, जो बिना दाम–कौड़ी के खेले जाते हैं। अँग्रेजी खेल उनके लिए हैं जिसके पास धन है।

अथवा

मेरा मन जाने कैसा गंभीर प्रेम के भाव से आशुतोष के प्रति उमड़ रहा था। मुझे मालूम

होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए, बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह इस समय बालक को मिलना चाहिए। मुझे यह एक भारी दुर्घटना मालूम होती थी। मालूम होता था कि अगर आशुतोष ने चोरी की है तो उसका इतना दोष नहीं है, बल्कि यह हमारे ऊपर बड़ा भारी इलजाम है। बच्चे में चोरी की आदत भयावह हो सकती है। लेकिन बच्चे के लिए वैसी लाचारी उपस्थित हो आई , यह और भी कहीं भयावह है। यह हमारी आलोचना है। हम उस चोरी से बरी नहीं हो सकते।

प्र.- 25 निम्नलिखित पद्यांशो में से किसी एक पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्व को,
बचपन में निज स्वार्थ लोभवश पैसे बोकर।
रत्न–प्रसविनी है वसुधा अब समझ सका हूँ।
इसमें सच्ची ममता के दाने बोने हैं।
इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं
इनमें मानव समता के दाने बोने हैं

अथवा

न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिले, तो लड़ के,
तेजस्वी छीनते समर को
जीत, या कि खुद मरके।
किसने कहा, पाप है समुचित
स्वत्व–प्राप्ति–हित लडना ?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना–मरना?

<u>खण्ड – इ</u>

प्रश्न संख्या 26 से 28 तक प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दो में दीजिए :

निबंधात्मक प्रश्न 3 X 6 = 18

प्र.- 26 'मिठाईवाला' कहानी बाल मनोविज्ञान के विविध कोणों को स्पष्ट करती है। इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'मैं सोचता हूँ कि पुराने की अधिकार लिप्सा क्यो नहीं समय रहते सावधान हो जाती ?' शिरीष के फूल अध्याय के आधार पर उपर्युक्त कथन की व्याख्या करते हुए वर्तमान राजनीति में इसकी प्रासंगिकता बताइए।

अथवा

प्रत्येक स्थिति में द्वढ़ता एवं धैर्य से काम में संलग्न 'अलोपी' का चरित्र–चित्रण महादेवी वर्मा के अलोपी संस्मरण के आधार पर कीजिए।

प्र.- 27 कबीर के दोहों के आधार पर गुरू का महत्व अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

''रहीम की रचनाएँ जीवन रस से परिपूर्ण है।'' उपर्युक्त कथन की समीक्षा उदाहरण सहित पठित अध्याय के आधार पर कीजिए।

अथवा

कवि सुमित्रानंदन पंत की कविता' 'भारतमाता' का प्रतिपाद्य प्रस्तुत करते हुए उदाहरण सहित समीक्षा कीजिए।

प्र.- 28 'माता अपने सब पुत्रों को समान भाव से चाहती है।' इस कथन को 'राष्ट्र का स्वरूप' निबंध के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'निज प्रेम पर स्वदेश प्रेम की महत्ता है।'

भोर का तारा' एकांकी के आधार पर उपर्युक्त कथन की व्याख्या कीजिए।

अथवा

किसी भी राष्ट्र को सम्पूर्ण रूप से समझने के लिए किन आधारभूत तत्वों का होना आवश्यक है। बताइए।